“एक छिपा हुआ सितारा”: मेघजी भाई पद्मावत

लेखक :
रामजी मेघजी पद्मावत
संपादक:
डॉ. निर्मला एस. पद्मावत
डॉ. चंद्रप्रकाश एस. पद्मावत

ISBN: **978-81-995268-7-7**
Title: एक छिपा हुआ सितारा”**:** मेघजी भाई पद्मावत
Author: रामजी मेघाजी पद्मावत, डॉ. निर्मला एस. पद्मावत, डॉ. चंद्रप्रकाश एस. पद्मावत
Copyright © **Authors**
First Edition: **06 November, 2025**
Price: **Rs 250/-**
Published by
Meghana Hemraj Joshi, Fourth Dimension, Chh. Sambhajinagar
Typesetting and Cover
Meghana Hemraj Joshi

All rights reserved. No material may otherwise be copied, modified, published or distributed without the prior written permission of the Publisher and copyright owner.

प्रस्तावना:

(शब्दांकन – डॉ. निर्मला एस. पद्मावत)

भारत का स्वतंत्रता संग्राम केवल इतिहास का एक अध्याय नहीं, बल्कि हर भारतीय के हृदय की वह भावना है,
जो हमें आत्मबल, त्याग और कर्तव्य का बोध कराती है।
इस ग्रंथ *"एक छिपा हुआ सितारा"* के माध्यम से लेखक श्री **रामजी मेघजी पद्मावत** ने अपने पूज्य पिता
स्वतंत्रता सेनानी मेघजी भाई पद्मावत के जीवन, संघर्ष और आदर्शों को अपने सादे, परंतु अत्यंत भावनात्मक शब्दों में प्रस्तुत किया है।

लेखक की भाषा में वह सच्ची अनुभूति है, जो किसी इतिहासकार की कलम नहीं, बल्कि एक पुत्र के हृदय से निकले शब्दों के रूप में सजीव होती है।
उनके प्रत्येक वाक्य में अपने पिता के प्रति श्रद्धा, गर्व और राष्ट्रप्रेम की अमिट छाप है।

इन मौलिक भावनाओं को हमने साहित्यिक रूप प्रदान करने का विनम्र प्रयास किया है — ताकि लेखक की आत्मीय अभिव्यक्ति को पाठकों तक उसी संवेदना और गरिमा के साथ पहुँचाया जा सके।
हमने केवल शब्दों को आकार दिया है; भावनाएँ, अनुभूतियाँ और संवेदनाएँ लेखक की अपनी हैं।

यह पुस्तक उस पीढ़ी की जीवंत गाथा है, जिसने कठिन परिस्थितियों में भी स्वाधीनता के दीप को प्रज्वलित रखा।
इस ग्रंथ में इतिहास केवल घटनाओं के रूप में नहीं, बल्कि संवेदनाओं, संघर्षों और त्याग की गाथा के रूप में साँस लेता हुआ प्रतीत होता है।

मुझे विश्वास है कि *"एक छिपा हुआ सितारा"* केवल एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा-स्रोत सिद्ध होगा।
यह पुस्तक हमें यह सिखाती है कि सच्ची स्वतंत्रता केवल बाहरी नहीं, बल्कि आत्मा के भीतर जागृत होने वाली चेतना है।

सप्रेम,
डॉ. निर्मला एस. पद्मावत
(संपादक एवं शब्दांकनकर्ता)

लेखक का निवेदन)Author's Note):

प्रिय पाठकों,

मेरे इस ग्रंथ *"एक छिपा हुआ सितारा"* का उद्देश्य केवल स्मृतियों का संकलन नहीं, बल्कि उन अनसुनी गाथाओं को स्वर देना है जो हमारी मिट्टी में, हमारे पूर्वजों के त्याग में, और स्वतंत्रता की भावना में आज भी जीवित हैं।

यह पुस्तक मेरे पूज्य पिता **स्वतंत्रता सेनानी मेघजी भाई पद्मावत** के जीवन, संघर्ष और आदर्शों पर आधारित है। उनका जीवन एक प्रेरणा है — एक साधारण ग्रामीण से लेकर राष्ट्र की असाधारण आत्मा तक की यात्रा। उन्होंने जिन कठिन परिस्थितियों में स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया, वे आज भी हमारे हृदय को दृढ़ता और समर्पण का पाठ सिखाती हैं।

यह लेखन न केवल एक पारिवारिक श्रद्धांजलि है, बल्कि उस पीढ़ी के सभी स्वतंत्रता सेनानियों को नमन है जिन्होंने हमें आज़ाद भारत का सूरज दिखाया।
उनके जीवन से हमने सीखा कि सच्ची सेवा केवल कर्म में है, और सच्चा राष्ट्रप्रेम केवल बलिदान में।

इस पुस्तक की हर पंक्ति उन अनगिनत आत्माओं को समर्पित है जिनके नाम इतिहास के पन्नों में नहीं, पर लोगों के दिलों में लिखे हैं।

सप्रेम,
रामजी मेघजी पद्मावत
(लेखक)

संपादक का निवेदन — डॉपद्मावत .निर्मला एस .

प्रिय पाठकगण,

यह पुस्तक मेरे ताऊजी **स्वतंत्रता सेनानी मेघजी भाई पद्मावत** को समर्पित है — जिनका जीवन स्वयं एक प्रेरणास्रोत रहा है।
उनकी त्यागमय यात्रा ने न केवल हमारे परिवार को गौरव दिया, बल्कि राष्ट्र के हर नागरिक को देशप्रेम का संदेश दिया।

संपादन कार्य करते हुए ऐसा लगा मानो मैं इतिहास के उन्हीं सुनहरे पलों में लौट गई हूँ, जहाँ त्याग, साहस और सच्चाई की लौ प्रज्वलित थी।
ताऊजी का जीवन यह सिखाता है कि स्वतंत्रता केवल राजनैतिक उपलब्धि नहीं, बल्कि एक आत्मिक जागरण है — जो हर पीढ़ी को नई प्रेरणा देता है।

इस कृति के माध्यम से मैं उन्हें नमन करती हूँ और आशा करती हूँ कि यह पुस्तक हर पाठक को देशप्रेम और सेवा की भावना से ओतप्रोत करेगी।

सादर,
डॉ. निर्मला एस. पद्मावत
(संपादक एवं भतीजी)

संपादक का निवेदन – डॉ .चंद्रप्रकाश एसपद्मावत .

आदरणीय पाठकों,

यह ग्रंथ *"एक छिपा हुआ सितारा"* मेरे ताऊजी **स्वतंत्रता सेनानी मेघजी भाई पद्मावत** के जीवन और योगदान का सजीव दस्तावेज़ है।
उनका जीवन हमारी पारिवारिक और राष्ट्रीय दोनों विरासतों का अभिन्न अंग है।

जब मैं इस पुस्तक का संपादन कर रहा था, तब प्रत्येक पंक्ति में ताऊजी का संघर्ष, साहस और सत्यनिष्ठा की गूंज महसूस हुई।
उनके जीवन का प्रत्येक अध्याय हमें यह सिखाता है कि राष्ट्रभक्ति शब्दों से नहीं, कर्म और समर्पण से साकार होती है।

यह पुस्तक केवल एक संस्मरण नहीं, बल्कि स्वतंत्रता की उस चेतना का प्रतीक है जो आज भी हमारे हृदयों में विद्यमान है।
मैं उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ और लेखक को इस अमूल्य कार्य के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ।

सादर,
डॉ. चंद्रप्रकाश एस. पद्मावत
(संपादक एवं भतीजा)

१५ अगस्त अमृत महोत्सव का :भावनिक आलोक

आज १५ अगस्त, *अमृत महोत्सव* का पावन दिवस है — भारतवर्ष के हृदय में उमड़ती-घुमड़ती भावनाओं का ज्वार। यह दिन है हर भारतवासी के लिए गर्व और कृतज्ञता का पर्व। बलिदेवी के चरणों में चढ़ाई गई असीम आहुति, शहीद जवानों को शत-शत कोटि नमन और उन अमर स्वतंत्रता सेनानियों को भावपूर्ण प्रणाम, जिनके त्याग से आज हम स्वतंत्र आकाश में श्वास ले रहे हैं।

यह वह अनोखा उत्सव है जिसमें किसी धर्म, पंथ या जाति का भेद नहीं — केवल एक भाव है, माँ भारती के प्रति आदर, श्रद्धा और प्रेम का भावनिक संकल्प।

माँ भारती का यह उत्सव वर्ष में दो बार — १५ अगस्त और २६ जनवरी को — पूरे देश में उमंग और उल्लास के साथ मनाया जाता है। आज पूर्व दिशा में भास्कर सात अश्वों के रथ पर आरूढ़ होकर उदित हो रहा है, अपनी स्वर्णिम किरणों से आकाश को रंगते हुए मानो स्वयं भी माँ भारती के इस

भावनिक महोत्सव में सम्मिलित हो गया हो। श्रावण की रिमझिम बौछारें मानो इस दिन की आहट पर नाच उठी हों।

प्रातःकाल में विद्यालय की ओर जाते बालक-बालिकाओं की किलकारियाँ गूंज रही हैं। उनके चेहरे पर देशभक्ति की आभा झलक रही है। माताएँ अपने लालों को स्नेहिल नज़रों से निहारते हुए शीघ्र विद्यालय भेजने की तैयारी में व्यस्त हैं। उनके मन में गर्व और भावनिक श्रद्धा की लहरें उमड़ रही हैं।

विद्यालय परिसर में तिरंगा शान से लहराने को आतुर है। मुख्य अतिथि के आगमन के साथ पुष्पवर्षा में ध्वजारोहण का भावनिक क्षण आता है। राष्ट्रगान की पंक्तियों के साथ सभी जनमानस एक सुर में गूँज उठते हैं —
“जन गण मन…”
और फिर मिठाइयों की टोकरी जैसे हृदय की मिठास को बाँट रही हो।

“अब चला हमारा काफिला — गली-गली, गाँव-गाँव, स्वतंत्रता का उद्घोष करते हुए।”

हर माँ, हर स्वजन अपने बच्चों को देखकर भावविह्वल हैं — जैसे वह संतानें देशसेवा के लिए ही जन्मी हों। लाखों जवानों और स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान से यह स्वतंत्रता महक रही है। बलिदेवी को समर्पित वह अमूल्य भेंट — जिनके परिवार उजड़ गए, पर देश का मान अडिग रहा। उन अमर आत्माओं को शत-शत कोटि प्रणाम। उनके गुणगान के लिए शब्द भी भावनाओं के आगे नतमस्तक प्रतीत होते हैं।

स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर माँ भारती के आँचल में लौटते हुए — मेरे हृदय में मेरे पूज्य स्वतंत्रता सेनानी माता-पिता का संघर्ष भावनाओं का सागर बन उमड़ पड़ता है।

मेवाड़ का महत्व:

मेवाड़ — यह नाम अपने आप में शौर्य, संस्कृति और स्वाभिमान का पर्याय है।
इस भूमि ने केवल रणभूमि के वीरों को ही नहीं, बल्कि उन संतों और साधकों को भी जन्म दिया जिन्होंने समाज को धर्म, सत्य और मानवता का मार्ग दिखाया।
मेवाड़ की हर मिट्टी में त्याग की सुगंध और बलिदान की गरिमा है।
यहीं की गोद में महाराणा प्रताप जैसे योद्धा हुए और संत मावजी महाराज जैसे युगद्रष्टा।

मेवाड़ की यह पवित्र भूमि केवल तलवारों की चमक से नहीं, बल्कि साधना की ज्योति से भी आलोकित रही है।
यही कारण है कि यहाँ का हर व्यक्ति अपने भीतर धर्म, शौर्य और सेवा का संगम लिए चलता है।

१५ अगस्त का यह *अमृत महोत्सव* केवल एक राष्ट्रीय पर्व नहीं,
बल्कि हमारे पूर्वजों की आत्मा के प्रति कृतज्ञता का दिवस है।
मेवाड़ की वीर भूमि और मावजी महाराज की आध्यात्मिक चेतना,
दोनों ने हमारे जीवन को दिशा दी —
एक ने संघर्ष का साहस सिखाया, और दूसरे ने सेवा का अर्थ बताया।

आज जब तिरंगा लहराता है, तो लगता है —
मेरे पिता और उनके जैसे लाखों सेनानियों की आत्माएँ इस पवन में मुस्कुरा रही हैं।
उनकी प्रेरणा आज भी हमारे हृदयों में ज्योति बनकर जल रही है।

संत मावजी महाराज — मेवाड़ की ज्योति और मेरे पिता की प्रेरणा:

राजस्थान का मेवाड़ क्षेत्र सदियों से केवल पराक्रम का प्रतीक नहीं,
बल्कि आध्यात्मिकता और भक्ति का भी पावन केंद्र रहा है।
इसी पावन भूमि पर लगभग **तीन सौ वर्ष पूर्व** डूंगरपुर ज़िले के
साबला ग्राम में अवतरित हुए — *संत मावजी महाराज,*
जिन्हें जनमानस श्रद्धा से *"निष्कलंक भगवान"* और *"मेवाड़ के कृष्ण"* के रूप में पूजता है।

जीवन और साधना

जनजातीय क्षेत्र साबला में संत मावजी महाराज का जन्म लगभग तीन शताब्दियाँ पहले हुआ।
बाल्यकाल से ही वे असाधारण बुद्धि और संवेदनशीलता के धनी थे।
पंद्रह वर्ष की अल्पायु में उन्होंने *दिव्य योग साधना* द्वारा ज्ञान की प्राप्ति की।
उस समय समाज में धार्मिक अंधविश्वास, जातिगत भेदभाव और सामाजिक विषमता व्याप्त थी —
किन्तु मावजी महाराज ने **समानता, सत्य और करुणा** के संदेश से समाज को नया मार्ग दिखाया।

उनका यह उपदेश आज भी अमर है —

"धर्म का सार किसी मंदिर की दीवारों में नहीं,
बल्कि मनुष्य के हृदय की करुणा में बसता है।"

चोपड़े — भविष्य का दर्पण

मावजी महाराज ने अपनी भविष्यवाणियाँ **वागड़ी भाषा** में *लाक्षा की स्याही* और *बाँस की कलम* से लिखीं।
उनकी रचनाएँ "चोपड़े" कहलाती हैं। इन पवित्र हस्तलिपियों में
उन्होंने आने वाले युगों के विज्ञान, पर्यावरण, समाज और संस्कृति का चित्रण किया था —
जब न बिजली थी, न सड़के, न हवाई जहाज —
तब उन्होंने चित्रों और संकेतों के माध्यम से भविष्य की झलकें अंकित कीं।

इनमें से तीन मुख्य चोपड़े आज भी सुरक्षित हैं —
एक **हरि मंदिर, साबला** में;
दूसरा **आबू दर्रा** में;
और तीसरा अंग्रेज अधिकारी टोक्यो (जापान) लेकर गए थे।
इसके अतिरिक्त कुछ चोपड़े **झल्लारा (उदयपुर)** और **बाँसवाड़ा** में भी सुरक्षित बताए जाते हैं।
वर्तमान में इन हस्तलिपियों का **डिजिटलीकरण** (digitization) चल रहा है।

मावजी महाराज की प्रमुख कृतियाँ

उनकी रचनाओं में केवल भविष्यवाणी ही नहीं,
बल्कि आध्यात्मिक ज्ञान और भक्ति का अमूल्य भंडार भी समाहित है।
उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं —
ज्ञान भंडार, अकल रमण, सुरानंद, भजनावली, भवन स्तोत, ज्ञानरल माला, कलंगा हरण और न्याव।

मावजी महाराज की दिव्य भविष्यवाणियाँ:

उनकी वाणियों में युगद्दष्टा दृष्टि स्पष्ट दिखाई देती है —

क्रम	मावजी वाणी	वर्तमान में उसका अर्थ
1	**"वायरे बात होवेगा।"**	हवा में बातें होंगी — आज के *मोबाइल फोन* का संकेत।
2	**"परिऐ पाणी वेसाएगा।"**	पानी मापकर बेचा जाएगा — आज *बोतलबंद पानी* का युग।
3	**"डोरिये दीवा बरेंगा।"**	डोरियों से दीपक जलेंगे — *बिजली के तारों से रोशनी।*
4	**"भेंत में भभुका फूटेगा।"**	दीवारों से पानी निकलेगा — घरों की *नल व्यवस्था।*
5	**"खारा समुंदर मीठा जल होसी।"**	समुद्र का खारा जल मीठा होगा — *डिसेलिनेशन तकनीक।*
6	**"पर्वत गिरी ने पाणी होसी।"**	पर्वत पिघलेंगे — *हिमालय के ग्लेशियर पिघलना।*
7	**"समुंदर ने तीरे कर्षण कमासी।"**	समुद्र किनारे खेती होगी — *तटीय कृषि और नमक उद्योग।*
8	**"पूरबपश्चिम वायरा बाजसी सर्वे वाणी – फरसी रे।"**	पूर्व पश्चिम संस्कृतियों का संगम-— *वैश्वीकरण।*
9	**"जमीन आसमान का पर्दा टूटेगा।"**	पृथ्वी और आकाश के बीच अवरोध टूटेगा — *ओज़ोन परत में छेद।*
10	**"धरती तो तांबा वरणी होसी।"**	पृथ्वी तांबे की तरह तपेगी — *ग्लोबल वार्मिंग।*

अन्य भावात्मक वाणियाँ और उनके अर्थ

1. **"बग सरणे हंस बिसती, हंस करे बग नी सेवा।"**
   — अयोग्य व्यक्ति के अधीन योग्य व्यक्ति का श्रम होगा; आज का प्रशासनिक यथार्थ।
2. **"चार जुगना बंधन तोड़ी, जुगना भगत तारया।"**
   — जाति-धर्म के बंधन टूटेंगे, केवल *भक्ति और कर्म* से मुक्ति मिलेगी।
3. **"बधणी सिर थकी भार उतरयसी।"**
   — बैलों का बोझ हल्का होगा — *ट्रैक्टर और यांत्रिक खेती* का आगमन।
4. **"बहू बेटी काम भारे, सासु पिसणा पिसेगा।"**
   — *महिलाएँ कार्यक्षेत्र में आगे बढ़ेंगी,* समाज में समानता आएगी।

मावजी परंपरा और वेणेश्वर धाम

विक्रम संवत 1784 में मावजी महाराज ने **वेणेश्वर धाम (त्रिवेणी संगम)** में गादी स्थापित कर
"माव परंपरा" का आरंभ किया। यहाँ उन्होंने पाँच वर्ष तपस्या की,
तदुपरांत वे **धौलागढ़** में रहे।
उन्होंने कहा था —

"इस क्षेत्र का आदिवासी समाज एक दिन अपने अधिकार से शासन करेगा।"
यह भविष्यवाणी आज भी सामाजिक रूप से सटीक सिद्ध हो रही है।

मेरे पिता की प्रेरणा — मावजी महाराज

मेरा जन्म जिस भूमि पर हुआ — **सेरिया गाँव (तहसील सलूंबर, जिला उदयपुर)** —
वह उसी पावन मेवाड़ क्षेत्र का अंश है,
जहाँ मावजी महाराज का जन्म हुआ और जहाँ से उनकी आध्यात्मिक आभा आज भी प्रवाहित है।

मेरे पूज्य पिता **स्वतंत्रता सेनानी मेघजी पद्मावत** का जीवन भी
मावजी महाराज की वाणी से प्रेरित था।
जब वे जेल में यातनाएँ सहते थे, तब भी उनके मन में यह विश्वास अडिग था —

"कर्म ही पूजा है, और सेवा ही साधना।"

यह वाणी उन्हें कठिनतम परिस्थितियों में भी साहस देती रही।
उनका देशप्रेम, त्याग और दृढ़ता मावजी महाराज की उसी शिक्षाओं का सजीव उदाहरण थी।

मावजी महाराज केवल एक संत नहीं,
बल्कि *एक युगद्रष्टा, भविष्यवेत्ता और समाज-सुधारक* थे।
उनकी वाणियाँ केवल भविष्यवाणियाँ नहीं, बल्कि चेतावनी और प्रेरणा दोनों हैं।
उनकी भविष्य दृष्टि आज विज्ञान, पर्यावरण और संस्कृति —
तीनों स्तरों पर सत्य सिद्ध हो रही है।

मेवाड़ की यह पावन भूमि, जहाँ उनका जन्म हुआ और जहाँ से
मेरे पिता जैसे राष्ट्रभक्तों ने स्वतंत्रता की मशाल उठाई —
वह भूमि आज भी प्रेरणा, भक्ति और कर्म की त्रिवेणी है।

स्वतंत्रता संग्राम और मावजी विचारधारा:

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में मावजी महाराज के सिद्धांतों की गूंज स्पष्ट सुनाई देती है।
अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने उनके विचारों से प्रेरणा ली।
त्याग, तपस्या और कर्मयोग के जो सिद्धांत उन्होंने दिए, वही स्वतंत्रता आंदोलन के नैतिक आधार बने।

मेवाड़, मराठवाड़ा और हैदराबाद के अनेक आंदोलनकारियों ने यह माना कि
"देशभक्ति भी एक प्रकार की साधना है, जिसमें सेवा और त्याग ही ईश्वर की आराधना हैं।"

इस दृष्टि से मावजी महाराज की शिक्षाएँ केवल धार्मिक नहीं, बल्कि राष्ट्रनिर्माण की प्रेरणा भी थीं। उनके अनुयायियों ने न केवल भक्ति का मार्ग अपनाया, बल्कि समाज सुधार और स्वतंत्रता की दिशा में भी योगदान दिया।

आज के युग में मावजी महाराज की प्रासंगिकता:

आज जब समाज पुनः विभाजन, स्वार्थ और भौतिकता की दिशा में अग्रसर है,
मावजी महाराज की यह चित्रित वाणी हमें एकता, सेवा और मानवता की राह दिखाती है।

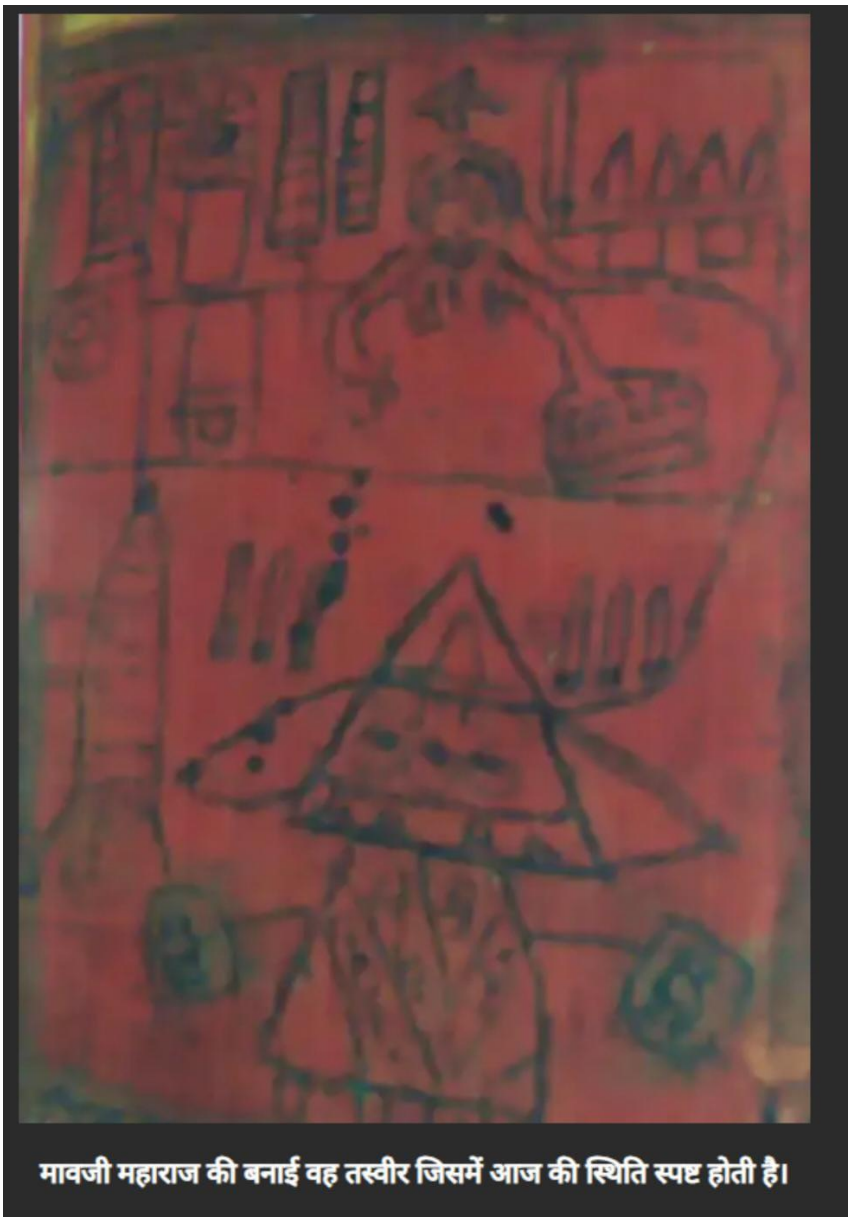

मावजी महाराज की बनाई वह तस्वीर जिसमें आज की स्थिति स्पष्ट होती है।

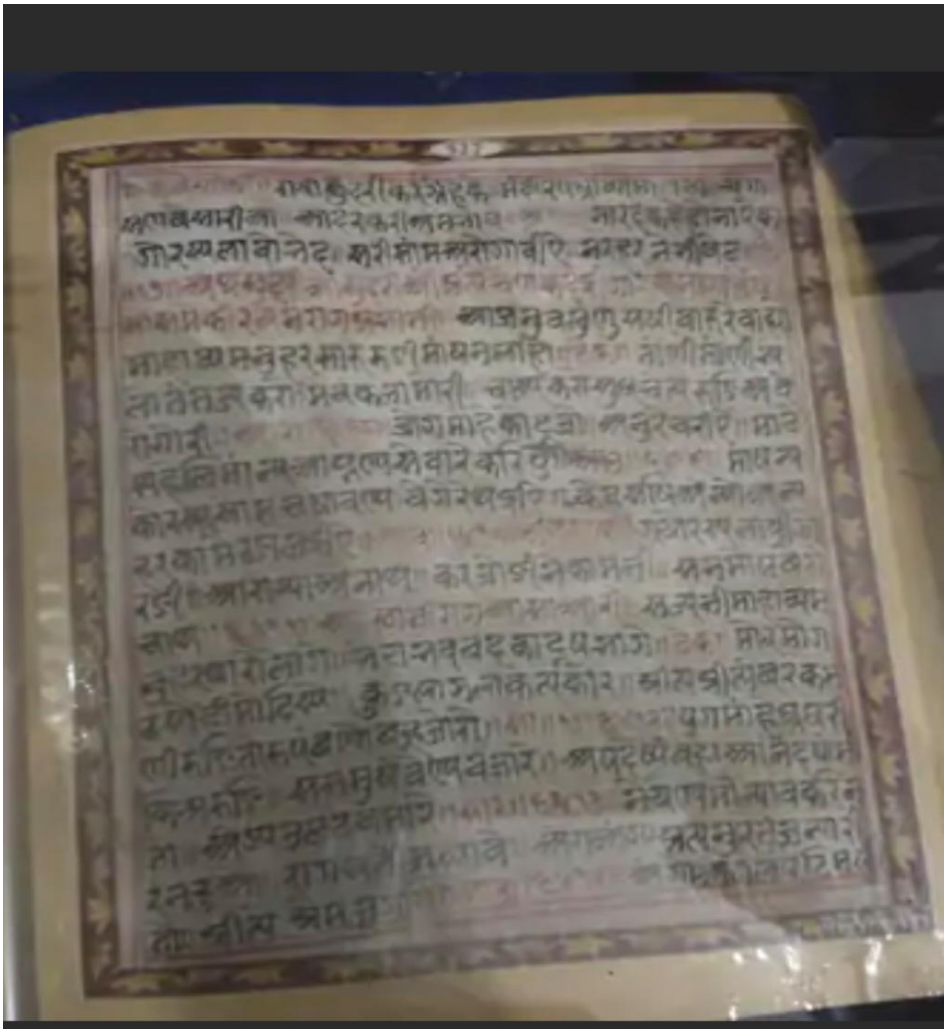

चोपड़ों में कुछ इस तरह से लिखा हुआ है भविष्य।

यह दोनों चित्र संत मावजी महाराज की उस **दिव्य दृष्टि और अद्भुत दूरदर्शिता** के प्रतीक हैं,
जिन्होंने लगभग **तीन सौ वर्ष पूर्व** अपने *चोपड़ों* में भविष्य की परिस्थितियों का चित्रण किया था।
इन चित्रों में उन्होंने उस युग में, जब विज्ञान और तकनीक का नाम तक नहीं था,
भविष्य के समाज, पर्यावरण और मानव जीवन के स्वरूप को बड़ी सूक्ष्मता से अंकित किया। इस हस्तरेखित चित्र में उन्होंने उस समय की सीमित साधनों से भविष्य की जटिल सामाजिक,
प्राकृतिक और तकनीकी परिस्थितियों का संकेत दिया था —
मानो वे आज के युग की स्थिति को पहले ही देख चुके हों।

यह चित्र उनके उस चिंतन का दृश्य रूप है, जिसमें उन्होंने समाज में बढ़ती असमानता,
प्रकृति के दोहन, और मानवीय मूल्यों के क्षरण की भविष्यवाणी की थी।
यह केवल कला नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक चेतावनी है —
कि जब मनुष्य अपने धर्म, सत्य और प्रेम के मार्ग से भटकता है,
तो सभ्यता भौतिक रूप से आगे बढ़कर भी आत्मिक रूप से निर्धन हो जाती है।

उनकी यह वाणी आज भी उतनी ही सार्थक है —

“प्रेम से बढ़कर कोई धर्म नहीं, और सेवा से बढ़कर कोई साधना नहीं।”

मावजी महाराज का संदेश आज के समय में आत्मिक ऊर्जा और सामाजिक सद्भाव का मार्गदर्शन करता है।
उनका जीवन हमें यह सिखाता है कि सच्ची आध्यात्मिकता वही है,
जो मनुष्य को मनुष्य से जोड़े, और समाज को समरसता के सूत्र में बाँध दे।

मावजी महाराज केवल एक संत नहीं, बल्कि *मानवता के दूत* थे।
उनकी शिक्षाएँ आज भी मेवाड़ की मिट्टी में गूंजती हैं,
जहाँ हर दीपक में भक्ति की ज्योति और हर हृदय में सेवा की लौ जलती है।

उनका संदेश यह है कि —

“जो स्वयं को सुधारता है, वही संसार को आलोकित करता है।”

मावजी महाराज की यह आध्यात्मिक प्रेरणा ही वह प्रकाश है,
जो स्वतंत्रता सेनानियों से लेकर आज की पीढ़ी तक हर हृदय में
सत्य, साहस और समर्पण का दीप प्रज्वलित करती है।

सलूंबरजिला उदयपुर) , राजस्थान(:

सलूंबर राजस्थान राज्य के उदयपुर ज़िले में स्थित एक नगर एवं नगरपालिका है। यह **मेवाड़ क्षेत्र** का एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण स्थल माना जाता है। सलूंबर की भौगोलिक स्थिति **24.130° उत्तर अक्षांश और 74.050° पूर्व देशांतर** पर है तथा इसकी औसत ऊँचाई लगभग **262 मीटर** है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:

सलूंबर नगर पर **मेवाड़ के चुंडावत सिसोदिया राजपूतों** का शासन रहा है। यह ब्रिटिश शासनकाल में एक **राज्य (Princely State)** था।
मेवाड़ के महाराणा लाखा के ज्येष्ठ पुत्र **रावत चुंडा सिंह** ने सलूंबर राजघराने की स्थापना की थी।
वर्तमान में इस शाही परिवार के **देवरथ सिंह** नामक व्यक्ति इस राजवंश के नाममात्र (titular) प्रमुख हैं।

भौगोलिक स्थिति:

सलूंबर, **उदयपुर संभाग** के अंतर्गत आता है और **उदयपुर ज़िले के मुख्यालय से लगभग 69 किलोमीटर दक्षिण** में स्थित है।
यह राजस्थान की राजधानी **जयपुर से लगभग 416 किलोमीटर उत्तर दिशा में** पड़ता है।

सीमाएँ एवं आसपास के क्षेत्र:

सलूंबर के चारों ओर विभिन्न तहसीलें और कस्बे हैं —

- दक्षिण में **आसपुर तहसील**,
- उत्तर में **गीरवा तहसील**,
- पूर्व में **धरियावद तहसील**,
- और पश्चिम में **सराड़ा तहसील** स्थित है।

सलूंबर के निकटवर्ती नगरों में **रामगढ़, सागवाड़ा, प्रतापनगर** और **उदयपुर** प्रमुख हैं।

सलूंबर एक ऐसा नगर है जो **राजपूत वीरता, मेवाड़ी संस्कृति और ऐतिहासिक गौरव** का प्रतीक है। यहाँ की राजवंशीय परंपरा, स्थापत्य कला, और स्थानीय संस्कृति राजस्थान के गौरवशाली इतिहास को जीवित रखे हुए हैं।

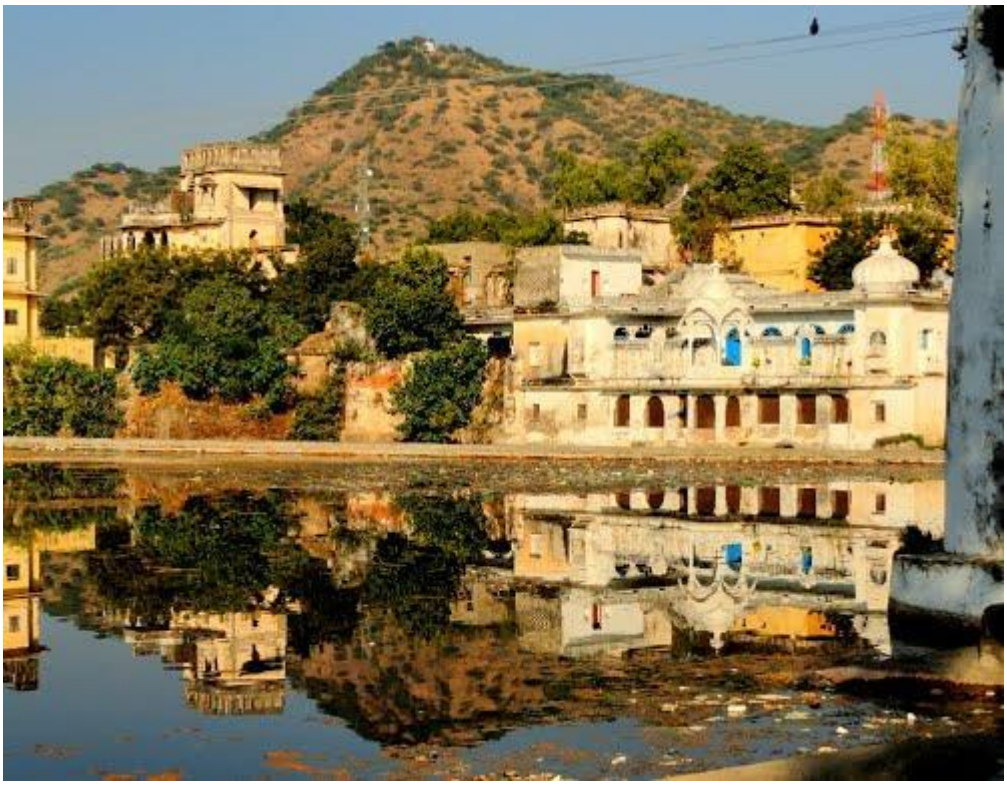

ऐतिहासिक विवरण)Historical Significance-Source-Internet)

सलूंबर मेवाड़ क्षेत्र का एक प्राचीन नगर है, जिसकी स्थापना चूंडावत सिसोदिया राजवंश द्वारा की गई थी। इसे रावत चुंडा सिंह, जो महाराणा लाखा के ज्येष्ठ पुत्र थे, ने बसाया था। यह स्थान मेवाड़ की परंपरा, शौर्य और राजपूती गरिमा का प्रतीक है। ब्रिटिश काल में यह एक रियासत थी, और यहाँ के शासकों ने मेवाड़ की स्वतंत्रता और अस्मिता की रक्षा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सांस्कृतिक विवरण)Cultural Significance-Source-Internet)

सलूंबर मेवाड़ की लोकसंस्कृति का धरोहर स्थल है। यहाँ के लोकगीत, नृत्य, गणगौर और तेजाजी जैसे लोक पर्व प्रसिद्ध हैं। स्थानीय लोग मेवाड़ी बोली में संवाद करते हैं। पारंपरिक पोशाकें, हस्तशिल्प और लोककला यहाँ के लोगों की पहचान हैं। साथ ही यहाँ की मेहमाननवाज़ी, लोकविश्वास और धार्मिक परंपराएँ इसे सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बनाती हैं।

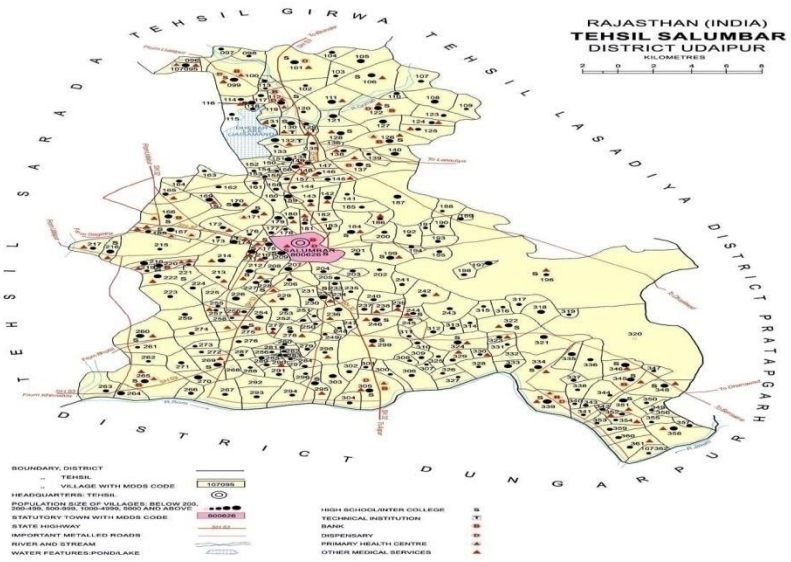

भौगोलिक विवरण)Geographical Significance-Source-Internet)

सलूंबर, राजस्थान के उदयपुर ज़िले में स्थित है, जो समुद्र तल से लगभग **262 मीटर** की ऊँचाई पर बसा है। यह 24.13° उत्तर अक्षांश और 74.05° पूर्व देशांतर पर स्थित है। सलूंबर के चारों ओर पहाड़ियाँ और हरियाली से भरपूर अरावली पर्वत श्रृंखला फैली हुई है। यहाँ का जलवायु अर्धशुष्क है, परंतु मानसून में पर्याप्त वर्षा होती है।

सेरिया गाँव का ऐतिहासिक एवं सामाजिक महत्व:

राजस्थान के उदयपुर ज़िले के सलूम्बर तहसील में स्थित **सेरिया गाँव** मेवाड़ क्षेत्र का एक प्राचीन एवं ऐतिहासिक ग्राम है। यह गाँव न केवल अपने भौगोलिक सौंदर्य के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि यहाँ की सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि भी अत्यंत गौरवपूर्ण रही है।

मेवाड़ की इस भूमि पर वीरता, त्याग और स्वतंत्रता के आदर्शों की परंपरा रही है। सलूम्बर के समीप स्थित सेरिया गाँव भी इस गौरवशाली परंपरा का भागीदार रहा है। यहाँ के निवासियों में देशभक्ति, त्याग और समाजसेवा की भावना पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही है।

सामाजिक संरचना और जनजीवन:

सेरिया ग्राम में विभिन्न जाति-समुदायों के साथ-साथ अनुसूचित जनजातियों (भील समुदाय प्रमुख) की उपस्थिति विशेष रूप से उल्लेखनीय है। यहाँ की जनसंख्या में परिश्रम, सहयोग और परंपराओं के प्रति गहरी निष्ठा देखने को मिलती है। ग्रामीण जीवन यहाँ आत्मनिर्भरता और आपसी एकता पर आधारित है।

गाँव में शिक्षा, न्याय और रोजगार जैसे विषयों पर निरंतर जनजागृति होती रही है। स्वतंत्रता-पूर्व काल से ही यहाँ के लोगों ने सामाजिक सुधार और जागृति के कार्यों में सहभागिता निभाई।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:

सेरिया गाँव सलूम्बर क्षेत्र के अंतर्गत आता है, जो स्वयं मेवाड़ राज्य की एक महत्वपूर्ण जागीर रहा है। मेवाड़ की राजवंशीय परंपरा और ब्रिटिश शासन के दौरान हुए राजनीतिक परिवर्तन इस क्षेत्र में गहराई से जुड़े हुए हैं।

सलूम्बर पर शासन करने वाले **चुंडावत सिसोदिया राजपूतों** ने यहाँ राजकीय और सामाजिक व्यवस्था की नींव रखी थी। इसी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में सेरिया जैसे गाँवों ने स्थानीय स्तर पर स्वतंत्रता-संग्राम की भावना को जीवित रखा।

स्वतंत्रता आंदोलन में भूमिका:

सेरिया ग्राम के नागरिकों ने भले ही बड़े आंदोलनों में प्रत्यक्ष रूप से भाग न लिया हो, परंतु यहाँ से राष्ट्रीय चेतना की लहर अवश्य उठी। भारत छोड़ो आंदोलन के समय इस क्षेत्र के अनेक युवा और किसान स्वतंत्रता के संदेश को गाँव-गाँव पहुँचाने में सक्रिय रहे।
यहाँ के ग्रामीणों ने सत्य, अहिंसा और त्याग के मूल्यों को आत्मसात किया तथा आज़ादी के बाद सामाजिक पुनर्निर्माण की दिशा में अग्रसर हुए।

सांस्कृतिक और सामाजिक योगदान:

सेरिया ग्राम की सांस्कृतिक पहचान लोकगीत, लोकनृत्य और पारंपरिक पर्वों से जुड़ी हुई है। यहाँ के त्योहार सामाजिक एकता के प्रतीक हैं।
शिक्षा और विकास की दृष्टि से भी ग्राम में निरंतर प्रगति देखी गई है। गाँव के युवाओं में अब भी अपने इतिहास और पूर्वजों की परंपराओं के प्रति गर्व की भावना प्रबल है।

सेरिया गाँव केवल एक भूगोलिक इकाई नहीं, बल्कि **मेवाड़ की शौर्यगाथा और ग्रामीण चेतना का जीवंत प्रतीक** है।
यह वह भूमि है जहाँ स्वावलंबन, संघर्ष और सामाजिक एकता के आदर्श एक साथ पल्लवित होते हैं।
आज भी सेरिया के लोग अपने इतिहास पर गर्व करते हैं और आने वाली पीढ़ियों को उसी भावना से प्रेरित करते हैं, जिस भावना से मेवाड़ ...ने सदियों तक अपनी अस्मिता, संस्कृति और स्वाधीनता की रक्षा की।
मेवाड़ की यही भावना — त्याग, परिश्रम और मातृभूमि के प्रति अटूट निष्ठा —
सेरिया ग्राम के लोगों के जीवन में आज भी सजीव है।

यह गाँव न केवल ऐतिहासिक परंपराओं का वाहक है,
बल्कि आधुनिक भारत में भी राष्ट्रभक्ति, सहयोग और आत्मनिर्भरता का उदाहरण प्रस्तुत करता है।
यहाँ की मिट्टी में शौर्य की सुगंध और सेवा की भावना रची-बसी है,
जो प्रत्येक पीढ़ी को यह संदेश देती है कि —

“जो अपने कर्म से भूमि का सम्मान करता है, वही सच्चे अर्थों में देशभक्त होता है।”

इस प्रकार सेरिया गाँव मेवाड़ की उस गौरवशाली विरासत का अभिन्न अंग है,
जहाँ भक्ति में भावना है, संघर्ष में संकल्प है,
और हर हृदय में भारतमाता के प्रति अमिट प्रेम की ज्योति जल रही है। ...

जिसका जीता-जागता उदाहरण हैं **हमारे पूज्य पिताजी — स्वतंत्रता सेनानी मेघजी पद्मावत।**
उनका जीवन सेरिया ग्राम की उसी परंपरा का प्रतिबिंब है,
जिसमें त्याग, सेवा और मातृभूमि के प्रति अटूट निष्ठा का संगम है।

उन्होंने संघर्ष को जीवन का धर्म माना और विपरीत परिस्थितियों में भी
देशप्रेम की ज्योति को कभी मंद नहीं होने दिया।
उनकी तपस्या और समर्पण ने यह सिद्ध किया कि
मेवाड़ की यह भूमि केवल इतिहास की कहानी नहीं,
बल्कि जीवित प्रेरणा है — जहाँ हर कण में स्वतंत्रता की गूँज सुनाई देती है।

हमारे पिताजी का जीवन इस सत्य का साक्ष्य है कि

"मेवाड़ की मिट्टी में जन्म लेने वाला हर व्यक्ति
अपने कर्म, साहस और सेवा से भारत की आत्मा को उजागर करता है।"

मेरे पूज्य पिता : स्वतंत्रता सेनानी मेघजी पद्मावत की भावनिक कथा:

मेरे पिता जी का जन्म राजस्थान के सेरिया गाँव (तहसील सलूम्बर, जिला उदयपुर, मेवाड़ क्षेत्र) में सन् 1923 में हुआ था। यह कहानी सन् 1942 से 1948 तक की है — भारत की स्वतंत्रता की उषा के पूर्व की।

उस समय राजस्थान में न कोई बड़ा जलस्रोत था, न आधुनिक साधन। खेती केवल वर्षा पर निर्भर थी। ग्रामीण जीवन कठिन था, परन्तु मन भावनात्मक दृढ़ता से परिपूर्ण। मक्का, गेहूँ और सरसों की फसलें ही जीविका का आधार थीं। महुआ के वृक्षों से तेल निकालने के लिए ढोंडला नामक कल का उपयोग होता था और उसी तेल से दीपक जलाया जाता था — जैसे अंधकार में भी आशा का दीप प्रज्वलित रहता हो।

ग्राम्य जीवन में एक-दूसरे के प्रति सहानुभूति और सहयोग का भावनिक बंधन था। लोग मिलजुलकर कठिनाइयों को बाँटते थे। महुआ और गुड़ के लड्डू न केवल स्वादिष्ट थे बल्कि उस भावनिक संस्कृति के प्रतीक थे जो प्रेम, अपनत्व और आत्मनिर्भरता से भरी हुई थी।

राजस्थान के अधिकांश युवा उस समय रोजगार के लिए मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र और गुजरात की ओर जाते थे। यह प्रवास केवल रोजगार नहीं, बल्कि संघर्ष और आत्मसम्मान की यात्रा थी।

मेरे पिता जी और उनके समवयस्कों ने इसी भावनिक शक्ति के बल पर स्वतंत्रता के महान संग्राम में अपना योगदान दिया। उनका जीवन एक प्रेरणा है — बलिदान, कर्म और मातृभूमि के प्रति निष्ठा का सजीव उदाहरण।

संघर्ष की वह यात्रा — मेरे दादा श्री शिवरामजी पद्मावत और मेरे पिता जी का प्रारंभिक जीवन:

स्वतंत्रता संग्राम की उस तपती धारा में मेरे अपने दादा **शिवरामजी पद्मावत** और मेरे पिता जी भी सम्मिलित थे। पिता जी मात्र **आठ वर्ष की आयु** में ही जीवन-यात्रा पर निकल पड़े — रोजगार की खोज में।

उन दिनों परिवहन के कोई साधन नहीं थे। गाँव से **रतलाम (मध्यप्रदेश)** तक की यात्रा **लगभग ४०० किलोमीटर** लंबी थी, जिसे उन्होंने और मेरे दादा जी ने **पैदल** तय किया। इस कठिन मार्ग में कई दिन, बल्कि कई महीने लग जाया करते थे। रतलाम से महाराष्ट्र आने के लिए उस समय **तीन दिनों की रेल यात्रा** करनी पड़ती थी — यह मार्ग अंग्रेजों द्वारा हैदराबाद से अजमेर तक चलाया गया था। अंततः यह थकाऊ यात्रा पूर्ण कर दोनों का आगमन **वाशिम (महाराष्ट्र)** में हुआ।

अब आरंभ हुआ जीवन का **संघर्षपूर्ण अध्याय**। महाराष्ट्र में पैर जमाते ही भाषा, रीति-रिवाज, और संस्कृति — सब कुछ नया था। न दादा जी को मराठी का ज्ञान, न पिता जी को उस समाज की परंपराओं की समझ। बस, दादा जी के गले में कंठी-माला, जनेऊ, धोती-कुर्ता — और साथ में एक बालक। खान-पान का कोई ठिकाना नहीं था। किसी मंदिर की शरण ही उनका पहला आश्रय बना — **बालाजी के मंदिर** की चौखट पर।

वहीं उन्हें **कृष्ण मंदिर की छत** का सहारा मिला। मंदिर में एक पुरोहित रहते थे। वे मराठीभाषी थे, और दादा जी हिंदीभाषी — संवाद का कोई सेतु नहीं था। फिर भी, पुरोहित जी बड़े ही **दयालु और संवेदनशील** थे। उन्होंने दादा जी की आँखों में झांककर उनकी पीड़ा पढ़ ली।

दादा जी के ब्राह्मण वेश और विनम्रता को देखकर पुरोहित जी ने पूछा —

“क्या तुम न्यायाधीश के घर कांवड़ से पानी भरोगे?”

जैसे किसी अंधे को दो आँखें मिल गई हों, वैसे ही दादा जी ने बिना क्षण गंवाए उत्तर दिया —

“हाँ, अवश्य भरूँगा।”

बस, यही उनके जीवन का **पहला काम** बना — न्यायाधीश के घर के लिए कांवड़ से पानी लाना। प्रतिदिन स्नान के पश्चात, गीले वस्त्रों में ही, वे लगभग **चार किलोमीटर दूर बावड़ी** से जल लाकर न्यायाधीश के घर भरते थे। उनके साथ वही नन्हा बालक — मेरे पिता जी — रहता था।

न्यायाधीश की पत्नी अत्यंत **दयालु और मातृभाव से पूर्ण** थीं। उन्होंने देखा कि वह छोटा बच्चा बार-बार अपने पिता के साथ पानी ढोने आता है। उनका हृदय द्रवित हुआ, और उन्होंने उस बालक को अपने घर में **आश्रय और स्नेह** प्रदान किया। उन्होंने ही उसके **भोजन, पालन–पोषण और शिक्षा** की पूरी जिम्मेदारी ली। इस प्रकार, मेरे पिता जी के जीवन को एक नई दिशा मिली — स्थिरता और संस्कार की।

बचपन में पिता जी न्यायाधीश के बच्चों के साथ **कुश्तियाँ** खेलते थे — और हर बार विजय उन्हीं की होती थी। दादा जी यह देखकर गर्व और वेदना दोनों से भर उठते थे। उनके मन में उस समय **महाभारत का एक दृश्य** जीवंत हो उठता था — जैसे अर्जुन के रथ पर स्वयं श्रीकृष्ण सारथी हों, और

रथ पर गरुड़ ध्वजा लहरा रही हो। जब अर्जुन के बाण कर्ण के रथ पर पड़ते थे, तो कर्ण का रथ ग्यारह फीट पीछे हटता था; और जब कर्ण अपने बाण छोड़ता था, तो अर्जुन का रथ मात्र पाँच फीट पीछे जाता था।

तब श्रीकृष्ण ने कहा —

“धन्य हो, सूर्यपुत्र!”

अर्जुन ने आश्चर्य से पूछा —

“हे माधव, यह आप क्या कह रहे हैं?”

श्रीकृष्ण मुस्कराए —

“अर्जुन, तुम्हारे रथ पर मैं, तुम, हनुमान और गरुड़ — चारों विराजमान हैं, फिर भी रथ पीछे हटता है; और कर्ण अकेला होकर भी आगे बढ़ता है — अब सोचो, वास्तविक विजेता कौन है?”

दादा जी यही चिंतन करते —

“न्यायाधीश के पुत्रों के पास सब सुख-सुविधाएँ हैं, फिर भी मेरा लाल हर कुश्ती में विजयी होता है — यही उसकी नियति का संकेत है।”

उनकी आँखों से गर्व के आँसू ढलक पड़ते। उसी क्षण न्यायाधीश ने दादा जी के कंधे पर हाथ रखकर कहा —

“यह पुत्र तुम्हारा है — पर यह एक दिन पीछे मुड़कर नहीं देखेगा। विजय भव!”

और उन्होंने मेरे पिता को **आशीर्वाद देते हुए गले से लगा लिया।**

संघर्ष और स्वतंत्रता की गाथा:

समय ने फिर से करवट बदली, न्यायाधीश दूसरी जगह पर बदले गए। उस समय पिताजी पंद्रह साल के ही थे, तभी न्यायाधीश ने दादा से कहा, "इस बच्चे को हमारे साथ ही रहने दो, इसका पूरा पढ़ाई का खर्च मैं वहन करूँगा।" पर फिर से दादा की गरीबी आड़ी आई। तब दादा ने सोचा कि मैं इस अकेले बच्चे को कहाँ छोड़ूँगा, वे बड़े लोग थे, कहीं मेरा बच्चा हमसे बिछड़ न जाए — इस डर के कारण दादा ने न कर दी।

आगे पिताजी किशोर अवस्था में प्रवेश कर चुके थे। न्यायाधीश की बदली होने के पश्चात पिताजी की पढ़ाई एवं पाठशाला छूट गई। वे छठी कक्षा तक वाशिम में पढ़े। अब पिताजी को अपनी और अपने पिता की गरीबी परिस्थितियों का आभास होने लगा। उस समय दादाजी को कावड़ से पानी भरने का काम करीबन बंद हो चुका था। पिता व दादा दोनों बेरोज़गार हो गए थे। तभी पिताजी ने सोचा कि अब हमें अपने रिश्तेदार, वाघजी काका के पास सेलू जाना चाहिए।

वाघजी काका बड़े ही ज़िंदा-दिली प्रकार के व्यक्ति थे, वह अपने भतीजे एवं भाई को देखकर बहुत खुश

हुए। उन्होंने तहेदिल से उनका स्वागत किया, क्योंकि वाघजी काका उन्हें पहले से ही सेलू आने के निमंत्रण दिया था। वाघजी काका हमारे पिताजी के बड़े ही स्नेही थे। उस समय वाघजी काका को संतान नहीं थी, वे पिताजी को गोद लेने के विचार कर ही रहे थे। तभी दो वर्षों पश्चात वाघजी काका को दो पुत्रों ने जन्म लिया — उनके नाम परशुरामजी एवं शिवरामजी थे। अब उन्होंने गोद लेने के विचार स्थगित कर दिया।

पर उनका प्रेम मेरे पिता के प्रति कम नहीं हुआ। उनकी सेलू में "महालक्ष्मी" नामक होटल में वे काम करने लगे थे। उसी समय स्वतंत्रता आंदोलन बहुत जोरों पर था, तभी उन्होंने अपनी उम्र के बीस साल में 'जय हिन्द' नामक होटल खोला। पिताजी उच्च विचार श्रेणी के व्यक्ति थे। उन्होंने अपनी होटल में सर्वधर्मियों को प्रवेश की अनुमति दी थी, सब जनजातियों पर उस समय छूट थी। जहाँ पर जनजाति के लोग खाना एवं खुद के चाय के बर्तन खुद धोकर रखने पड़ते थे, पर पिताजी ने उन व्यक्तियों को मुक्त प्रवेश दे रखा था। इसलिए स्वर्ण के ग्राहक होटल में आते नहीं थे।

उसी समय होटल की पतझड़ अवस्था शुरू हो चुकी थी। ग्रीष्म ऋतु के तूफान में उस होटल की छत उड़ गई। होटल हिंदी माता तहस-नहस हो चुका था। दरिद्रता का चक्र फिर से शुरू हो गया। तभी उनके परम स्नेही (वाघजी दादा) ने धाड़स बंधाई और कहा, "प्रवाह के विरुद्ध न चलो, एवं कभी हिम्मत मत हारना।" इससे पिताजी को फिर से हिम्मत मिल गई। वे काका के साथ-साथ पिताजी के गुरु भी थे। वाघजी काका के हाथ सदा उनके सिर पर रहा। उन्होंने अपने एक मित्र के साथ पुनः होटल शुरू करने का विचार किया।

पिताजी और उनके मित्र गेनाजी सा समविचारी व्यक्ति थे। दोनों ही लड़वाईया किस्म के व्यक्ति थे। उन दोनों ने मिलकर "महाराष्ट्र" नामक होटल शुरू किया। वह होटल दिन-दुगुना, रात-चौगुना की तरह हो गई थी। उस समय हैदराबाद का मुक्तिसंग्राम आंदोलन जोरों पर था और होटल में काफी स्वतंत्र योद्धा चाय पीने के बहाने होटल में विचार-विमर्श करने के लिए आते रहते थे। इस वजह से स्वतंत्रता के विचारों का प्रभाव उन पर पड़ा। उस समय निजामियों की सख्त नज़र रखी जा रही थी और इन दोनों व्यक्तियों ने सत्याग्रह में हिस्सा लिया।

उन्हें आठ दिनों तक जेल में रखा गया। वहां पर उन दोनों मित्रों में आपसी मतभेद हो गए। जेल से बाहर निकलते ही "महाराष्ट्र होटल" का विभाजन हो गया। गेनाजी ने होटल और मालियों को अपने पास रख लिया, पिताजी को किसी प्रकार से भी कोई रकम और जायदाद का हिस्सा नहीं दिया। वे खाली हाथ होटल से बाहर निकल पड़े। उनके जीवन का दूसरा पड़ाव समाप्त हुआ।

आगे उन्होंने अपने भाई वालजी, नारायणजी और शिवरामजी के साथ "पद्मावत होटल" की नींव रखी। उसी होटल के सामने वसंत विहार नामक गेनाजी ने होटल चालू किया। पिताजी का मनुष्यबल बड़ा था और इस प्रकार व्यवसाय को संभालने वाले लोग बहुत से थे। यहां से पिताजी की आर्थिक स्थिति मज़बूत हो चली।

अब आगे स्वतंत्र संग्राम आंदोलन का दूसरा पड़ाव शुरू हो चुका था। सन् १९४७ का आंदोलन जोरों पर था। महात्माजी ने आज़ादी तो दिलवा दी थी, पर अभी भी बहुत कुछ बाकी था। एक तरफ त्रासदी, दूसरी

और उत्साह — पर उन्हें पता था कि नदी के दो भाग में होने के लिए समुद्र दूर है, फिर भी आशा कायम थी।

कई स्वतंत्र सैनिकों ने अपनी जीवनयात्रा जेलों में ही समाप्त कर दी। जो बचे, उनकी गृहस्थ जीवन की डोर बिखरी नज़र आई। लेकिन इन सभी के त्याग और बलिदान रंग लाए।

वीर सावरकर को जब उनकी धर्मपत्नी से जेल में मिलने की अनुमति मिली, तब दोनों की आंखें ही संवाद का माध्यम बनीं। मुँह से कोई शब्द नहीं निकला, पर दृष्टि ने सब कुछ कह दिया। अंत में सावरकरजी ने अपनी पत्नी से कहा — "रो मत, आज हमारी गृहस्थी जलकर भस्म हो गई है, पर आने वाली पीढ़ियाँ सोने से घर सजाएँगी।"

यह दृश्य किसी तपस्या की पूर्णता जैसा था — जैसे गणगौर संकट से मुक्ति का क्षण हो। हर कोई व्यक्ति अपने स्वार्थ का त्याग कर स्वतंत्रता बलिदेवी पर स्वयं को समर्पित नहीं कर पाता, पर जिन्होंने किया, उनका जीवन युगों तक प्रेरणा बना रहेगा।

सरदार वल्लभभाई पटेल ने जब निजाम के विरुद्ध सैन्य कार्रवाई की, तो हैदराबाद का हिंदुस्थान में विलय हुआ। स्वतंत्रता सेनानियों के चेहरों पर वही दीप्तिमान मुस्कान थी — "जय हिन्द" के उद्घोष से आकाश गूंज उठा। हर ओर दीपावली जैसा उजाला, मिठाइयों की महक, और आंसुओं में भी आनंद का रस घुल गया। यह था भारत माता के सच्चे सपूतों का अमर उत्सव।

हैदराबाद मुक्ति संग्राम

उस समय अनंत राव जी भालेराव जी व चारठाणकर स्वतंत्र संग्राम में अग्रेसर रहे मराठा पत्रिका (पेपर) अनंत राव जी भालेराव जी ने शुरू किया था। उस पत्रिका में बहुत सारे हिस्सेदार थे (शेयर्स) उनमें से

हमारे पिताजी उस मराठवाड़ा पेपर के हिस्सेदार थे। सदा शिव काका चौदरी, गोविन्द भाई श्राप देशमुख (इन्हें राष्ट्रपति महादोय से नवादा गया एवं राष्ट्रपति पुरुष्कार दिया गया), सेलु शहर की नूतन विद्यालय पाठशाला की नीम भांगड़िया जी, अनंत राव जी भालेराव जी व चारठाणकर ने रखी इस विद्यालय के प्रथम प्रधान अध्यापक अनंत राव जी भालेराव जी थे, यह कार्य स्वामी श्री रामानंद तीर्थ के कहने पर हुआ था। स्वामी रामानंद तीर्थ ने १९३८/१९४२ एवं १५ अगस्त सं ४७ तक इन्होंने सबसे पहले अंग्रेजों से बगावत की। स्वामी जी इन सभी स्वतंत्र सेनानियों के प्रमुख थे। स्वामी जी का स्वतंत्रता का भाषण सुनने के लिए लाखों लोग इकट्ठा होते थे। सं १९४६ में अंग्रेजों ने फोड़ो और जोड़ो विभाजन की नीति अपनाई, अपनी सत्ता का दबदबा कायम रखने की कोशिश की। उन्होंने ने हिन्दुस्थान को विभाजित तो कर दिया, एक राष्ट्र हिन्दुस्थान के हिन्दुओं का सनातनी राष्ट्र का निर्माण किया, और दूसरा राष्ट्र जिन्ना का मुस्लिम राष्ट्र पाकिस्तान बनाया।

करीबन ६०० रियासतों को अंग्रेजों ने आजाद करके कहा कि तुम अपनी रियासत के राजा रहोगे। यह सभी रियासतें सरदार वल्लभ भाई पटेल ने बड़ी मुश्किल से इनका हिंदुस्तान में विलीनीकरण किया, पर इनमें से दो रियासतें, हैदराबाद और जम्मू-कश्मीर, भारत में आने को तैयार नहीं थीं। जम्मू-कश्मीर के राजा हिन्दू थे और प्रजा पूरी मुस्लिम थी, आखिरकार उन्हें वल्लभ भाई ने मनवाकर उनको हिन्दुस्थान में जोड़ दिया। दूसरा प्रांत, हैदराबाद स्टेट, भूभाग में व लोकसंख्या में भी बड़ा था। अंग्रेजों ने दो विभाजनों के बाद तीसरा विभाजन, हैदराबाद का, करना चाहा और हैदराबाद निज़ाम की मानसिकता यह थी कि वह स्वतंत्र होने के बाद पाकिस्तान में सम्मिलित हो जाए, दूसरा मुस्लिम राष्ट्र बनाने की तैयारी अंग्रेज लोग कर रहे थे। पर भला हो, सरदार वल्लभ भाई पटेल का वह किसी के दबाव में झुके नहीं (ब्रिटिश व अमेरिका)। उस समय पंडित नेहरू विदेशी दोहरे पर थे और उस समय के मिलिट्री के सर्वोच्च सेनापति चौधरी साहब थे। चौधरी साहब ने सरदार पटेल को बहुत ही अच्छी तरह से साथ दिया। हैदराबाद का अंतिम निज़ाम, सल्तनत मीर उस्मान अली खान, अत्यंत ही जातिवादी और घृणित व्यक्ति था, उस प्रांत को अंग्रेजों ने (हैदराबाद) स्वतंत्र राष्ट्र घोषित किया एवं स्वयं निज़ाम ने एक तरफा स्वतंत्र राष्ट्र घोषित कर दिया। पहले निज़ाम ने कहा था कि लोकशाही की तरह अपनी-अपनी घटना बनेगी, पर हुकुमशाह कभी भी लोकशाही का समर्थक नहीं हो सकता। यह वहाँ की हैदराबाद स्टेट कांग्रेस जान चुकी थी, स्वामीजी ने बड़े कड़े शब्दों में विरोध किया।

१. सभी धर्मियों को समान हक़ दिया जाये।

२. सभी को सत्ता में समानता भागीदार बनाया जाये।

३. नौकरियों में ८० प्रतिशत मुस्लिम थे, तो इसी के बराबर की नौकरियों का हिस्सा हिन्दुओं को मिला जाये।

४. शैक्षणिक संस्थाओं में उर्दू भाषा का आदान-प्रदान नहीं किया जाये।

स्वामीजी ने इन धारणाओं को निजाम के समक्ष रखते हुए निजामिया धारणाओं का कड़ा विरोध किया। स्वामीजी ने उसके बाद कड़ा विरोध करते हुए जनजागरूकता की शुरुआत की। हैदराबाद, भारत के मध्य में है, एक ही मांग और एक ही मुद्दे को भारत में सम्मिलित किया जाए। स्वामीजी की दो प्रकार की योजना थी, पहली तो सत्याग्रह करके अहिंसा मार्ग से, और दूसरी थी जो स्वतंत्र सेनानियों द्वारा हिंसा वाद से, निजामों के थानों पर, नाकों पर, उनके सरकारी दफ्तरों पर और उनके सेनिकों पर शस्त्रों सहित अचानक हमला किया जाए। क्योंकि यह करो या मारो की अंतिम लड़ाई थी। अब चुके तो सब हुतात्माओं का स्वतंत्र सेनानियों का भूमिगत सेनानियों का बलिदान व्यर्थ जाएगा और हम गुलामी से कभी भी आजाद नहीं हो पाएंगे।

उस समय निजामों ने भी चाल चली, उन्होंने हर गाँव में मुस्लिमों को इकट्ठा करके स्वयं सेवक बना दिए, उन्होंने हर तरह से हिन्दुओं को तकलीफ देना शुरू कर दिया। उनका उद्देश्य था कि स्वामीजी

की हैदराबाद स्टेट कांग्रेस का आंदोलन दबाया जा सके। इस सेना का युवा सरदार इत्तेहादुल मुसलमीन रहा था, जो उस तरह से मुस्लिमों को इकट्ठा करके हिन्दुओं को परेशान किया जा रहा था, इसका परिणाम उल्टा हुआ, हिन्दू संघटित होने लगे फिर मुस्लिम सरदार ने हिन्दुओं को मुस्लिम धर्म में सम्मिलित होने के लिए उनके मुंह में थूक कर धर्मांतरण करने के लिए बाध्य करता था। भोले भाले हिन्दू लोग यह समझ बैठते थे कि अपना धर्म बट चुका है, हमारे सामने किसी भी प्रकार की धर्मान्तर की सिवाय कोई मार्ग नहीं था। इसी तरह यह वाक्य मेरे पिताजी के सामने था (पिता को मेरे गाँव से बहिष्कृत किया गया) इस तरह हर गाँव में रजाकारों ने दहशत निर्माण कर दी गई। स्वामीजी का करो या मारो आंदोलन पूरी तरह से झोप दिया, किसी भी तरह यह आंदोलन ठमना नहीं चाहिए, या कमजोर न होने पाए, उन्होंने यहाँ पर निजामों की सीमाएं समाप्त होती थीं, वहीं पर उनकी तरफ कैम्प, स्वतंत्र सेनानियों का जमावड़ा, नवयुवाओं की भर्ती, स्वतंत्र आंदोलन को उग्र करने के लिए बनाईं यह पॉलिसी, हिट एंड रन की भाति काम करने लगी।

लड़वाए युवा शक्ति तैयार करने के बाद वे भी रढ़कारों को मु तोड़ जवाब दे रहे थे। इससे ग्रामीणों में एक नया उत्साह संचार होने लगा, फिर से आत्मविश्वास जागा। ग्रामीण भी सहकारी करने लगे। यह कोई मामूली बात नहीं थी, इतने बड़े हुकूमत लश्कर के सामने कुछ ही लोगों ने लड़ाई करना, निजाम के शस्त्रधारी सैनिक और इनके पास थोड़ा-बहुत लड़ाई का सामान (काठिया, कुल्हाड़ी)। फिर भी स्वतंत्र युवा सैनिक उनके सामने डटे रहे, उनका आत्मबल बहुत ही मजबूत था। यह आंदोलन स्वयं में स्वयंपूर्ण था, समु ने ही आंदोलन की दिशा तय की, इस आंदोलन के संस्थापक जनक स्वामी जी थे। सेलु शहर के लडवाए स्वतंत्र सैनिक चार ठान कर, भाले राव जी, भांगड़िया जी, व् मेघाजी भाई, पद्मावत गोविन्द जी, राम भाउ आढाव, ये सभी युवा कुछ समय के लिए जेल भोग कर आए थे। जिस प्रकार एक सेनिक को मिलिटरी में तैयार किया जाता है, वैसे ही ये सभी सैनिक थे। त्याग की ओत प्रोत भावना, स्वतंत्रता के लिए किसी भी हद तक जाने की तैयारी, इन महारतियों ने ठान रखी थी। इनका स्वतंत्रता के सिवाए कुछ दूसरा दिखाई नहीं पड़ता था (जैसे की अपनी गृहस्थी, परिवार, भाई, बहन, पत्नी)। सोता-जागता, एक ही जप।

अब सेनानियों का दूसरा स्वतंत्र चरण शुरू हुआ। दो वर्ष जेल में बिताने के पश्चात पश्चात्ताप में, अपनी घर की गरीबी को देखते हुए, सब कुछ बिखरा हुआ नजर आया। हैदराबाद मुक्त तो हो गया, पर इनकी समाज से लड़ाई करना अब भी बाकी था। उस समय जातिवादी छुआछुत का बड़ा प्रभाव था। घर में हर्ष उल्लास के साथ स्वागत हुआ, स्वतंत्र सेनानी अपनी कहानियाँ बताते की हमने जेलों में किस प्रकार यातनाएँ सहीं कुछ अपने मित्रों की, कुछ अपने परिवार के सामने बताई।

अब हमारे स्वतंत्र सेनानी पूज्य पिताजी युवा अवस्था में पार कर चुके थे, उम्र के २२ साल में सगाई और विवाह की दिक्कतें उन्हें ब्राह्मण होने की वजह से थीं, और पूरे गाँव में भी ब्राह्मणों का प्रभाव था। कुछ रूढ़िवादी ब्राह्मण पिताजी को हीनता की दृष्टि से देखते थे।

श्री संत ज्ञानेश्वर माऊली की कथा जिस प्रकार थी, वैसे ही सब कुछ हमारे पिताजी के साथ हो रहा था। गाँव में ग्राम सेरियाता सलूम्बर, जिला उदयपुर में पिताजी का गाँव में जाना हुआ, कुछ ही लोगों ने पिताजी का स्वागत किया था, विरोध करने वाले लोगों की भारमार थी। शुरुआती दौर में लोग पिताजी से दूर ही रहते थे, बहुत बोलचाल कम थी, इस प्रकार का कोई भावनिक संबंध नहीं था। किसी भी शुभ कार्य में पिताजी को आमंत्रित नहीं किया जाता था। परिवार पूरी तरह हताश और परेशान हो चुका था, परिवारवाले को समझ नहीं आ रहा था कि हुनर पिता ने जेल जाकर कौन-सी भूल की है, समाज पूरे हमारे साथ दुर्व्यवहार क्यों कर रहा है।

उन्होंने किस प्रकार से पानी एवं भोजन किया होगा, किन लोगों के साथ बैठकर और किन बर्तनों के साथ खाना खाया होगा, क्या वह बर्तन किसका होगा या उन्हीं का होगा, तात्पर्य यह है कि सभी अनुसूचित जातियों एवं वर्गों के साथ एक ही मटके का पानी पिया होगा, भोजन भी सभी के साथ किस

प्रकार किया होगा। इस सोच के कारण ब्राह्मणों ने बहिष्कृत कर दिया, ब्राह्मणों की बस्ती में हम पर बहुत सवार चढ़ गया। पिताजी हताश हो गए, मैंने इन सभी जानकारियों के लिए २ साल का कारावास भोगा (१९४२) और मिला भी तो क्या, समाज से तिरस्कार मिला।

फिर एक दिन पिताजी निराशा जनक स्थिति में बैठे थे, उस वक्त उनके चचेरे बड़े भाई लालजी दादा पद्मावत रात्रि के समय उनके घर पहुंच गए (वे श्रीगोड़ ब्राह्मण समाज के अध्यक्ष रहे चुके थे)। उन्हें हर घटना का ज्ञान हो चुका था, वे बड़े होशियार और आगम बुद्धि के व्यक्ति थे। अब उन्हें भी समाज में रहना था, इसलिए वे पिताजी से रात्रि को मिलने आते थे, रात्रि के समय उन दो भाईयों का वार्तालाप चालू हो चुका था, वे पिताजी को धाड़श बन्दया करते थे और कहते थे कि परिवर्तन यह जग का नियम है, आज नहीं तो कल लोगों को स्वतंत्रता के बारे में ज्ञान होगा, इसी लिए धीरज रखना, वे दबे पाओं फिर से ऐ घर को लौट आया करते थे।

पिताजी का स्वतंत्र संग्राम का लालजी दादा पर बड़ा प्रभाव पड़ा, उनमें से उत्पन्न हुए प्रश्न संख्या ४२ सभी बड़े नेता - राजाराव मोहन राय, महात्मा चंद्र सेखर आजाद, सुबाष चंद्र बोस, और वीर सावरकर के विचारों को उन्होंने ग्रहण किया।

लालजी दादा ने पिताजी से कहा, "तुमने बड़ी कठिनाइयों भरी राह चुनी है, पर किसी प्रकार की कोई चिंता नहीं। जब कोई अच्छा काम करेगा, रूढियों को छोड़कर तू यह होना ही है।" उन्होंने राजाराम मोहन राय का उद्धारण दिया, "सती प्रथा के विरोध करने पर उन्हें बड़ी ही सामाजिक समस्याओं का सामना करना पड़ा। इसी प्रकार अपने ग्रामवासियों, असिक्षित और अज्ञानी, हेतु वे गुलाम गिरी में बहुत साल तक रह चुके थे। उन्होंने स्वतंत्रता का सूरज देखा ही नहीं था, तो हम उनको भी दोषी कैसे कहें जिस व्यक्ति को स्वतंत्रता का स्वाद ही नहीं पता, उनसे तो क्या अपेक्षा करेगा? सब कुछ धीमे-धीमे बदल जाएगा। इसलिए उन पर गुस्सा करना कोई अहमियत नहीं रख पाता। पिताजी को लालजी दादा के ज्ञान के प्रभाव से बहुत कुछ सीखने मिला। अब पिताजी कोई बात करने आए या न आए, उसे खुद बात करने चले जाते थे, वे बिना पूछे ही अपनी आबीती सुनाया करते थे। पिताजी को पता था कि जब तक ये लोग पढ़े-लिखे नहीं होंगे, इन्हें स्वतंत्रता का अर्थ समझ में नहीं आएगा। खैर, चार-पाँच महीनों में थोड़ा-बहुत समाज के साथ तालमेल बैठना शुरू हो चला। समाज प्रबोधन का काम पिताजी ने शुरू किया, छोटे-बड़े उदाहरणों के तौर पर समाज को जागरूक अवस्था में लाना यही मकसद था, पर अभी भी समाज का सामाजिक रुख बदल नहीं रहा था, वही मटके का पानी, वही खाने-पीने का ढंग, यह सब समाज भूलने को तैयार नहीं था। इन्हें ब्राह्मणों की बिरादरी से अलग किया जाए यह बटा हुआ है (छूआ छूत)। नहीं जाने इन्होंने किस-किस समाज के समाजियों के साथ एक ही जरमान के गिलास से पानी पिया होगा। समय बीता गया, अब एक और तलवार सिर पर लटकती हुई, नहीं जाने कब गिरे, समाज समाज समाज, पिताजी पुनः बिखर गए।

सत्य मार्ग पर चलने वाले को राह दिखाने के लिए कोई न कोई बंदा मिल ही जाता है। पिताजी की लग्न की बात चली, सभी तरफ से ना पर धरातल पर एक सूर्य ऐसा भी था, महामानव पांच गांव के पुरोहित, स्वतंत्र विचार सरणी रखने वाला पुरोगामी सगतडा वासी, श्री पंडित उदय राम जी वाल्जी मेहता, श्री पुरोहित (नानाजी) उदय राम ने सभी समाज पुरोहितों के सामने यह जाहिर किया कि मेरी एक ही पुत्री जानकी (वालीबाई) उसका लग्न स्वतंत्र सेनानी मेघजी भाई से करवाने को तैयार हूँ। इस पुत्री का पूरा नाम हमारी माताजी श्री कुमारी वालीबाई उदयरामजी मेहता, ग्राम सगतडा, राजस्थान। सारे समाज में भूकंप सी लहार दौड़ गई, सभी जन विचार करने के लिए उतारू हो गए कि एक पड़ित ने की अपनी एक एकलौती बेटी का विवाह किसी बाते हुए युवा के साथ कर रहे हैं। उन सभी आवक हो गए नानाजी का अच्छा खासा वजन समाज पर था, समाज उन्हें संत की भाती मानता था। शुरू-शुरू में ब्राह्मणों का कार्य हवन, पूजन, पोथी माला जपना व्यवसायिक कार्यों में मिलने बंद हो गए, पर वे प्रग्रहाड़ आत्मा विश्वासी दृढ निश्चय रखने वाले साक्ष थे। नानाजी ने सभी समाज प्रमुखों को बात समझने के लिए बहुत

कोसिस की। हर एक व्यक्ति के साथ अगर ऐसा होता रहा तो हमें गुलामी से कभी भी मुक्ति मिलेगी। समाज प्रमुखों ने इस बात पर विचार करते हुए कहा, "पंडित जी, ये निर्णय ऐसे ही नहीं ले सकती। समाज का प्रमोधन का कार्य शुरू हो चला।

एक और नानाजी की सामाजिक प्रतिष्ठा, व्यक्तियों की नाना पर श्रद्धा और विश्वास अभी भी वातावरण गंभीर बना हुआ इधर हमारे स्वतंत्र सेनानी स्वजन चिंतित क्योंकि उनकी बाजार से नाना को भी प्रघाड़ित होना पड़ रहा है। एवं कल्ंकित होना पड़ रहा है, जैसे तैसे समय गुजरता गया।

विवाह की तिथि निकली गई, लग्न में नाना को पता था कि कोई जोर-शोर होने वाला नहीं है। नाना को यह खेद था कि मेरी एक ही पुत्री, एक समाज से विभक्त हुए युवा से कर रहा हूँ। उन्होंने आकर पिताजी के घर वालों को माँ और भाइयों से मिलने पहुँचे। मेरे पिताजी की माँ, सुंदरा बाई, कर्मठ कर्मयोगी महिला थीं, उन्हें अपने ईश्वर से ज्यादा अपने कर्म पर विश्वास रखने वाली महिला थीं। नाना ने आकर पिताजी के स्वजनों को धाड़श बंदया और कहा, " घबराइये मत, सब ठीक हो जाएगा। हमारे नाना पंडित जी ज्योतिष शास्त्र में और कुण्डली मिलान में माहिर थे।

वैसे ही हुआ, महाराष्ट्र और गुजरात में रोजगार के लिए गए हुए सभी युवाज़न विवाह आ पहुँचा, उन्हें स्वतंत्र का बोध होने लगा था, वहां के ग्रामीण मुखिया को ज्ञात हो गया कि अपना ही बेटा लग्न में शामिल होने के लिए आ रहा है।

सामाजिक बंधन का बिखरा हुआ तार फिर से जुड़ गया। एक-एक मणि जुड़ने से माला फिर से तैयार हो गई। सामाजिक बहिस्कृत से स्वतंत्र सेनानी बंधन मुक्त हो गए, सभी तरफ आनंद उत्सव का वातावरण, जीवन के सभी प्रकार के उतर-चढ़ाव कम आयु में पिताजी को सहन करने पड़े। यह सब बातें सुनने में बड़ी अच्छी लगती हैं, पर वैसा नहीं है जैसा उन्होंने सहा, यह सब उनकी कल्पना के परे हैं, वास्तविक उस समय की परिस्थिति रोंगटे खड़े करने वाली थी।

सहनाई और चौघड़ा मधुर धुंद से विवाह की शुरुआत हुई, बहुत समय के बाद घर में खुशियों का आगमन हुआ। दो परिवारों को स्नेह सम्बन्ध (मिलन) जो जैसा हो सके, नाना को मदद की गुजारिश कर रहे थे, नाना को किसी भी तरह से कठिनाई नहीं हुई क्योंकि पुरोहित होने की वजह से सभी जन नाना के वहाँ कार्य करने के लिए तत्पर रहते थे।

हमारी नानी, भूरी बाई, ने भी हमारे नाना से कंधे से कंधे मिलाते हुए और पूरा सहयोग देते हुए विवाह में भाग लिया। नानी पहले पहले दुखी तो थी, और वह विचार करने लगी कि मेरी एक पुत्री का विवाह उस युवा से कर रहे हैं, पर उन्हें नाना पर बड़ा ही भरोसा था। आखिरकार, नानी ने नाना से प्रश्न कर ही लिया कि यह विवाह सभी तरह से योग्य है या नहीं। उस समय नाना ने बड़े ही अलंकारित भाषा में और राजा जनक का उद्धारण देते हुए कहा कि राजा जनक एक चक्रवती राजा थे। उन्होंने अपनी पुत्री का विवाह जानकी (सीता) राजा दशरथ के यहां उनके पुत्र राम से की थी। वे दोनों ही चक्रवती राजा थे, पर राजा जनक को क्या पता था कि मेरी पुत्री दुखी हो जाएगी, वहां उसे १४ साल का वनवास हो जाएगा। नाना ने कहा कि किस्मत अपने हाथों में नहीं होती, यह विधि लिखित नियमों के अनुसार चलती है, तभी राजा जनक ने कहा, "हे सीता, तुम सोचती होगी कि मेरा विवाह कहां पर कर दिया।" उस समय सीता ने कहा, "पिताजी, आपका कोई दोष नहीं है, मुझे विधि-विधान के प्रारभ्ध कर्म भोगने पड़ेंगे।

सामाजिक स्तर पर दूरियाँ रखने वालों को अपनी गलतियों का अहसास हो रहा था। नाना जी ये सब कुछ बहुत्वकी से देख रहे थे, उनके पास जाकर नाना सत्संग दे रहे थे, और जो हुआ, वह अज्ञान के कारण हुआ।

स्वतंत्र सेनानी मेघजी भाई और उनके ससुराल पक्ष पर स्वतंत्रता की जीत हुई, सामाजिक बेडियों टूट गई, किसी एक या दो ज्ञानी व्यक्तियों का समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है, यह आज देखने को मिला।

ज्ञानी व्यक्ति यह समाज की आँखों की रौशनी की भाँति काम करता है, उसके बाद जिस प्रकार महात्मा गांधी के पीछे लाखों लोग चल पड़ते हैं (माँ भारतीय की आजादी के लिए) वैसे छोटे-छोटे कस्बों का गल स्वतंत्र संग्राम के लिए घर-द्वार छोड़ निकल पड़े। सवाल सिर्फ हैदराबाद निजामिया सल्तनत का ही नहीं था, यह देश की अखंडता के लिए धोखा हो सकता था।विवाह समारोह का समापन हुआ अब आगे बेटी का बहु के रूप में हमारी माँ लक्ष्मी का आगमन हुआ ससुराल पक्ष में, एक ससुर, एक जेठ, और देवर माता पिता, यह हमारे पिताजी का परिवार राजस्थान में। घर में गरीबी की स्थिति रोज सुबह से खेतीबाड़ी का कार्य, गाय मांसविशेषों को संभालने।

२२ विघा ज़मीन उपजाऊ थी, पर पानी की कमी की वजह से थोड़ी मक्का की फसल और गेहूं सरसों मिल पाता था। साल भर यह राशन सामग्री उदार निर्वाह के लिए साल भर का अनाज मिल जाता था, पर नैसर्गिक अकाल का रौद्ररूप धारण करता था। उस समय पूरी स्थिति बिगड़ जाती थी, खेतों में आम के वृक्ष, महुआ के वृक्ष से थोड़ी-बहुत आमदनी हो जाती थी। मेवाड़ क्षेत्र की जमीन थोड़ी-बहुत रेतीली थी (पीले रंग की) और वहां के किसान, पटेल, एवं आदिवासी भाई खेती पर ही निर्भर थे।

पर समय ने करवट ली, राजा जयसिंह ने जयसमंद झील का निर्माण किया (तीनों ओर से पहाड़ी और एक तरफ से दीवार बनाई गई)। पानी का बड़ा श्रोत उदयपुर जिले का यही था, पर उस समय झीलों के पानी निकालने के लिए और खेतीबाड़ी के लिए नहरें अभी तक नहीं बनी थीं। जैसे ही भारत को स्वतंत्रता मिली, नहरों का काम शुरू हुआ, पानी पीने के लिए और खेती के लिए व्यवस्था हो गई, पर अकाल ग्रस्त प्रदेश में वर्षा काफी कम हो रही थी, जिससे ग्रामीण युवाओं को प्रदेश (प्रांत) में कमाई के लिए बाहर जाना जरुरी था।

उनमें से हमारे पिताजी भी थे। महाराष्ट्र के लिए रवाना हुए यहाँ पर फिर से आने के बाद सभी बंधुओं ने होटल का व्यवसाय चुना क्योंकि इसमें भांडवल कम लगता था। मेहनत ही उनका भांडवल था, पर स्वतंत्रता का बोध इसी होटल से प्राप्त हुआ। यहाँ पर चर्चा करने के लिए स्वतंत्र सेनानियों का आगमन होता था। इन सभी का प्रभाव इस होटल के चलते युवाओं पर हुआ चर्चा सत्र यह था कि निजामियों के चंगुल से कैसे छुटकारा पाया जाए। बस एक ही ध्यान था - हैदराबाद का हिन्दुस्थान में सम्मिलित होना। पिताजी का १९४२ का सत्याग्रह अहिंसक आंदोलन में भाग लिया था, अब ये सं ४७ का दूसरा आंदोलन था। पहला आंदोलन भारत की स्वतंत्रता के लिए था (भारत छोड़ो आंदोलन)। दूसरा आंदोलन सं ४७ का हैदराबाद मुक्ति संग्राम का आंदोलन था। पुनः हमारे पिताजी के मित्र और सेनानियों से उक्कड़े जाना पाकर उग्र आंदोलन में कूद पड़े। इनमें से कोई आंदोलन करते सत्याग्रह अनशन पर भेटे थे, तो कोई सुभाष बाबू के विचारों वाले उग्र आंदोलन ने तेज रफ्तार पकड़ी, जेल भरो आंदोलन उनमें से सभी उग्र सेनानियों को प्रथम पकड़कर जेल में डाल दिया गया। (जेल प्रमाणपत्र के मुताबिक) हर्सुल जेल औरंगाबाद पर रखा गया। अब पिताजी का १९४२ का सत्याग्रह अहिंसक आंदोलन में भाग लिया था, अभी ये सं ४७ का दुसरा आंदोलन था पहला आंदोलन भारत की स्वतंत्रता के लिए था(भारत छोडो आंदोलन) दुसरा आंदोलन सं ४७ का हैदराबाद मुक्ति संग्राम का आंदोलन। पुनः हमारे पिताजी के मित्र और सेनानियों से उक्कड़े जाना पाकर उग्र आंदोलन में कूद पड़े। इनमें से कोई आंदोलन करते सत्याग्रह अनशन पर भेटे थे, तो कोई सुभाष बाबू के विचारों वाले उग्र आंदोलन ने तेज रफ्तार पकड़ी, जेल भरो आंदोलन। उनमें से हमारे पिताजी भी थे, उन्हें दो साल का सख्त कारावास की सजा मिली। (जेल प्रमाणपत्र के मुताबिक) हर्सुल जेल औरंगाबाद पर रखा गया। अब पिताजी कैदखाने में राजस्थान में स्वजन चिंतित की वो पिताजी का क्या हाल अपेक्षा करते होंगे हमारे माताजी कि परेशानी कि नाम ही नहीं ले रही थीं इधर समाज के सामाजिक तत्वों के ताने पिताजी के जेस्ट भ्राता (वालजी दादा)कपत्नी का आशीत निधन हो गया घर पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा क्योंकि उनके छोटे दो पुत्र थे। इनकी जिम्मेदारी मातृपक्ष में आ गई थी, इन दो छोटों बच्चों का पालन-पोषण, पढ़ाई और लिखाई माताजी ने ही संभाला। हमारे पिताजी के जेस्ट भ्राता (वालजी दादा) पूरी तरह से टूट पड़े थे। इधर माताजी का यह हाल हमारे दादी सुंदरा बाई माता को धाड़स बनाया करती थीं।

स्वतंत्र सेनानी मेघजी भाई की किसी प्रकार से कोई खबर नहीं थी, हर व्यक्ति अपनी कमाई के लिए प्रदेश जाता था। वह एक या दो साल वही पर काम करता था और कुछ पैसे कमाने के बाद घर वापस आता था। यातायात की सुविधा बहुत ही कम थी, सिर्फ पोस्ट ऑफिस के सहारे पत्र आठ से दस दिनों में पहुंच पता था। टेलीफोन की कोई सुविधा नहीं थी, सिर्फ तार (टेलीग्राम) मात्रा यही साधन था इसमें अच्छी या बुरी खबर देने के लिए।

पिताजी का कोई प्रकार का संदेश नहीं था, हमारी दादी सुंदरा बाई बड़ी चिंतित रहती थीं क्योंकि इस परिवार का पालन-पोषण किस प्रकार किया जाएगा, यह विचार करने के बाद दादी की आंखें नम हो जाती थीं। दादा भी इस दुनिया में नहीं रहे, घर की मुखिया हमारी दादी ही थीं।

कहीं से उड़ती हुई यह खबर दादी को मिली कि पिताजी को दो साल की कठीन सजा के तहत जेल हो चुकी हैं। दादी और माँ की परेशानी और भी बढ़ गई, अब आगे क्या होगा उस समय जेल जाना बहुत ही बड़ी बात थी। पिताजी के जेस्ट भाई (वालजी दादा) और छोटे भाई नारायण जी बड़े ही गंभीर रूप से चिंताजनक स्थिति में पहुंच गए, इन सबको यह पता नहीं था कि स्वतंत्र आंदोलन के लिए उन्हें जेल हुई है, ये स्वजन इतने हैरान हुए कि पिताजी ने ऐसा कौन-सा घिनोना काम किया या फिर डाका डाला, किस बाजार से जेल हुई। ६ महीने बीत गए, पिताजी की कोई खोज खबर नहीं मिली। दादी का इस्वर पर भरोसा करके घर की कमाई संभाली, वे कर्मठ कर्मयोगिनी महिला थीं। वे अपना दर्द किसी पर भी जाहिर नहीं करती थीं, समय धीरे-धीरे बदलता गया, पूरा परिवार का साथ खेती-बाड़ी में सहयोग करने लगा, थोड़ी बोहोत स्थिरता।

इतने में ही दूसरी और बुरी खबर आ धमकी भूआ ने कुए में छलांग लगा कर आत्महत्या कर दी। कुछ सामाजिक और कुछ मानसिक दबाव के कारण आत्महत्या की राह चुन ली। उनके तीन पुत्र और दो पुत्रियाँ पीछे छोड़ गए, उनकी भी परिस्थिति जैसे तैसे ही थी।

पिताजी जेल में थे, मेवाड़ सेरिया घर में सदस्यों की संख्या बढ़ गई थी। पूरा का पूरा कुटुम का कबीला छोटे-बड़े ३० लोगों का हो गया था। घर के बड़े-बड़े में गाय और मनुष्यों की भीड़ थी, पशुधन १५ से २० औसत तक था।

बुआ की बच्चियां बड़ी होने लगीं (कमला और राधा), शादी ब्याह की चिंता थी। फूफा के पास तो कुछ था ही नहीं, माँ की चिंता बढ़ गई। उन्होंने ही इन दो बच्चियों को बड़ा किया था, उन्हें लिखाया-पढ़ाया और साथ में जेयष्ठ के दो पुत्र जो भी बड़े हो चुके थे। माँ ने बालसंस्कार बहुत ही अच्छे दिए (वह बड़े होने के बाद शादी-ब्याह ज्येष्ठ ने ही किया था)। भूआ की बच्चियों का विवाह स्थल देखना शुरू हो गया। शादी की तिथि ठहराई गई। बहुत ही कम उम्र में मेवाड़ में बच्चियों की शादियां कर दी जाती हैं, इन बालियों को शादी-ब्याह का अर्थ ही नहीं पता था। पटेल जाति में नन्हे दूल्हा-दुल्हन को कंधे पर बैठा कर सात फेरे लिए जाते थे। गुड्डा-गुड़ी जैसा खेल, रस्में-रिवाज, और वैदिक पद्धति से लग्न रचाया जाता था। बच्चों के स्वयंवर में कोई खामी नहीं रखी गई, अब तक यह वर्णन ज्येष्ठ के पुत्र और भूआ की बच्चियों का था, अब हमारा परिवार। हमारे परिवार की शुरुवात ज्येष्ठ भ्राता नन्दलालजी का १७-१८ साल की उम्र में ही विवाह करवा दिया गया था, उन्हें भी हमारे माताजी और दादी की तरह बहुत ही संघर्ष करना पड़ा। पिताजी जब पद्मावत होटल चला रहे थे तभी उन्होंने रेलवे स्टेशन के पास एक जगह ले रखी थी। वहाँ पर हमारे पिताजी ने कृष्णा होटल नामक व्यवसाय शुरू किया, फिर से आर्थिक परिस्थिति पटरी से नीची उत्तरी जमीन व दुकान बनाने के लिए जितनी चाहिए थी उतनी पूंजी नहीं थी। सब कुछ उधारी में और ब्याज के पैसों से कर्ज बहुत बढ़ गया। पिताजी को पता था कि इतने बड़े परिवार का संघ चलाने के लिए जो कमाई चाहिए, वह नहीं होगी, तो कुटुम पुनः ग्राह्यता में चला जाएगा। इस कर्ज की वजह से हमारे पिताजी का मानसिक संतुलन बिगड़ गया और अब उनकी तबियत ठीक नहीं रहने लगी। होटल व्यवसाय की शुरुवात तो कर दी पर संभालेंगे कैसे, यह पूरी जिम्मेदारी मेरे बड़े भाई के ऊपर आ गई थी। कम उम्र में इतना बोझ व कुटुम चलना उनके बस की

बात नहीं थी, उनकी पढ़ाई छूट गई, उनको न तो व्यवहार का ज्ञान था न तो कभी होटल चलाया था। पिताजी मानसिक रोग से ग्रस्थ हो चुके थे, अब उन्हें घर पर राजसत्ता में रखा गया। उसी समय मानसिक रोगियों का कोई इलाज नहीं था, और वहाँ से उदयपुर का अस्पताल करीबन ८० किमी दूर था। पिताजी की मानसिकता इस कदर हावी हो गई थी कि अंग्रेजों की गुलामी हैदराबाद का मुक्ति संग्राम, इन्हीं दो बातों पर गौर रहता था, वे अंग्रेजों को और उनके साथीदारों को बड़ी-बड़ी गाली-गलोच किया करते थे। अंग्रेजों ने और निजामों ने इतने अत्याचार किए कि वे दिन के १८ घंटे कभी तो पूरी रात तक गाली-गलोच करते थे। गांव अंधश्रद्धा से भरा हुआ था, कोई कहता था कि इन पर जादू-टोना किया गया है या तो पान में कुछ मिलाया गया है। उन्होंने अपने को अपने कमरे में ही कैद कर रखा था, वे किसी दूसरो से बात चित नहीं करते थे, माँ और दादी जो मन पड़े सो अर्थात जप माला, सत्यनारायण का पूजन, व ब्राम्हणों से हवन करवाते थे।

भाई साहब को उनसे जो मन पड़े, सो करवाते थे। भाई साहब को होटल व्यवसाय करना ज़रूरी था, इतना बड़े कुंडबा (परिवार) का खर्च निकालना मामूली बात नहीं थी, इसी के साथ हर दो साल में एक शादी करवाना। दूसरे मेरे ज्येष्ठ भ्राता चम्पालाल जी का विवाह हुआ, वे भाई साहब से दो ही साल छोटे थे, उनपर भी पूरे परिवार का भार लेकर चलने की जिम्मेदारी आ पोहोची थी। वे बड़े होशियार और हिम्मत रखने वाले व्यक्ति थे, हमारे पिताजी उन्हीं की बात सुना करते थे। इसके बाद तीसरे भाई साहब दुर्गाशंकर जी का विवाह हुआ और साथ में राधा बहन का भी विवाह हो गया। यह चार लग्न बड़े गर्दिश में हुए तब पिताजी की मानसिक हालत ठीक नहीं थी। अब यहाँ मेरी बारी आई, रामजी पद्मावत में मेरे ननिहाल नाना-नानी के पास बड़ा हुआ था। मैं सातवीं कक्षा तक सगतडा गांव में पढ़ा था। मेरी शादी मेरी कक्षा में पढ़ने वाली (पुष्प हरिरामजी जोशी) से सगाई कर दी गई और १९८० में विवाह हुआ, उस समय परिवार में सब आल बेल था। पिताजी की तबियत भी ठीक हो चली थी। पूरा उत्साहित वातावरण के साथ मेरी शादी रची गई। मेरे घोड़े की सवारी एक बार सगतडा में हुई और दूसरी बार सेरिया में हुई, मैं दो बार घोड़े पर बैठने वाला पहला युवक था। दो गांवों में अलग घोड़ों की सवारी कराई गई। मेरी पत्नी सगाई होने के बाद तत्काल पाठशाला छोड़ दी क्योंकि हमारे मित्र गण व मेत्रिया चिढ़ाने लगे थे। अब बारी थी सबसे छोटे भाई लक्ष्मण की, उनकी भी शादी धूमधाम से हुई। खैर, पिताजी के मानसिक हालत करीबन सात साल तक खराब रही, इस समय मेरी दादी, मेरी माँ एवं बड़े भाई साहब किस प्रकार से काटे वह उन्हें ही पता था। बड़े ही कठिन समय, इन लोगों ने व्यतीत किया। पिताजी घर के बाहर दो ही समय पर निकलते थे, प्रात विधि और संध्या समय। पिताजी बाहर निकलने या कही शौचालय के लिए बाहर पड़े तो किसी की हिम्मत नहींथी कि पिताजी के सामने आ सके, उन्हें देखकर लोग डरते थे और झुक जाते थे। उनके मानसिक हालत ठीक नहीं होने की वजह से दादी एवं माँ के पास लोग शिकायत लेकर आते थे, करे तो क्या करे, वे बड़े ही ताकतवर इंसान थे। कोई कहता था कि इनके हाथ पैर तोड़ दो, ये चलने फिरने के काबिल नहीं रहे, जिसके जो समझ में आता था, उसी प्रकार वह कहता था। नानाजी उदयरामजी माँ को और दादी को ढाढ़स बंधा कर जाते थे कि वे रात्रि ज़रूर गुजर जाएगी और तुम सुबह का सूरज ज़रूर देखोगे। वह दिन उदय हो ही गया, हमारी महाराष्ट्र में १० एकड़ ज़मीन थी और कई मावेशियाँ थीं। पिताजी की मानसिक हालत दिन ब दिन बहुत ही खराब हो चली थी, उनका गला गाली गलोच करने के बाद खराब हो जाया करता था, वे इतनी जोर से बोलते थे कि वे खुद के आभास को ही भूल जाते थे। उसी समय हमारे बड़े भाई साहब व छोटे भाई ने सेलु में एक डॉक्टर से मुलाकात की, उन्होंने पूरी पिताजी की कहानी डॉक्टर को सुनाई। डॉक्टर ने कहा यह बड़े ही भयावह मानसिक रोग है, यह मानसिक रोग पूरी तरह से ठीक हो सकता है। यह इलाज जागतिक स्तर के डॉ व्यास मानसिक रोग तज्ञ जो जयपुर में थे, उदयपुर से जयपुर का सफर बारह घंटों का था। जयपुर बड़ी दूरी पर था और जयपुर भारत में सबसे महंगा शहर था। अब पिताजी को जयपुर ले जाने की तैयारी पैसों की समस्या तभी उन्होंने सेलु की १० एकड़ ज़मीन बेच कर इलाज करवाया।

पिताजी बड़े बलशाली व्यक्ति थे। उन्हें पकड़ा जाए तो कैसे पकड़े? सभी ग्रामवासी चिंतित थे (बिल्ली के गले में घंटी कौन बाँधे)। तभी ग्राम के दो युवकों ने रामजी भाई पबावत (मेहता) और भगवानजी भट्ट (जोशी) व राजपूत बटालियन के तीन ठाकुरों को पिताजी को शौचालय के लिए घर से बहार खेत खालियानों में जाना पड़ता था। जैसे ही वे वापस अपने घर में लौट रहे थे, उसी समय दरवाजे के पीछे इन पाँच व्यक्तियों ने उनको धर दबोचा और उन्हें सीधे गाड़ी में बैठा दिया। गाड़ी जयपुर के लिए रवाना हुई, पिताजी को यह पता चल गया था कि यह पुनः मुझे जेल में ले जा रहे हैं। इस गाड़ी में स्वयं पिताजी और पाँचों व्यक्तियों के सिवाय कोई दूसरा घर का व्यक्ति नहीं बैठा था। हमारे भाई साहब नन्दलालजी, लक्ष्मणजी व नंगजी परमानंदजी और हमारे मामाजी, यह सब बसों के द्वारा जयपुर पहुँचे क्योंकि पिताजी की गाड़ी सेरिया से सलूम्बर वाया उदयपुर होते हुए जयपुर जाना था। पिताजी ने जैसे ही केवड़ों की नाल आई (जंगल में एक गौ मुखी पानी का स्रोत), तभी उन्होंने लघु शंका करने की इच्छा जताई (पेशाब)। तब उन पाँचों व्यक्तियों ने कहा, "यह जरुरी भी है, इन्हें गाड़ी के नीचे उतारा जाये।" पिताजी के दोनों हाथ रस्सी से बंधे हुए थे, नीचे उतरते ही पिताजी ने उनसे कहा, "अरे पागलो, मेरा हाथ तो छोड़ो, मैं लघु शंका कैसे करूँगा।" लघु शंका के लिए बाहार आते ही आधा एक घंटा टहलने लगे और विचार चक्र उनका शुरू हुआ था। तभी उन्होंने उस वन में कुछ मजदूरों को देखा, वे उनके पास पहुँचे और विचार-विमर्श किया कि तुमको मजदूरी कौन और कैसे देता है, मुझे बताओ। क्या ये लोग किसी प्रकार से तुम्हें गुलामों की तरह यातना तो नहीं देते हैं। उनका भाषणचालू पाँचों व्यक्ति परेशान फिर भी रामजी भाई पबावत ने हिम्मत करके कहा कि चलो, दादा, आगे हमें और भी भाषण देने हैं, अपने पास समय कम है। पिताजी जाते वक्त उन मजदूरों से कहा, "काम बड़ी लगन से और ईमानदारी से करना, क्योंकि यह देश हमारा स्वतंत्र देश है।" समझा-बूझा कर उन्हें फिर से गाड़ी में बिठाया गया। जयपुर महानगर बड़ा ही महंगा शहर था। अस्पताल और खर्च के लिए पैसों की कमी उसी समय महाराष्ट्र में सेलू में १० एकड़ जमीन की बिक्री के माध्यम से वानिज्यिक लाभ हो चुका था। इलाज शुरू करवाया गया, जो बहुत ही मानसिक पुराणी बीमारी थी। डाक्टर ने कहा, "इसे तीन से चार महीनों तक अस्पताल में भर्ती करना होगा।" डॉ. व्यास, जाने-माने हिंदुस्तान के महान मानसिक रोगी तज्ञ थे। पिताजी की गाड़ी जयपुर तक पहुँच गई, जिसमें इंदिरा गाँधी ने सन् १९७७ में आणि-बाणि लगा रखा था। डॉ. व्यास सरकारी डॉक्टर होते हुए उनका निजी अस्पताल था, पर उस समय प्रत्येक सरकारी कर्मचारी पर कड़ी नजर रखी जाती थी, उनको अपने कार्यालय छोड़कर दूसरी जगह जाने की अनुमति नहीं थी। वे अपने दवाखाने में आने के लिए असमर्थ थे। डॉ. रात्रि के समय निजी अस्पताल में आया करते थे और वे सभी को सूचना करके चले जाते थे। किसी तरह एक पखवाड़ा गुजर गया, पिताजी के मानसिकता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा, आगे से उन्हें हर दिन बिजली के झटके देना शुरू करना पड़ा। यह बहुत पुरानी मानसिक होने की वजह से ज़रुरी था, पर उस समय उनकी हालत स्वजन देख ही नहीं पाते थे, क्योंकि बिजली का झटका इतना जोरों से होता था कि पांच कर्मचारी पकड़े रहते थे। मुँह में पट्टी रखी जाती थी, फिर झटका दिया जाताथा। वह इतनी तीव्रता से था कि पिताजी के मुँह से फेस बहार निकल आते थे और वे असहाय बेहोश हो जाते थे। किसी तरह, एक माह बीत गया, लेकिन डॉक्टर सिर्फ एक या दो व्यक्तियों को छोड़कर किसी को भी अस्पताल में रुकने की अनुमति नहीं देते थे। वहां पर दस व्यक्तियों का होटल में खाना औसत से ज्यादा था, तब हमारे नानाजी के भाई, नंगजी दादा ने कहा, "यह खर्च हमारी हालत से बाहर है।" नानाजी बहुत होशियार व्यक्ति थे, उन्होंने बाजार में जाकर स्टोव (लोहे का चूल्हा) और खाना बनाने की सामग्री (बेलन, पैट, लोटा, इत्यादि) लेकर आ गए। उस समय, सेरिया ग्राम के ग्राम सेवक, राधे श्यामजी जयपुर के निवासी थे। उन्होंने अपने परिचय से एक सराही (धर्मशाला) में एक कमरा दिलवाया। उस समय की विदारक परिस्थिति यह थी कि सभी लोग दिन में सिर्फ एक बार ही भोजन कर पाते थे। धर्मशाला में कमरा मिलने के बादखाना बनाने की व्यवस्था हो गई। नानाजी नंगजी दादा रसोई काफी अच्छी कर लेते थे। अस्पताल में पिताजी के साथ दो व्यक्ति रहते थे और धर्मशाला में तीन व्यक्ति रहते थे। खाने पीने की सुबह-शाम की व्यवस्था हो गई। अस्पताल में बहुत सारे मानसिक रोगी थे, और यह अस्पताल भारत का एकमात्र था, जहां सभी प्रांतों के लोग

मिलते थे। कोई किसी रोग से पीड़ित था, तो कोई कुछ जयपुर यह भारत में मासिक रोगियों का अंतिम पड़ाव था। उस समय पिताजी को संध्या समय डॉक्टर मिलने आते थे, बिजली के झटकों की प्रक्रिया पूरी करते थे। इस इलाज से पिताजी बहुत थक चुके थे, उनके मुँह से आवाज निकालनी ही बंद सी हो गई थी। पिताजी की तबियत दिन ब दिन खराब हो रही थी, सभी स्वजन बहुत चिंतित थे, एक माह बीत चुका था। तबियत में थोड़ा-सा बदलाव दिखने लगा और डॉक्टर ने दूसरी प्रयोग (थेरपी) का उपयोग करना शुरू कर दिया था। वे उनके पूरे शरीर से शर्करा निकाल देते थे और वे बेहोशी की हालत में चले जाते थे। फिर से ऊपर से शक्कर का पानी पिलाया जाता था। धीरे-धीरे असक्तता कम होने लगी और तबियत में सुधारना नजर आने लगा। 50 प्रतिशत तक यह प्रयोग सफल रहा और स्वजनों के चेहरे पर थोड़ी-बहुत खुशी झलकने लगी।

सात साल का यह भयानक महारोग का इलाज होना उस समय बहुत बड़ी बात थी। क्योंकि संसाधनों की कमी थी। फिर भी डॉक्टर व्यास ने सफलता पूर्वक इलाज करते समय उन्हें भी बड़ी खुशी होती थी। क्योंकि यह कार्य बड़ा ही कठिन था इस इलाज में इंसान का पुनर्जन्म हो जाता है। फिर वे ठीक हो चुके थे, पर बड़े कमजोर और थके-थके से लग रहे थे। हर्ष और उल्लास के साथ जयपुर से अपने गाँव सेरिया रवाना हो चुके थे। डॉक्टर ने कहा कि उन लोगों को जो आए वह किसी भी प्रकार से भूतकालीन बातें याद नहीं दिखाएं। इस समय कहावत के अनुसार "अंत भला तो सब भला" कहावत सही साबित हुई। इन सभी दादाओं ने, नैनों ने, मामाओं ने जो प्रयास किया उसकी सफलता मिली। गाँव सेरिया में आते ही बड़ी खुशी की लहर दौड़ गई। गाँव सेरिया में पिताजी के आगमन से गाँववालों में खुशी की लहर दौड़ गई और यह सोचने लगे कि जो बीमारी कभी ठीक नहीं होगी, ऐसी कल्पना करते थे। पर उन्हें इस दृश्य को देखकर बड़ी खुशी हुई, पिताजी को मिलने आने वाले लोगों का ताता लगने लगा। न कहने पर भी दूर-दूर से लोग आ रहे थे, उन सभी का यह प्रेम देखकर सभी गाँववासी गदगद हो उठते, आने वाले लोगों का ख्याल जल-पानी व्यवस्था गाँववासी ही कर रहे थे। फिर से दादी और माँ को खुशी का ठिकाना नहीं रहा, घर में खुशियाँ ही खुशियाँ जैसे कई दिनों के बाद।

लोहपतगामिनी (रेलवे) लोह मार्ग पर दौड़ पड़ी, पिताजी स्वस्थ होकर घर पहुंचे। डॉक्टर ने उन्हें छह महीने तक आराम करने की सलाह दी और किसी से मिलने पर रोक लगाई। जैसे-तैसे, तीन महीने की अवधि बीत चुकी, पिताजी ने घर की आर्थिक परिस्थिति देखी। उनका पुनः कुटुंब वसल्या जाग उठा, पूरा परिवार एक ही व्यवसाय पर निर्भर था। पिताजी ने सोचा कि अब उनके पास मानव शक्ति है तो क्यों न किसी और होटल की शुरुआत की जाए। जय पिताजी ने फिर से आर्थिक कमाई संभाल ली। हमारी दादी और माँ, हमारे सभी भाई लोग ने उन्हें व्यवसाय करने के लिए ना कहा, पर पिताजी किसी भी व्यक्ति का मानते नहीं थे। वे जिद्दी स्वभाव के थे। वे महाराष्ट्र की ओर चल पड़े और उनका एक व्यवसाय सेलु में "कृष्णा होटल" और "पद्मावत होटल" शुरू हुआ। वह उद्योग हमारे भाईसाहब नंदलाल जी ("कृष्णा होटल" संभाल रहे थे) और दूसरे "पद्मावत होटल" को उनके काका के पुत्र लक्ष्मण नारायण जी ("पद्मावत" संभाल रहे थे) संभाल रहे थे। उन्होंने सेलु छोड़कर दूसरे सेवा उद्योग में काम करने का ठान लिया और सीधे ही पंचानंद प्रभु महादेव की नगरी आखाड़ा बालपुर पहुंच गए (त.कलमनूरी, जिला हिंगोली)। अब उद्योग की तैयारी उन्होंने अपने ही रिश्तेदार भातीजे भागीदारी की भतीजा (मोतीरामजी देवरामजी पद्मावत) वे स्वयं में स्वयं पूर्ण थे। वे बाहरी ख्याली के व्यक्ति थे और किसी के बंदन में रहना नहीं कहते थे। उन्हें माँ शारदा देवी पर आरूढ़ थी और वे हजार जवाबी व्यक्ति थे। उन्होंने अपने बचपन में ही स्वयं का एक रुपया लेकर भारत भ्रमण को चले गए और कुछ महीनों के लिए आगरा के कैदखाने में रखा गया। पिताजी कहा करते थे, "मैं मानसिक रोग से पागल और मेरे पार्टनर आवारा थे। दोनों ही राशियों वाले व्यक्ति थे और बहुत अद्वितीय जोड़ी बनी हमारे पिताजी और पार्टनर करीबन १२ वर्ष तक व्यवसाय संभाला। अब उन्होंने पूर्ण रूप से गृहस्थाश्रम निभाया, उनके एक पुत्र मुरली मोतीरामजी पद्मावत और दो पुत्रियों का विवाह करने के बाद उन्हें वानप्रस्थ जाने की गुजारिश की गई, और उन्हें वही मार्ग पर चल पड़ा। उनके ५५ वर्ष की आयु में वे संन्यासी हो गए,

प्रघाड़ बुद्धिशाली के धनी होने के कारण उन्होंने तपस्या की और सिद्धि प्राप्त की। उन्होंने अपनी पंच इन्द्रियों पर विजय पाकर एक उन्होंने जल समाधि, अग्नि समाधि और भू समाधि - इन तीनों पर उन्होंने अपनी पकड़ जमाई, यह सबसुनाने में सरल और साधा लगता हो पर यह ऐसा है नहीं। बड़ी कठिनाइयों के बाद, करीबन १५ वर्षों के बाद, यह योग विधि उन्हें प्राप्त हुई। इस प्रकार के व्यक्ति (महात्मा), पंच कोसी में अभी तक पैदा नहीं हुआ, उनका बताया हुआ आद्यात्मिक ज्ञान सभी ग्रामीणों को मार्ग दर्शित करता रहा। होटल व्यवसाय में बड़ी सफलता मिली और दोनों परिवार का गुजारा अच्छी तरह से हो गया। दोनों ही पार्टनर ने इस व्यवसाय को त्याग दिया उस समय मोतीराम जी के पुत्र मुरलीधर की १४ साल की आयु थी और मेरी (रामु पद्मावत) की आयु ३० साल की होगी सन् १९८५ में हमने होटल संभालना शुरू कर दिया। मुझे भी इस व्यवसाय का कोई ज्ञान नहीं था।

हमारे परिवार में भूआ के लड़के और दादाजी के लड़के, और स्वयं के ५ पुत्र बड़े हो चले थे। इन सबको काम-काज पर लगाना बहुत ही जरुरी था। उन्होंने हमारे माँ की भूआ के लड़को को अपने पास रखते हुए उनको भी होटल व्यवसाय में भागीदार किया। अखाडा बालपुर की गायत्री होटल करने के बाद, वे दूसरा व्यवसाय करने का निर्णय लिया। अब वे जा पहुचे विधर्भ की नगरी लोनार। अब माँ की भूआ के लड़के श्री हरिरामजी और मोतीराम जी को होटल के व्यवसाय में खड़े होने की कोशिश की। वे दोनों ही गरीबी अवस्था में पिताजी के पास ही नौकरी करते थे। उस समय रिश्तेदार एक दूसरे की सहायता करते थे और उनको गरीबी से बाहर निकालना कहते थे। सभी बच्चे ने दसवीं कक्षा के ऊपर पढ़ाई नहीं की, मनुष्य बल तो बहुत ही था, पर भांडवल की कमाई थी। पिताजी के हाथों स्थापित किए गए व्यवसाय पद्मावत होटल, कृष्णा होटल और गायत्री - तीनों व्यवसाय स्थायी से चालू थे। अब उन्होंने राम की नगरी लोनार में पैर रखा, वहां पर १४ वर्ष का वनवास रामजी को हुआ था। तब उन्होंने कुछ समय के लिए लोनार नगरी में वनवास बिताया। उसकी कुछ निशानियां इस प्रकार हैं: वहां पर एक पानी का जलधारा का अखंड स्रोत "रामधार" नामक प्रसिद्ध है। उसी प्रकार, "लक्ष्मण जलधारा" और "सीता नहानी" - तीनों वहां पर कुछ समय तक मुकाम किया गया। वहां पर उल्कापात से निर्मित (चारों और से पहाड़ियों से गिरा एक खरे पानी की झील पानी इतनाखारा है कि कोई जीव-जंतु उसमें नहीं रहता। अब निसर्ग का चमत्कार देखिए, उस झील से करीब एक या दो मीटर के फासले पर छोटी सी बावड़ी है। इस बावड़ी का पानी बहुत मीठा है। उस झील और जंगलों में करीबन १४ मंदिर स्थित हैं, सभी लिंगधारी हैं। वह झील इतनी रम्य और सुंदर है कि विश्व कर्मा और काम देव ने स्वयं अपने हाथों से रचना की होगी। लोनार के विहंग जंगल और झील इतनी सुंदर हैं कि अपनी नजर उस पर से हट ही नहीं पाती। पति उस दृश्य का क्या वर्णन करें, जैसे की हम वर्षा वनों के जंगलों में फिर रहे हैं। उस गाँव की विशेषता यह है कि गाँव में पीने के पानी का अकाल हमेशा रहता है और रामधारा का जल स्रोत मीठे पानी का कई सदियों से बह रहा है। उस पानी की धारा अगर हम उसके नीचे बैठे तो हमारे पूरे शरीर का बोझ एक दम से हल्का हो जाएगा (धारा इतनी जोर से गिरती है)। उस मीठे पानी की बावड़ी के पास माँ देवी का मंदिर है, नवरात्रि महोत्सव में २४ घंटे दूसरे गाँव से आए हुए भक्त गण वन में से रास्ता निकलते हुए दर्शन के लिए आते हैं। उस जंगल में कई प्रकार के हिंसक जंगली जानवर विहार करते हैं। दिन में भी आने जाने से डर भी लगता है। उन जंगलों में ग्रामीणों की खेती भी है। उस झील की मिट्टी चन्द्रमा के गृह से मिलती जुलती है। यह वैज्ञानिकों का कहना है कि वहां पर अभी भी वैज्ञानिकों का संशोधन कार्य शुरू है। वह रामायण काल के होते हुए भी न रामधार की पानी की मात्रा भड़ी है न घाटी है। इस नगर में बहुत ही पुराना जैन मंदिर है, और वहां पर लेटे हुए हनुमान जी करीबन ७ फुट के हैं। अभी भी ग्रामवासी जाग्रत देव स्थान मानते हुए उनकी पूजा अर्चना करते हैं। यह मंदिर पुरातन होने के कारण इनकी कारीगिरी देखने लायकबनती है कि इस नगर में परदेशी मेहमानों का पर्यटन के लिए आवागमन चालू रहता था। यह नगर प्रसिद्धि ज्योति में आने की वजह से बहुत सारे स्वदेशी लोग विद्यार्थियों यहाँ पर ज्ञान के लिए पहुंचते हैं। इस वजह से शासन को कमाई मिलने लगी। अब आगे भगवान राम, लक्ष्मण, और सीता ने लवणा सुर नामक दैत्य का वध करने के बाद वह से चल पड़े। इस नगरी का विश्लेषण करना जरुरी है। लवणासुर, राक्षस के नाम से इस नगर का नाम लोनार

पड़ा। अब पिताजी ने लोनार गाँव में उपहार गृह के लिए जगह ढूँढ़ना शुरू किया। उन्हें वहां पर एक चौपुली पर जगह पसंद आई, वहां पर माँ की भुआ के लड़कों के लिए होटल शुरू किया गया, जिसमें वे साम्प्रमाणिक भागीदार थे। होटल का नाम "कामधेनु" रखा गया था। होटल का व्यवसाय धीरे-धीरे अच्छी पकड़ पकड़ ली, और वह होटल हरिरामजी और मेघजी भाई के भागीदारी में था। जिसके बाद उन्होंने बस स्थानक के सामने नए "कामधेनु" नामक होटल की शुरुआत की। वहां पर मोतीरामजी भागीदार थे। इन सभी व्यवसायों को शुरु करने के बाद हमारे पिताजी की अत्यंत उत्साहित वृत्ति फिर से मानसिक रोग में बदल गई। फिर से वे मानसिक रोग ग्रस्त हो गए, और उन्होंने जो भी व्यवसाय शुरु किए वे कभी असफल नहीं हुए। उनको सभी स्वजनों ने न करने के पश्चात भी वे व्यवसाय शुरु करते रहे। पिताजी के हाथों की वह पाँचवी दुकान थी। पिताजी को अत्यंत उत्साहित होने की मानसिक बीमारी थी, और वे कोई भी कार्य हाथ में लेते थे तो उससे पूरा किये बगैर चैन से बहुत बैठते थे। उनको इन व्यवसायों से दूर करते हुए फिर से राजस्थान रवाना कर दिया गया। अब वहाँ उदयपुर में भी इस मानसिक रोग का इलाज होने लगा। वहाँ पर महाराणा भोपाल सिंह शासकीय अस्पताल था, और वहां पर उनका इलाज शुरु किया गया। वह बीमारी अभी उनपर उतनी हावी नहीं थी, गोलियों और दवाइयों से उनकी बीमारी ठीक हो गई। धीरे-धीरे बीमारी कट सी गई, जिसके बाद पिताजी को कभी व्यवसायों की और नहीं आने दिया गया। उन्हें राजस्थान (मेवाड़) में खेती करने के लिए कह दिया गया, जिसके बाद महाराष्ट्र में नहीं आने दिया गया। स्वतंत्र सेनानी मेघजी भाई पुनः एक बार स्वस्थ होकर काम पर लग गए, अब उन्होंने व्यवसाइक जिंदगी त्याग कर समर्पित भाव से समाज सेवा करना लगे। पिताजी ने जून में इतने उतारचढ़ाव ढक चुके थे कि कोई भी ग्रामवासी फिकरमंद, कष्टकारी, दुखी व्यक्ति आता था। वह बात पिताजी के सामने रखता था, तभी पिताजी झट से अपनी राम कहानी उससे सुनाते। सामने वाला शख्स यह सोचने लगता कि दादा के सामने अपनी कोई समस्या ही नहीं है, वह व्यक्ति खुशी-खुशी घर को चले जाता। पिताजी एक लड़वाई किस्म के व्यक्ति थे, प्रखर चेहरों पर तेज आत्मविश्वास उनके विश्वास से झलकता था। पहले-पहल उन्हें राज्य सरकार से कोई मदद नहीं मिली, बाद में महाराष्ट्र सरकार ने स्वतंत्र सेनानियों का सज्ञान लेते हुए उन्हें ५०० रुपये हर माह दिए जाते थे।

कई स्वतंत्र सेनानियों की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी, कई स्वतंत्र सेनानियों ने यह मदद लेना नहीं चाहते थे, पर उम्र का तगाड़ा उजड़ी हुई गृहस्थी एवं सामाजिक अस्थिरता (स्वजनों से) इसलिए मजबूरन सन्मानजनक पेंशन लेने के लिए वे तैयार हो गए। उन्होंने कोई बड़े फल या अपने स्वार्थ के लिए देश सेवा नहीं की थी, यह के प्रकार का स्वतंत्र जोश था। समय बीतता गया, ग्रामीण गाँव के लोग कहते थे कि यह किस प्रकार के स्वतंत्र सेनानी है, यह तो कभी बॉर्डर पर लड़ने के लिए गए नहीं, पर लोगों को धीरे-धीरे पता चलने लगा कि उन्होंने देश को स्वतंत्र करने के लिए लड़ाई लड़ी। आगे लोग भी इन्हें सन्मान की दृष्टि से देखने लगे और फक्र करने लगे कि हमारे गाँव में एक ऐसा स्वतंत्रसेनानी ने जन्म लिया। उन्हें १५ अगस्त व २६ जनवरी का झंडा वंदन इनसे ही करवाया करते थे। स्वतंत्र सेनानियों ने स्वर्ण दिन फिर लौट आए, पिताजी को ज्यादातर उनके पैतृक गाँव सेरिया में ही रहने को कहा गया। वह गाँव बड़े सुंदर था, उस समय उस गाँव के घरों की संख्या ८० या ९० तक ही सीमित थी। उस गाँव में सभी प्रकार के लोग रहते थे, जैसे कि जैन, आदिवासी, लोहार, चर्मकार, तेली और ब्राह्मण, पूरी तरह से मिली जुली सरकार बड़ा खुशहाल गाँव था। गाँव छोटा होने की वजह से सम्बन्ध बड़े ही दृढ़ थे। इस गाँव का विशेषता यह थी कि यहाँ पर दो प्राचीन मंदिर थे, एक महाकाल का और दूसरा ग्वालेश्वर महादेव का। कहा जाता है कि श्री गौड़ यह ब्राह्मण समाज श्रीनगर के कश्मीर मूल निवासी थे। श्रीनगर के श्रीपुर ब्राह्मण बाद में वहाँ से कुछ विघटन करके शक्तियों व सामाजिक समस्याओं के कारण उन्हें वहाँ से जाना पड़ा। वे सभी जाकर मध्य प्रदेश, उज्जैन नगरी में रहने लगे और वहां पर पूजा-पाठ का काम ठीक ढंग से चल ही रहा था। मेवाड़ के महाराणा ने कुछ ब्राह्मणों को अपने यहां पूजा-पाठ के लिए बुलवाया। कुछ ब्राह्मणों को दान में ज़मीन ज़यादा देकर वहां पर स्थाई कर दिया, मेवाड़ में ब्राह्मण की कमी थी। एक और इतिहासकार यह भी कहते हैं कि मेवाड़ उदयपुर क्षेत्र पिछड़ी जनजातियों का

प्रदेश था, वहां पर उन्हें शिक्षित करने के लिए ब्राह्मणों को बसाया गया। जैसा कि पुरातात्वज्ञों का कहना था कि डाकू और चोरों का बड़ा भय था, इसलिए मेवाड़ के महाराजा ने इन्हें दूसरे गाँव के सर्कषण के लिए यहाँ बुलाया था। उन राजपूतों को वह के ग्रामवासी और अनेक उन्हें राजा की सन्मान दिया करते थे।

हमारे ग्राम की कहानी एक शिवालय पहाड़ पर स्थित थी। उबड़ खाबड़ पथ से पार करने के लिए समय बहुतलगता था पर पहाड़ के ऊपर जाने के बाद वहां का नजारा स्वर्ग लोक सा था। इस पहाड़ के ऊपर से ग्राम सेरिया का घर नगर नजर आता था। वहां से पाँच गाँव पूरी तरह से दिखते थे - तोड़ा, थड़ा, डाल, बस्सी, और सलूंबर, और चारों ओर से हरा-भरा जंगल और पर्वत रोहियों के उत्तमस्थान मङ्सिर का खास विशिष्टतः ग्वालेश्वर मंदिर था। यह एक आदिवासी ग्वाल अपनी धेनुओं को पहाड़ पर रोजाना चराने आता था। उनमें से एक कपिला धेनु एक ही जगह पर खड़ी रहकर अपना दूध अभिषेक करती थी। तभी चरवाह ने जाकर गाँव में इस बात को बताया। गाँव के लोग इकठ्ठे होकर पहाड़ पर गए और जहाँ कपिला अपने स्तनों से दूधाभिषेक करती थी, कुछ उत्साही युवा वहाँ पर खोदना शुरू कर दिया। करीबन तीन से पाँच फीट गहराई में उन्हें एक छोटा सा पत्थर मिला, उस पर गाय का पैर छापा हुआ मिला। ग्रामीणों ने वहाँ पर पूजा-अभिषेक किया, एक चरवाह और धेनु की वजह से वहाँ पर मंदिर बना इसलिए उस मंदिर का नाम ग्वालेश्वर पड़ा। इधर महाकालेश्वर महादेव मंदिर उज्जैन नगर के याद में पाँच गाँव के ब्राह्मणों ने मिलकर बनाया यह दो शिवालय बड़े प्राचीन हैं। ग्वालेश्वर मंदिर के पहाड़ के ऊपर इतने बड़े पत्थर कैसे ले गए होंगे, यह आश्चर्यकारक है। यहाँ महाकाल की पिण्ड है, वह उज्जैन के महाकाल के समान रचना किया गया है।

उसी मंदिर के पास छोटा सा तालाब स्थित है। राजस्थान का यह भूभाग गुजरात और मध्य प्रदेश से सटा हुआ है, इसलिए यहाँ की संस्कृति, भाषाएँ गुजरातियों से मिलती जुलती हैं। वहाँ से गुजरात का बॉर्डर ८० किमी है। बीच में ऋषभदेव (केसरियाजी) नमक गाँव है। वहाँ पर जैनों के प्रथम कीर्तनकार ऋषभदेव भगवान का मंदिर है। यह भारतवर्ष में जैनों का सबसे बड़ा तीर्थ क्षेत्र है। हमारे गाँव से लगभग १५ किमी की दूरी पर महाराणा प्रताप की राजधानी चावंड स्थित है। वहाँ पर एक तालाब में महाराणा प्रताप की समाधि स्थित है। वहाँ पर महाराणा प्रताप ने भूखे-प्यासे रहते हुए अकबर से अंतिम लड़ाई लड़ी। यह समाधि केजड़ नमक तालाब में स्थित है। शत शत कोटि प्रणाम, वहाँ से गुजरने वाले मुसाफिर बस अथवा किसी भी साधन से जाने वाले समाधि को नमन किए बिना नहीं जाते। ह्रदय में एक प्रकार का जोश और स्वाभिमान जागता है। हिन्दुस्थान में हजारों राजा-महाराजाओं की विरासत होकर गई पर इन दो राजाओं का नाम ह्रदय से लिया जाता है (महाराणा प्रताप और मराठा राजा राजे शिवाजी महाराज)। इन दो राजाओं का वंशज एक ही था - सिशोदिया वंशज। गाँव के एक और केजड़ तालाब में स्थित महाराणा की समाधि और दूसरी और गाँव से दस से बारह किमी पर स्थित राजा जयसिंघ द्वारा बनवाई गई जयसमंद झील (सरोवर) बड़ा ही सुंदर स्थल है, चारों ओर पहाड़ियों में घिरा हुआ। कहा जाता है कि इस झील में ९ नदियों का पानी और ९९ नालों का पानी आता है। मीठे पानी का बाराती स्रोत वहाँ से पिने का पानी उदयपुर और छोटे-बड़े गाँवों में पहुँचता है और खेती-बाड़ी के लिए भी काम आता है। जयसमंद झील बड़ा ही पर्यटक स्थल होने की वजह से हर सुविधा उपलब्ध है। झील के बीच में एकटापू पर पाँच सितारा होटल भी है। वहाँ का नजारा जैसे कि (हाडीरानी का महल और रूठीरानी का महल) कई सदियों से चुने से बनाए गए इन महलों की रचना आज भी वैसी ही है, न तो वे खंडहर हुए हैं और न ही रूप लुप्त हुआ है। महाराणा जयसिंह की दो पत्नियाँ थीं, उनमें से हाड़ीरानी का महल झील के पास ही बनाया गया था, जो राजा की प्रिय पत्नी थी।

"दूसरी महारानी ने राजा से रूठ कर चली गई थी और बड़ी दूर के पहाड़ पर एक महल की रचना की गई। इन दो महलों का विशेषता यह है कि इनकी रचना को कैसे विश्वकर्मा ने की होगी। इतनी ऊँची पहाड़ियों पर उन लोगों ने पत्थरों को कैसे ढोए होंगे, यह आश्चर्य है। आज भी हमें उस महल पर चढ़ने

के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ती है, जिस समय इतनी आधुनिकता नहीं होती थी। महारानियों के लिए सभी सुविधाएं महल में कराई गईं, यह भी उस समय की बात है। उच्च पहाड़ पर स्थित महल, 'रूठी रानी' के नाम से मशहूर है।"

"इस झील को और से बांधने के लिए एक बंजारे के पास करीबन नवलाख गधे थे। उसने इस बांधकाम को यहाँ से पाल के ऊपर से बहा दिया है, और वह दीवार अब भी वैसी ही है जैसी पहले थी। कभी भी यह बांध अतिवृष्टि से भरने के बाद भी फूटा नहीं है। इस बंजारे का नाम 'नवलक्खा बंजारा' था। इतिहासकार बड़े व्यक्तियों और कारागीरों का उल्लेख करते हैं, पर गरीब श्रमिकों का जो कि अपने ह्रदय से काम करता है, उसका कभी उल्लेख नहीं करते। इस क्षेत्र की ऐतिहासिक धरोहर जैसे की महाराणा की समाधि, जयसमंद झील, और जैनों के देवाधिदेव ऋषभदेव इनका हमने वर्णन कर चुके हैं। अब स्वतंत्र सेनानी के पैतृक गाँव सेरिया ग्राम में एक बहुत बड़ी हस्ती थी, महान तपस्वी गुरुमाता तुलसा माता। इनकी बातें सेरिया ग्राम सहित सभी गाँवों में प्रसिद्ध थीं। उनकी अपने बाल्य अवस्था में ही शादी हो चुकी थीं, और करीबन ९ या १० साल की रही होगी जब वह अदकालिआ नामक गाँव में ब्याही गई थीं। यह एक ब्राह्मणों का छोटा सा कस्बा था।"

"माँ तुलसीया का दुर्देव यह कि वह बाल्य अवस्था ही नहीं विधवा हो गईं थीं, न तो उन्हें शादी का ज्ञान था न ही विधवा के बचपन में हर प्रकार से ताने-बाने किए गए थे। उस समय राजस्थान में सती प्रथा थी, जिसमें महिलाएं अपने पति के साथ स्वयं को जीते-जी अग्नि में हवाले कर देती थीं। राजस्थान में सती प्रथा में अग्रसर था। तुलसिया माँ की छोटी उम्र के कारण उन्हें यह सजा नहीं मिली। दिन ब दिन वह बड़ी हो रही थीं, तभी उन्हें थोड़ा-थोड़ा सा शादी-ब्याह का ज्ञान हुआ और उन्हें भी श्रृंगार करने का मन हुआ। तभी उन्होंने हाथों में चूड़ियाँ पहन लीं और घर से बाहर निकल पड़ीं। महिलाएं उन्हें देखकर ताने मारने लगीं कि तुम विधवा हो, काले वस्त्र धारण करो, और कहीं आया-जाया मत करो, तुम अपशकुनी श्रेणी की महिलाओं में हो। तब यह बात माँ तुलसिया को समझ नहीं आ रही थी कि यह सब लोग मुझे ऐसे क्यों कह रहे हैं। उनकी सहेलियां एकदम सा व्यवहार बदल गईं, वे माँ तुलसिया से दूरी बनाए रखतीं थीं। माँ तुलसिया आचरज में अवस्था में थीं, वे बाल्य अवस्था से किशोर अवस्था में प्राध्यापन कर रही थीं, उन्होंने अपनी माँ से यह सब कहा कि यह बर्ताव मेरे साथ क्यों हो रहा है, बड़ी बूढ़ी महिलाएं मुझे ताना क्यों देती हैं। उस समय माँ और दादी ने समझा-समझाकर उसे राजी कर दिया, पर कब तक माँ के आंसू थमने के नाम ही नहीं ले रही थीं, बड़ा विचित्र संयोग एक माँ के बच्चे के प्रति ममता और स्नेह, दूसरी ओर विधवा संतान यह एक प्रकार का जैसे माँ को दिया गया श्राप ही था। ईश्वर ने जैसे-तैसे उसे युवा अवस्था में पहुंचाया, तभी वह माँ से कहने लगी कि मेरी भी शादी करवा दो, यह माँ के आत्मा पर बड़े से पत्थर का आघात था।"

"अब बच्ची से क्या कहें, यह माँ और दादी सामने प्रश्न पर उनकी दादी बड़ी होशियार थीं। उन्होंने हंसते हंसते सहज भाव से कह दिया कि, 'तेरे पति तो वृन्दावन में रहते हैं, उनका नाम कृष्ण है। बस, यह कहानी कुछ प्रकार से मीरा बाई से मिलती-जुलती है, पर यह माँ तुलसिया की घटना सत्यात्मक है।' बस, इसके बाद हर बार माँ तुलसिया को समझ में आ गया कि, 'मैं विधवा हो चुकी हूं।' फिर गुरु माँ गम सुम सी रहने लगीं, लोगों के ताने बाने सुनतीं। समाज, जैसे कि उनका दुश्मन बन गया, कोई भी अच्छी दृष्टि से नहीं देखता था, 'यह बड़ी पापिनी है, इससे इस गाँव में रहने का कोई अधिकार नहीं है। अगर इसकी छाया हमारे बच्चों पर गिरी तो वे भी विधवा हो जाएंगे।' यह डर गाँववालों को सताता रहता था। माँ तभी गाँव छोड़ने का निर्णय लिया, वे सीरिया ग्राम में रहने लगीं। वह गाँव से कुछ दूरी पर एक कुटिया में रहतीं थीं। दूसरे गाँव से उनकी तरह विधवा बालिकाएँ, विधवा महिलाएँ उनसे मिलने आतीं थीं, वे सभी उनके साथ मिलकर भजन-कीर्तन करने लगे, कृष्ण को ही उन्होंने अपना सखा और पति मान लिया था। सखा के साथ भक्ति-योग का मिलन। सखा को प्रातः जगाना, उन्हें स्नान आदि करना, उनको दोपहर का भोग देना, इस तरह वे अपने कृष्ण को पूरी तरह से अपने पति की तरह सेवा करने

लगीं। माँ तुलसिया का यह भक्ति-रस देखकर गाँव के बड़े-बुजुर्ग और महिलाएँ आने लगे, धीरे-धीरे ग्रामीण पुरुष और महिलाएँ उनसे जुड़ते गए। अब आध्यात्म का जोर पकड़ने लगा, हर एकादशी को उनके द्वार पर आने वाले भक्तगण को भोजन करवातीं थीं। वहाँ पर गुप्त दान-दाताओं की संख्या बढ़ने लगी, वे दबे पाँव अपनी आत्मा का आवाज सुनकर कुछ दान-दक्षिणा माँ को दे जाते थे। पर समाज का दबाव हमेशा उनपर रहता था। सभी लोग पुण्य कमाने के पीछे पैर इस सब में माँ तुलसिया का यह विशेषता रहा!

"अब बारी आई थी तुलसीया माँ की। पहले लोग संतों को बुरा-भला कहते हैं, फिर उनके पैर पड़ते हैं। कुछ महिलाएं ने अपना समूह बना कर अपने ही गाँव में लोगों से कहने लगीं कि 'जब से यह जोगिनी आई है, तब से इस गाँव में पानी नहीं बरस रहा है।' यह बात हवा की तरह गाँव में फैल गई। माँ तुलसीया को फिर से सीरिया गाँव से बहार निकलने का प्रस्ताव रखा गया। यह बात माँ के कानों तक पहुंची, वे बड़ी चिंतित हुईं। पहले एक गाँव छोड़ा, अब दूसरा पर वे बड़ी ही आत्मबलवान महिला थीं। सभी ग्रामवासी उनके कुटिया के सामने खड़े हो गए और अपना फरमान सुनाया। तभी माँ तुलसीया अपने एक पैर पर खड़ी होकर तपस्या करने लगीं और कहने लगीं कि 'जब तक इस गाँव में वर्षा नहीं होगी, मैं इसी तरह आजीवन कड़ी रहूँगी।' यह कड़ी तपस्या को दूर-दूर गाँव से लोग देखने पहुँचे। जैसे ही तीसरे दिन का अरुणोदय हुआ, साथ में वे अपने वरुण देवता को भी ले आईं। गाँव में इतनी जोरों की बारिश हुई कि सामने कोई व्यक्ति भी नहीं दिखाई पड़ता, कुएं तालाब पूरी तरह से भर चुके थे। गोमती नदी में महापुर जैसी स्थिति, तभी सभी ग्रामवासी उनके कुटिया पर आने के बाद उन्हें मनाने लगे। माँ क्षमा करना हमसे बड़ी भूल हो गई है, हम आपकी परीक्षा लेने लगे। तीसरे दिन उन्होंने अपना दूसरा पैर ज़मीं पर रखा, वर्षा ठम सी गई। सभी तरफ उल्लास ही उल्लास, माँ तुलसीया के अपने कान्हा जी पर प्रघार श्रद्धा थी। अब उनकी कीर्ति चारों दिशाओं में फैलने लगी, आगे माँ तुलसीया के असंख्य भक्त हो गए, बहुत सारे दानी बढ़ चढ़कर दान करने लगे, गाँव में किसी भी प्रकार का कोई व्यक्ति भूखा नहीं सोता था। अगर कहीं खाना नहीं मिलता था, तो माँ तुलसीया का दरबार ही हल है।"

माँ की गाड़ी स्थिर हो गई थी, कई भक्त वहाँ पर प्रसाद ग्रहण करने आते थें। प्रसाद इतना अच्छा होता था कि भरपूर मिल जाता था। लोग हमें भी कहने लगे कि यह सभी प्रसाद खाने के लिए ही माँ के द्वार पर आते हैं। कहना पड़ेगा कि समाज किसी को भी अच्छा या बुरा नहीं बक्षता, खैर, हम इससे हंसी टाल देते थे।

इस महीने का दूसरा अनुभव भी इसी प्रकार का था। हर तीसरे साल में एक अकाल पड़ता था, और ग्राम में सभी पानी के स्रोत सूख जाते थे। हेडपंपों में पानी नहीं था, तालाब और बावड़ी सूख गए थे, कई जीवों की मृत्यु हो गई थी। कान्हाजी इतने दयालु थे कि माँ तुलसीया के द्वार पर एक पीपल का वृक्ष था, और वहां पर एक हेडपंप था, जिससे कभी काम नहीं हुआ। अकाल ग्रस्तों के लिए जीवनदायी था। दिनभर महिलाएं पानी भरती थीं, और रात्रि के समय युवा पानी भरने के लिए निकलते थे। उस समय में खुद रात्रि के २ बजे पानी लाने जाता था।

यह पूरी कहानी सत्य हुई है। माँ तुलसीया के वानप्रस्थ आश्रम में वह बहुत दुखी रही, उनके पैर का टूटना और पेट का विकार इन रोगों से उन्हें ग्रसित कर रहे थे। पर ग्रामवासी सदैव सेवा में हाजिर रहते थे। माँ तुलसीया की सेविका, धुलीबाई, जो बाल्यावस्था में ही विधवा हो गई थी, ने उनके साथ में पूरा जीवन सेवा में समर्पित कर दिया।

माँ तुलसीया कान्हा जी की परम भक्त थीं, उनके सिवा वह किसी का भजन-पूजन नहीं करती थीं। धुलीबाई का जीवन तुलसीया माँ के साथ ही व्यतीत हुआ और वह भी कान्हा जी की बड़ी भक्त थीं। वे

भी तुलसीया माँ के साथ भक्तियोग में सेवा और अर्चना करती थीं। वह तुलसीया माँ को अपनी गुरु और माँ समान सेवा करतीं थीं। जब कभी तुलसीया माँ बीमार हो जातीं, तो धुलीबाई चिंतित हो जातीं और विचार करतीं कि मेरा कैसे उदार निर्वाह होगा।

देखिए, धुलीबाई का पूरा परिवार था, पर उनका लगाव माँ तुलसीया से था। माँ एवं धुलीबाई का प्रेम का झगड़ा रोज़ाना चलता रहता था, उन दोनों की किसी प्रकार से पटती नहीं थी। पर देखिए, यह प्रेम दो आत्माओं का एक शरीर जैसे रहता था। वे एक दूसरे बिना रह नहीं पाते थे। पर धुलीबाई ने कुछ समय के लिए बीमार हो गई, तभी उनके स्वजनों ने उन्हें अपने घर ले आए। पर धुलीबाई वहाँ पर एक दिन भी यही रुकते हुए, वे तुलसीया माँ की कुञ्ज कुटी में पहुँचीं। वे भी बहुत थकी हारी थीं, माँ तुलसीया का देह अभी जवाब देना चालू हो चुका था, वृद्धावस्था में माँ को बहुत भयंकर त्रासदायी झेलनी पड़ी। कहते हैं कि भक्ति मार्ग के लोगों को अघोरी लोग अघोरी विद्या करते हैं, उन्हें इसमें क्या खुशी मिलती है, उन्हें ही पता माँ का पेट का इलाज करवाया तब भी उनकी हालत ठीक नहीं हुई और वे स्वयं कहाती थीं मुझे अघोरी लोग सत्ता रहें हैं, पर यह बात सामान्य जनों के समझ में नहीं आती थी। यह कैसा प्रकार है? माँ तुलसीया ने अपनी आखरी सांसें ग्राम सिरिया में कुञ्ज कुटी कुटिया में ही छोड़ीं। पूरे खाप के गांववाले उमड़ पड़े भीगी आँखों से सभी ने बिदाई की तैयारी की।

पंचमुखी महादेव का विशिष्टता यह है कि वहां गंगा हमेशा झरती रहती है और उस पहाड़ पर कभी भी पिंड में से पानी कम नहीं होता। एवं जितना भी पानी का उपयोग किया जाएगा, उतना ही फिर से जमा हो जाएगा जैसे कि महाराष्ट्र में एक त्रम्बकेश्वर ज्योतिर्लिंग इन दो पिंडों में पानी कभी खत्म नहीं होता। कहा जाता है कि एक लोटा पानी चढ़ाने पर दस लोटे पानी पुनः प्राप्त होता है। बिनेश्वर के साबला में संस्थापक गुरु श्री मावजी महाराज की गद्दी है और कहा जाता है कि मावजी महाराज की गद्दी मशहूर है, उस गद्दी पर बैठने वाले 8 से 10 संत होते हैं, दो संतों का वहाँ पर महानिर्वाह हो जाता है। वे उस गद्दी के लिए जो उपरोक्त युवा को बैठा कर जाते थे, वही यह कार्य गुरु महाराज ही करते हैं। आज इस गद्दी पर पंचकोशी के श्री गुरु महाराज अच्युतानंदजी विराजमान हैं। हर दीपावली को धर्मग्रन्थ (चोपड़ा) की पूजा की जाती है। लोगों के सामने कुछ-कुछ भविष्य का कथन किया जाता है। यह धर्मग्रंथ बहुत प्राचीन है और वह मावजी महाराज के हस्तलेखित हैं, उस ग्रंथ का विशेषता यह है कि जो गुरु गद्दी पर विराजमान है वही यह ग्रंथ पढ़ सकता है, इस ग्रंथ की लेखनी गुरुलोग ही पढ़ सकते हैं। यह लेखनी सामान्य लोगों के ज्ञान से बाहर है, अभी तक जो भी भविष्यवाणी हुई है, वह 100 प्रतिशत सत्य हुई है।

इतिहास यह कहता है कि मावजी महाराज की समाधि शेषपुर नामक धौला गढ़ पहाड़ पर विराजमान है (कुछ इतिहासकार यह कहते हैं कि उनका समाधिस्थल अहमदाबाद में है)। शेषपुर गाँव की विशेषता यह है कि एक सफेद घोड़ा तीन पैरों पर खड़ा है और चौथा पैर ज़मीन से कुछ इंच ही ऊपर है। लोग कहते हैं कि जब यह पैर ज़मीन पर टिकेगा, तब पृथ्वी पर महाप्रलय निश्चित होगा। गुरुदेव अच्युतानंदजी महाराज ने माँ तुलसीया की देह बेणेश्वर धाम पर लाकर त्रिवेणी घाट पर जलाकर स्वामी के हाथों से अग्निसंस्कार किया, उनकी अंतिम स्वास्थ्य बिदाई के लिए लाखों की भीड़ उमड़ पड़ी। उनके नाम से विधि-पूर्वक अंतिम संस्कार माँ पर किया गया, हर व्यक्ति ने तुलसीया माँ को अमर रहने और उनकी जय कहते हुए फिर से अपने घर की ओर लौटा। इस प्रकार, संत तुलसीया माँ का चरित्र गाँव सेरिया में बना रहा। ग्राम सेरिया एक छोटा सा कस्बा है, जहां पर स्वतंत्र सेनानी और तुलसीया माँ की देवभूमि से गाँव को जिस प्रकार से प्रसिद्धि मिलनी चाहिए वह नहीं हुआ। हमारा समाज अक्सर सेवा, उद्योग, होटल इत्यादि कई शाखाओं में कार्य करता था। जब कुछ लोग पिताजी से यह पूछते थे कि आप एक ही व्यवसाय क्यों करते हैं, पिताजी का मर्मक उत्तर था कि एक होटल व्यवसाय 10 से 12 लोगों का पेट भरता है।

एक छोटी सी होटल में भी ४ या ५ नौकर, ३ या ४ ग्रामीण दूध वाले किराना व्यापारी किराये की दुकान हो तो उसका मालिक इसके पश्चात दूसरे ग्रामों से आए हुए ग्राहकों को ठंडा जल इत्यादि मिल जाता है। इसलिए यह उद्योग मालिकों के साथ कई लोगों का पेट भरता है, इसलिए मैं यही व्यापार करता हूँ।

सामने वाला व्यक्ति यह कहता है कि यह तो मैंने सोचा ही नहीं, खैर विचारशील बड़े लोगों की आगमन सोच और बुद्धि का हर युवा उपयोग में लेता है तो देश में गरीबी नहीं रहेगी। बड़ों का मार्गदर्शन और युवकों की शक्ति का मिलाप हो जाए तो कहना है कि क्या वृद्धावस्था में युवा की शक्ति और युवकों में अनुभव आ जाए तो दरिद्रता इस देश में रहेगी नहीं, पर ये नदी के दो किनारों में कभी-कभी ही समुद्र में मिलन होता है। स्वतंत्र सेनानियों को केंद्र सरकार की और से भी सन्मान निधि मानधन ५००० रुपये देना शुरू हो गया है।

मेघजी दादा के पांच पुत्र और एक बहन, सभी को अलग-अलग व्यापार करके होटल कारोबार में लगा दिया और उनकी लड़की को राजस्थान में ब्याहने के कारण वे वही पर रही, खेती बड़ी मेहनत करते हुए अपना स्थान बराबर कमाएं हैं। हमारे जीजाजी, जग्गनाथजी जोशी, नांदेड़ बस स्थानक के सामने विजया लक्ष्मी होटल चलाते थे। इस परिवार में अभी भी ५५ छोटे-बड़े लोग रहते हैं

सभी महाराष्ट्र में सेलू गाँव में ही रहते हैं। मेघाजी दादा और उनकी धर्मपत्नी दोनों ही राजस्थान में खेती आदि को देखते थे। खेती बारिश पर आधारित रहती थी और हर साल गेहू की फसल का उत्पादन बड़े प्रमाण में होता था। उस समय खेती माल का भाव अच्छा मिलता था। केंद्र और राज्य सरकारों ने मानधन की राशि में बढ़ोतरी की और उनकी पुरानी जमा पूंजी पेंशन इकट्ठे दौर पर दी गई, स्वतंत्र सेनानियों को दुःखों की वैतरणी पार करके सुकून और समाधान की जीवन गुजारने लगे।

हमारे पिताजी कर्मठ और कर्मयोगी होने के कारण वे खेतों में नए-नए प्रयोग किए। उन्होंने महाराष्ट्र से खेती करने के उजारे लेकर जाते थे, गाँव से गुजरती हुई छोटी सी नहर हमारे खेतों से गुजरती थी। उस पानी का पिताजी ने बड़े ही अच्छे ढंग से उपयोग किया, वहां पर उन्होंने धान की खेती की (चावल)। उन्हें उसमें उत्पादन बहुत अच्छा मिला, पहला प्रयोग सफल रहा और दूसरा प्रयोग उन्होंने भाट फार्म १२ बीघा जमीन पर गेहूं की बोई की। उस समय हमारे भाट फार्म में १०० क्विंटल गेहूं का उत्पादन हुआ और उदयपुर धान मंडी में यह गेहूं जाते ही व्यापारी कहा करते थे कि यह भाट फार्म का गेहूं है इतनी मान थी (उदयपुर जिला हमारे गाँव से ७० किमी की दूरी पर है)। दूसरा प्रयोग भी सफल रहा।

पर जब अपना समय अच्छा आने लगा तो सभी तरह से खुशियाँ ही खुशियाँ लेकर आता है। इस तरह हमारे ऊपर श्रीनाथजी की कृपा दृष्टि होने लगी। हमारे पिताजी की माँ, सुंदरा बाई, ने ९२ वर्ष की आयु तक जीवन का सफर तय किया। वे पढ़ी-लिखी नहीं थीं फिर भी उन्हें गीता का भरपूर ज्ञान था। वे हमें समझाती थीं, "आपके शरीर में ही परमात्मा स्थित है, आपकी आत्मा ही एक ईश्वरी रूप है।" फिर हम बच्चों का प्रश्न था, "तो वह ईश्वर दिखता क्यों नहीं है? हमें हमारे कार्यों में मदद क्यों नहीं करता?"

दादी का इतना सरल जवाब रहता था कि ईश्वर शरीर में ही लिप्त है, वह आपके कार्यों में न तो मदद करता है और न कुछ। जिस प्रकार दूध में मक्खन, मक्खन में घी दिखाई नहीं देता है, उसी प्रकार दही बनाने के बाद घी निकलता है। इसी प्रकार ईश्वरी प्राप्ति के लिए मन का मंथन होने से मनमें स्थिरता आ पाती है। मनमें स्थिरता आने के पश्चात् बूढ़ी अपना कार्य करती हुई इन सबके उपरांत आत्मा कितनी सरल गाँव की भाषा में समझती थी कि वह कहानी मुखपाठ ही हो जाती।

दादी का आध्यात्मिक ज्ञान जैसे कि रामायण में राजा जनक की पुत्री सीता की विवाह उपरांत विदाई का वर्णन तो वो इस प्रकार करती थी कि अलंकारित भाषा और रुदन स्वयं ही आ जाता था। उनका आध्यात्मिक ज्ञान पूरे परिवार को संजोय रखता था। "कर्मठ कर्मयोगी महिला" में स्वयं सातवीं कक्षा तक वही पढ़ा, हम सब बालक जब दादी के पास जाकर यह प्रश्न करते थे कि हम पास होंगे या नहीं, उनकी गणपति बाप्पा पर पूरा विश्वास था। हर चीज़ का समाधान बाप्पा ही थे। वे तुरंत किसी भी बात पर लड्डू बना कर बाप्पा पर अर्पित कराती थीं। जैसे की समझो, कि काम सफल हो गया, लोग कार्य होने के बाद लड्डू का चढ़ावा भेट करते थे, पर हमारी दादी काम होने के पहले ही लड्डू का भोग चढ़ाती थीं। उनकी इतनी बड़ी पहाड़ी आवाज थी कि जब गौ धूलि की बेला पर जब मवेशी या गाय घर पहुँचती थी, तो सभी घर के लोग उन्हें ढूँढ़ने निकल पड़ते थे। पर गाय और मवेशी कुछ देर की पश्चात घर पहुँच जाती थी, पर उन्हें ढूँढ़ने वाले नहीं पहुँचते थे। तो दादी बावड़ी के पास खड़ी होकर उन सभी को आवाज देती कि पशुधन घर पहुँच चुका है, तुम सभी घर को लौट आओ। इतनी बड़ी पहाड़ी आवाज थी। करीब २ किमी तक जाती थी हमारे साथी घर के रेंज मिल जाती फिर घर को लौट आते थे। हमारे माँ का मकान मिट्टी और केलुओं से बना हुआ था। वे घर पूरे प्राकृतिक तरीके से बनाए जाते थे। तीनों ऋतुओं का इस पर कोई असर नहीं पड़ता था जैसे कि गर्मी में ठंडा और ठंडी में गरम। अब यह कार्य करने वाले सुथार ही नहीं बचे पर मैंने इस विरासत को संभाले हुए मेरा घर इसी प्रकार रखा है।

मैं आपको वहां का रहन-सहन, शादी-ब्याह, वेदिक पद्धति, और ज्ञान सब कुछ बताना चाहता हूँ, पर समय का पहिया धीरे-धीरे चलने का नाम ही नहीं ले रहा है (समय आपूर्ण पड़ जाता है)। जैसे कि यह समझो कि शव यात्रा छोड़कर सभी कार्यों में नृत्य, गाना, घूमर, गरबा, यह सब होता है। खैर, मैं मेरी घर की महिलाओं किस किसकी तारीफ़ करूँ, अब पहली बारी मेरी माँ की आती है। वह बड़ी दयालु, ममता भरी महिला है, कोई दुखियारा, भूखा और प्यासा घर से कभी खाली हाथ नहीं लौटा। हर समय भोजन और चाय चूल्हे पर तैयार ही रहते हैं, क्योंकि उनकी पांच बहुएँ, जो थीं, अपने बच्चों की तरह जैस्ट जे पुत्र और बुआ के पुत्र पुत्रियां, सभी को और हम बेटे-बेटियों को समान प्रेम दिया जाता था, किसी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं किया जाता था। पर बुआ के बच्चों के लिए मुझे और मेरे छोटे भाई (लक्ष्मण) को सहना पड़ता था। इतने बड़े परिवार को संभालने की ईश्वर ने किस प्रकार देनगी दी है, पिताजी कहते थे, यह ईश्वर का वरदान है, इतनी बड़ी सहनशक्ति कभी मुख पर तनाव नहीं और दुखी नहीं होती (खानदान पुरोहित की बेटी जो ठहरी)।

पिताजी हमारे कभी-कभी अपनी माँ पर ग़ुस्सा हो जाते थे। उनकी उम्र बहुत हो चुकी थी, इसलिए वे जिद्दी स्वाभाव के बन गए थे। बेटा माँ पर ग़ुस्सा करता था, पर कभी भी बहु ने सांस पर ग़ुस्सा नहीं किया था। घर में इतनी मान-मर्यादा किसी के घर में मैंने नहीं देखी, माँ को पिताजी की तबियत खराब होने पर सामाजिक तत्त्व इतने ताने देते थे कि कभी-कभार माँ पर थूक भी दिया करते थे। इतना बड़ा घिनोना व्यवहार मेरे माँ के साथ हुआ, पर माँ ने कभी भी मूड कर शिकायत नहीं की, वह सहनशीलता की मानों देवी ही थीं। वे अपने ससुराल में बहु बन कर आई थीं, पर सभी लोग पूरा परिवार उन्हें बुआ कह कर बुलाता (बहु की बुआ बन गई)। इतना स्नेह भाई-बंधुओं से मिला, माँ के पास हर वर्ग के लोग आते, उसमें महिलाओं का प्रमाण ज्यादा होता है।

आदिवासी महिला, हमारे खेत में काम करने वाली, जब माँ से मिलने आती, घर के नीचे से ही आवाज देती है, "वाली भुआ घर पर है।" इन महिलाओं को इतना विश्वास था कि बिना चाय-पानी खाना खाने के सिवाय, वे हमें जाने नहीं देंगी। इसलिए, माँ की कृपा से हमें खेतों के मजदूरों की कभी कोई कमी नहीं हुई। आदिवासी भाइयों को कंधे से कंधे मिलकर काम करते थे। हमारे गांव में तीन विभाग थे, ये पुराने समय में भाई करते थे। इन तीनों का नाम धन्नावत, सोमावत, रत्नावत था (रत्नावत में ही पद्मावत परिवार शामिल था, करीबन पद्मावतों के १०० मकान थे)।

शादी और ब्याह पर आदिवासी भाइयों को निमंत्रित किया जाता था, जो हमारी खेती करते थे। उन्हें "कळाऊआ" नाम से प्रसिद्ध किया जाता है। खेती बाड़ी इन साथियों के भरोसे ही रहती थी, सभी मिलकर काम करते थे। उनके साथखाने-पीने का कोई भेदभाव नहीं था, वे भी हमें बड़ा सम्मान दिया करते थे।

देखिए, हमारे पूर्वजों ने किस प्रकार सामाजिक रचना की कि जब तक होली के उत्सव में आदिवासी भाइयां नहीं आते, तब तक होलिका का दहन नहीं होता। आदिवासी मीणा परिवार पूरा होली के उत्सव में उपस्थित रहता था, सबकुछ भाईचारे के तहत घेर नामक नृत्य खेला जाता था। घेर यह प्रकार सभी युवकों को एकत्रित करने के बाद, ढोल की तान पर लम्बी लकड़ियों को पकड़कर एक बड़े घेरे में नृत्य किया जाता।

महिलाएं घूमर नृत्य करतीं, जिसमें वे सभी एक साथ घूमर गातीं हुई गोल घेरे में नृत्य करतीं थीं। वे फाग गाया करतीं थीं (अपने पतियों को मीठी मीठी गालियां देना)। यह राजस्थान का सबसे बड़ा उत्सव है। इस उत्सव की तैयारी सात दिन पहले ही, हर रोज़ घेर का अभ्यास किया करते थे। इस लिए सभी धागे डोरे एक दूसरे से बाँधे रखे जाते थे।

आदिवासियों और ब्राह्मणों में और भी कोई वाद-विवाद होता था, तो होली पर निपटारा किया जाता था। मेवाड़ का सबसे बड़ा महोत्सव होली और नवरात्री है। इस समय हर व्यक्ति, चाहे वह किसी भी जाति का क्यों न हो, उसे इस मोहोत्सव में सम्मिलित होने के लिए उत्साहित रहता है।

हमारे पूर्वजों ने इस प्रकार की व्यवस्था को बनाए रखा है कि जब भी भाई-भाइयों में दरार या मनमुटाव या झगड़ा होता था, तो किसी भाई के घर में शुभ मंगल या ब्राह्मण भोजन होता था। तब वहाँ के पंचगण कहते हैं कि जब तक तुम्हारा भाई पंगत में खाना खाने के लिए नहीं बैठता है, तब तक कोई जीमने या खाना नहीं खाएगा। इस वजह से इस भाई को उस भाई के पास जाकर मनाकर लाना पड़ता था। तब सभी पंचगण जीमने के लिए बैठते थे और इस प्रकार भाई-भाइयों में मनमुटाव समाप्त कर दिया जाता है।

इससे समाज में कहा जाता है कि समाज के तौर-तरीके इतने अच्छे बनाए गए थे, पर अब सब कुछ बदल चुका है। अब हर व्यक्ति शाख की निगाहों से दूसरों को देखता है। प्रत्येक व्यक्ति यह सोचता है कि मेरा भगवान, मेरा धर्म, मेरी ही जाति सर्वश्रेष्ठ है, हर प्रकार से स्नेह, सम्बंध, घर, गाँव, समाज तक टूट चुके हैं। प्रत्येक व्यक्ति व्यापारिक दृष्टिकोण रखते हुए हैं, हर तरफ व्यापार ही व्यापार है, सभी तरफ से प्रेम के व्यवहार मन ह्रदय से ह्रदय के संबंध खत्म हो चुके हैं। शहरों, महानगरों और शहरों तक यह सब ठीक है, पर गाँवों में रहने वालों के लिए यह घातक है। हमारी विरासत, संस्कृति, अपनापन, सब कुछ गाँवों में ही टिका हुआ है। बापू (महात्मा गांधी) भी भारत में गाँवों में ही बसे हुए हैं।

खैर, समय हमेशा करवट लेता है, मनुष्य यह समूह में रहने वाला प्राणी है। हमारी दादी कहती थीं कि अभी यह कलियुग की बाल्यावस्था है और वह युवा और वृद्ध होना बाकी है। द्वापरयुग में कृष्ण के एक मित्र ने अपनी बूढ़ी अंधी माँ को जंगल में छोड़ आता है, वह बूढ़ी माँ कृष्णा भक्त थीं। कृष्ण अंतर्यामी होने की वजह से उन्हें यह सब कुछ पता चल रहा था। तभी कान्हा ने पूछ लिया, "की दादी, आप इस जगह क्या कर रही हो?" तभी अंधी दादी ने कहा, "मेरे बेटे ने मुझे खेतों की रखवाली के लिए यहाँ छोड़ दिया है।" तभी कृष्णा ने कहा, "कलियुग का जन्म हो चुका है।"

हमारे गुरु महाराज अच्युतानंदजी जब दीपावली पर ग्रंथ पढ़ते हैं, तो बड़ा डर सा लगता है कि आगे क्या घटित होने वाला है। माँ हमेशा कहती थी कि बेटा, हम सब कान्हा जी के हाथों की कटपुतली हैं, घबराने जैसी कोई बात नहीं है। मेरा परिवार आत्मसमर्पणशील था, इसलिए कभी-कभी विठोबा (पांडुरंग) के सामने जाकर कोसने का मन करता है। संत ज्ञानेश्वर की तरह हम विठोबा को गाली तो नहीं दे सकते, क्योंकि इतनी भक्ति हमारी नहीं है, पर अपने विचारों से और भविष्य के ज्ञान के लिए कान्हा जी को कोसना जरुरी है। राधिका जी (राधारानी) कान्हा जी से कहती थीं कि जब तक तुम्हारे हाथ में बासुरी थी, तब तक सब ठीक था, फिर आपने हाथ में सुदर्शन चक्र धारण कर लिया।

ग्वाल से राजा द्वारकाधीश बन गई तब कभी भी आपने माँ यशोदा राधारानी को कभी भी इनको याद नहीं किया मैं मनुष्य जन्म की बात कर रहा हूँ, ईश्वर की नहीं। कान्हा जी, आपने कैसी रचना की है? आप स्वयं सारथि बनकर पाण्डुओं के रथ पर मुखिया बन बैठे और एक राजा अपनी ही प्रजा (सेना) और अपने ही सैनिकों को मरवा रहा है। राजा द्वारकाधीश, अपने ही सैनिकों से लड़ रहे हैं। कौरवों और पांडवों की लड़ाई हक की थी, पर इसमें आपके सैनिकों का क्या कसूर? एक तरफ आप पांडवों की ओर से और दूसरी ओर कौरवों को दे दिया यह सब कुछ हमारे बुद्धि के परे है। फिर भी हम हमारी बौद्धिक क्षमता से ही बात करते हैं। पांडुरंग अपने सभी भक्तों को किसी को सर पर, किसी को हाथ में, किसी को कटी पर बैठा कर नाच रहे हैं। पर आपने ऐसी रचना ही क्यों की? कोई दुखी लोग को जन्म नहीं दिया होता तो आपको लगता था की मेरे लिए मृदंग और त्रिताल कोण बजाएगा। इसलिए ईश्वर का दृष्टिकोण रखते हुए अपने यह सब कुछ निर्माण किया। जैसे कि जंगल में पक्षियाँ, पशुओं आदि प्राणी जब अपने बच्चों को जन्म देते हैं और वह माँ जब पेट भरने के लिए बाहर निकल पड़ती है तबी वह शिकारियों के हाथ वह शिकार हो जाती है, तब उसके बच्चे तड़प तड़पकर माँ की राह देखते हैं, भूखे-प्यासे मर जाते हैं।

तो इसमें इन नन्हे बच्चों की क्या गलती है, निरागस्त वृत्ति के इन पर मनुष्य प्राणियों पर भी यह बात लागू होती है। आपने इस प्रकार से जगत में रचना क्यों की? यह एक बड़ा गहन सवाल का कोई हल नहीं है। कहते हैं कि यह प्रारभ्ध का लेखा जोका है। तो हमने कैसे पूर्व जन्म में कैसे किस प्रकार के दुष्ट कर्म किए होंगे, सो इस जनम में हमें यह सजा मिल रही है। तो इसका अर्थ यह है कि हमें प्रारभ्ध का ज्ञान मिल जाता तो हमें दुःख नहीं होता। चलो, दुखों का भार दुखों पर ही। आगे, अब कृष्णा अर्जुन को दृष्टान्त दे रहे थे, कोई किसी का नहीं सब में ही में ही में, आदि अंत में सृष्टि का रचनाकार में ही और सृष्टि का सृजनकर्ता भी में ही सब में। कान्हा जी ने धर्मराज को झूट बुलाकर अश्वथामा नहीं रहे, यह सुनते ही गुरु द्रोणाचार्य रथ से उतरकर समाधि में बैठ गए, क्या वे पुत्र मोह में इतने भावुक हो उठे कि उन्होंने अपना देह ही त्याग दिया, उस ज्ञानी व्यक्ति को यह ज्ञान नहीं था कि कोई किसी का भी नहीं है। यह कान्हा जी का वचन उन्हें ध्यान में नहीं रहा, यह सब हमारे बुद्धि के पार हैं। सामान्य जन सामान्य सोचते हैं। अगर हमें हर प्रश्न का सही उत्तर नहीं मिलेगा तो हमारा विश्वास कैसे बढ़ेगा। इस समय हम गीता ज्ञान के आंगनवाड़ी में ही खेल रहे हैं। बुद्धिहीन व्यक्ति जिस प्रकार अपनी बुद्धि का प्रयोग करता है, इसी प्रकार यह हमारा प्रश्न है। मैं इन सभी बातों को लेकर इस नतीजे पर पहुँचा कि शून्य आपका और दूसरा शून्य भी आपका है, शून्य से शून्य में विलीनीकरण यही सिद्धांत मुझे दिखा।

मेरी माँ का मायका सधन था। वह एकेली पुत्री थीं, जिन्हें लाड़-प्यार से बड़ी किया गया था। उनका जीवन संघर्षपूर्ण था, लेकिन उन्होंने आगे बढ़कर समाज सेवा में भी रुचि रखी थीं। ईश्वर और मंदिर इन सब उनके जीवन के महत्वपूर्ण हिस्से थे। मेरी माँ तुलसी की बहुत भक्त थीं, और उन्होंने हमेशा कहा कि ईश्वर की भक्ति सबसे महत्वपूर्ण है। अगर कभी कोई देवकार्य होता और माँ नहीं पहुंचती थीं, तो तुलसी माँ कहतीं कि "वालीबाई क्यों नहीं आई?" इस प्रकार हमारी माँ ने अपने पति और साथी के साथ पांच कुशी ग्राममें उनका नाम प्रसिद्ध किया। पिताजी उनके काम में कोई दखल नहीं देते थे, और

वे दोनों पति-पत्नी चार धामों की यात्रा कर चुके थे। यात्रा से वापस गांव में समर्थन हुआ तो उनका जोर-शोर से स्वागत हुआ, और गंगा कलश भरने की तैयारी शुरू हुई। चार धाम यात्रा के आने के बाद ब्रह्म भोजन और वहां मेवाड़ में यह रीति-रिवाज था कि स्व-सुहासिनी को एक पानी के भरे मटका, नारियल और आम के पत्ते कलश के साथ यात्रा पूरे गांव में ढोल-मंजीरों के साथ धूमधाम से शोभा यात्रा निकाली जाती थी। शोभा यात्रा के बाद, महिलाओं और लड़कियों को एक साड़ी, कलश, और ग्यारह रुपए दिए जाते थे। उस समय हमारी माँ ने करीबन 1000 साड़ियाँ बांटीं, माँ के देवर और मायके के तरफ से भाई का रिश्ता उदयरामजी, धुलजी पद्मावत (मेहता) के साथ हुआ। उदयराम काका बम्बई वाले नाम से प्रसिद्ध थे, उन्हें धर्म राजा भी कहा जाता था। वे दान-पुण्य करने वाले थे और हमारे गांव के प्रथम नागरिक थे। उन्होंने अपने से बन पड़े उतनी मदद गरीबों की की। माँ पर स्वजनों का असीम प्रेम था। इतने बड़े परिवार को बंधे रखना कोई छोटी बात नहीं थी। हर बच्चे की युवता की अपेक्षा संभालते हुए उन्होंने परिवार को पूरे समाज के सामने सामूहिकता का बड़ा उदाहरण बनाया था। इतने बड़े परिवार में देवरानी, जेठानी, बहुएँ, और सभी भाइयों के बीच कभी मनमुटाव नहीं होने दिया। वह बड़ी धीरज धारी महिला थी, और मराठी पाठ्य पुस्तकों के एक अत्यंत संवेदनशील लेखक साने गुरूजी (श्याम ची आई) की पुस्तक का जब हमारे मराठी शिक्षक ने पाठ पढ़ाने के दौरान वह पाठ इस तरह से पढ़ाया कि पीछे बैठे विद्यार्थी रो पड़े। गुरुजी ने उस समय पाठ पढ़ाना बंद कर दिया (इस विद्यार्थी की माँ बचपन में ही चल बसी थी)। माँ का लाड़-दुलार से वंचित बच्चे अगर इस पुस्तक को पढ़ेंगे तो जरूर रो पड़ेंगे। माँ का ह्रदय विश्व अनंत कोटि ब्रह्मांड कोटि विशाल जैसा था। फिर से मुझे कृष्णा जी की याद आई, जब यशोदा मैया अपनी सहेलियों के साथ में वार्तालाप करने में मग्न थीं। कृष्णा यह कह रहे थे, "मैया, मुझे भूख लगी है।" मैया कृष्णा की ओर कुछ ध्यान नहीं देतीं, तब दूसरी बार कृष्णा ने माँ यशोदा का साड़ी छोड़ खींचते हुए कहा, फिर भी माँ यशोदा अपनी सहेलियों के साथ गप्पे लड़ाने में व्यस्त थीं। दूसरी बार वे माँ के मुँह को अपनी ओर करते हुए कह रहे थे, "मैया, अभी तो चलो।" फिर भी माँ यशोदा ने उनकी ओर ध्यान नहीं दिया। कृष्णा जी की सहन शक्ति खत्म हो गई थी इस बालक ने मैया यशोदा की पीठ पर जोर से थप्पड़ मारा। तभी यशोदा मैया का पारा आसमान पर, कृष्णा जी जोर-जोर से हँसने लगे, कृष्णा जी की भूख खिलखिलाती हँसी में लगभग खत्म हो गई। मैया का गुस्सा एकदम शांत सा हो गया और उन्होंने अपनी गोद में लिए लाड़ प्रेम करने लगीं, इससे कहा जाता है - "मातृ प्रेम।"

मेरी माँ हमेशा कहती थी, "खाना खिला के खुश हो, अपने खुद के खाने में मजा नहीं बढ़े।" उदारवादी लोगों का जीवन देश प्रति इसी प्रकार प्रवाहित हो गया। मुझे इस पर संत रहीमजी का एक दोहा याद आ गया,

"वृक्ष कबू फल न फके,

नदी न सींचे नीर,

परमात्मा के कारण,

साधू न धरा शरीर।"

अर्थात, जिस प्रकार वृक्ष कभी अपना फल नहीं खाता है और नदी कभी अपना जल नहीं पीती है, उसी प्रकार उद्धारवादी, देशभक्ति के लोगों का जीवन देश के प्रति समर्पित रहता है। इन सभी महान योद्धा, जवान, सैनिक, और स्वतंत्र सेनानी में देवी का संचार होता होगा, क्योंकि इतना कठिन संघर्ष कोई

साधारण व्यक्ति कर ही नहीं सकता। हम कहते हैं, "दूर के ढोल बड़े सुहाने लगते हैं," पर वास्तविक जीवन में कुछ और होता है।

स्वतंत्र सेनानी पिताजी के मित्र भी कर्तव्य निष्ठांत समर्पित भाव के लोग थे। इन सब में प्रथम मित्र श्रीरामजी भांगड़िया वे सेलु नगर परिषद् के नगराध्यक्ष रहे। उनकी जीवनी भी कुछ इसी प्रकार है। वे आजीवन ब्रह्मचारी थे और उन्होंने अपनी गृहस्थी नहीं बसाई थी। एक महान व्यक्तित्व, स्वतंत्र सेनानी, समाज सेवक, और नूतन विद्यालय के संस्थापक रहे। जब हैदराबाद हिंदुस्तान में विलिनीकार होने के पश्चात २० से २५ साल तक सेलु शहर की बड़ी निष्ठांत से सेवा की, आज जो सेलु शहर पुणे की तरह दिखता है यह उनकी बदौलत है। उन्होंने उस समय गरीबों को रहने के लिए जगह (प्लाट) दी और घर की सुविधाएं उपलब्ध कराई।

वे धर्मनिष्ठ होने की वजह से सभी धर्मों के लोगों को समान रूप से देखते थे, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति उनके सामने नतमस्तक आदर भाव से भांगड़िया जी को देखा करता था। उस समय सभी स्वतंत्र सेनानियों की माावियों की हालत ठीक नहीं थी, फिर भी उन्होंने अपना और अपने स्वार्थ को त्याग कर अपनी जीवनी सेलु शहर को समर्पित कर दी। उस समय से लेकर आज तक, जो रस्ते, गलीयां, मोहल्ले उनके शहर के हर तरफ हैं, नगर पालिका के गले दूकानें, रंगभूमि, नाट्यगृह, सभी नगर पालिका के द्वारा स्थापित किए गए हैं।

उत्पादन का स्त्रोत भांगड़िया जी द्वारा बहुत ही श्रेष्ठता के साथ बनाया गया है। नगर पालिका का उत्पादन सादियों बीत चुकी है, पर रस्ते उस समय के तरह हैं, छोटी बातें भांगड़िया जी के शहर की प्रति खुशी को दर्शाती हैं। आज भी नगर पालिका के बताए गए रस्ते पैदल चल रहे हैं, जैसे उस समय से लगातार अभी तक "नंददीप" प्रज्ज्वलित है। इस नगर पालिका को संभालते हुए नए नेताओं ने काफी कुछ किया हैं। हेमंत रावजी आढळकर, विनोद बोराडे साहब, इत्यादि।

महान व्यक्ति महान ही कार्य करता है, यह दो बड़ी उपलब्धियाँ स्वतंत्र सेनानी भांगडिया जी की सेलु वासियों को देने हैं। मैं यह खुद चाहता हूँ कि आने वाली पीढ़ियों को यह ज्ञान रहे, विद्यालय के पाठन और नगर पालिका के पाठन पर इनकी कार्यों की दास्ताँ लिखवाई जाएं, जिस प्रकार भांगडिया जी का स्मारक है, उसी तरह नगर पालिका में उनका एक स्मारक बनवाया जाए। इन व्यक्तियों की कर्त्तव्य त्याग, लोगों के प्रति स्नेह, विशेषकर गरीबों के प्रति लगाव, इन स्वतंत्र सेनानियों की संस्थाओं में नगर पालिकाओं में स्वर्ण गुलाल अक्षरों में अंकित हैं।

ऐसे थे हमारे भांगडिया जी, हमारे पिताजी के खास मित्रों में से एक। हमारी कृष्णा होटल रेलवे स्टेशन के पास संध्या समय सभी स्वतंत्र सेनानियों का जमावड़ा होता था। मित्रगण वहाँ पर एकठे होते थे, उनके वार्तालाप स्वदेश के प्रति ही होते थे। उनमें भांगडिया जी संध्या के समय कुर्सी लगाकर एक और बैठते थे, विशेषकर सदाशिवकाका चौधरी, रामभाव आढाव, गोविन्द काका कदम, खोपसे पाटिल और उनके स्वजन यहां एकठे होते थे। अगर मैं प्रत्येक स्वतंत्र सेनानी की समय की कमी के बावजूद भी मेहनत करूँ, तो मैं कोशिश करूँगा कि सभी की जीवन की रूपरेखा को आप तक पहुंचा सकूँ।

स्वतंत्र सेनानी पूज्य रामभाव आढाव, यह व्यक्ति, मोंढा सेलु में (बाजार हाट) में हमाली का काम करते थे (मजदूरी) शोकांतिका। यह है कि सच्चे स्वतंत्र सेनानी जिन्होंने कैद खानों में तकलीफों को झेला, उन्हें कई प्रकार से यातनाएँ दी गईं, उनके शरीर पर गहरे घाव के जख्म। ऐसे स्वतंत्र सैनिक को सन्मान

निधि से परे रखा गया। फिर सदाशिव काका चौधरी, हमारे पिताजी एवं उनके सहकारी सभी ने मिलकर मुख्यमंत्री (वसंतराव नाइक) को पत्र लिखा और हर्षुल जेल से सजा का प्रमाणपत्र लाया।

वह बड़े नेक दिल इंसान थे, उनको कई दिनों तक पता ही नहीं था कि सरकार उन्हें सन्मान पत्र एवं मानधन की राशि नहीं देती है। वे रोज पद्मावत होटल में नास्ते पानी के लिए आते थे, इन लोगों को भी पता नहीं था कि आढाव को मानधन नहीं मिल रहा है। बातों बातों में यह विषय एक बार काका के सामने निकल गया, हमारे पिताजी एवं काका ने मिलकर कड़ी मेहनत के बाद उन्हें केंद्र एवं राज्य सरकार की मानधन राशि शुरू करवाई। उनकी उम्र भी हो चुकी थी। सरकार की सन्मानजनक राशि से उनका वृद्धा पण खुशी से गुजरा, ऐसे महान लोगों को गरीब स्वतंत्र सेनानियों को चाहिए, जैसी प्रसिद्धमान सन्मान। कुछ बड़ों की वजह से "DAR" किनारा किया गया।

मैं इन स्वतंत्र सेनानियों को किसी भी तरह से प्रसिद्धि प्राप्त करने में कोशिश कर रहा हूँ। हर एक स्वतंत्र सेनानी को प्रसिद्धि, मान, और सम्मान मिला, पर वे अपने साथी सेनानियों को भूल गए। खेद है कि किसी भी स्वतंत्र सेनानी का अपमान या घृणा मान से नहीं कह रहा हूँ, हर स्वतंत्र संग्राम मजबूत रहा था और हर होटल "पद्मावत" में हर स्वतंत्र सेनानियों की बैठक बनी रहती थी।

ऐसे कई प्रकार के स्वतंत्र सेनानी महाराष्ट्र सरकार और राज्य सरकार से वंचित रहे, उदाहरण के तौर पर जिन्होंने ज्यादा कम से कम १८ से २० महीने सजा भोगी, उन्हें मानधन राशि मिलती, पर जो ५ या ६ या १० साल तक रहे, उनकी सरकार को खबर नहीं की कि हर स्वतंत्र सेनानी का नाम हैदराबाद मुक्ति संग्राम में ग्रन्थ में आया। मुझे बहुत ख़ुशी हुई।

इतिहास के पन्नों में बंद पर उनमें स्वतंत्र सेनानी वंचित रहे, इसमें खेद हमेशा बना रहेगा। स्वतंत्र सेनानी की सूची में इसमें कष्ट करने वाला गोविन्द काका कदम, इनका संघर्ष अनोखा है। पहले-पहले वे मजदूरी करते थे, उसमें से छोटे भाई रामभाऊ कदम उनमें नूतन संस्था ने खेती बाड़ी पर निगरानी रखते थे, बहुत ही कम वेतन में हर प्रकार दोनों भाई का परिवार शामिल था।

गोविंद काका पर स्वतंत्र संग्राम का भूत सवार था, घर की आर्थिक परिस्थिति सही नहीं होने पर भी वे स्वतंत्रता आंदोलन में हिस्सा लेने लगे। जीन भी स्वतंत्रता सेनानियों की में बात कर रहा हूँ, वे ज्यादा तर पढ़े-लिखे नहीं थे। हर एक स्वतंत्र सेनानी मोल मजदूरी करके ही पैसे पेट भरा करते थे, छोटे-छोटे व्यवसाय जिस प्रकार मेरे पिताजी की सामान्य चाय की दुकान थी। रामभाऊ आढाव मोंढे में मजदूरी करता था। हमारे गोविंद काका कदम छोटे मोठे व्यवसाय करते, सदाशिव काका तो न खेती न बाड़ी, वे कुछ दिन हार्डवेयर की दुकान से मेहनती परिवार, आगे वह रेलवे के पुराने कोयले पर चलने वाले इंजन की जालिमा कोयला व राख इस प्रकार का व्यवसाय करते थे। उनके गुन गान सेलु के सभी लोग भली भाती जानते हैं। वे भी कोई श्रीमंत व्यक्ति नहीं थे, इन सभी स्वतंत्र सेनानियों पर भांगडियाजी का आशीर्वाद था।

मेरा कहने का तात्पर्य यह है कि कुछ-कुछ स्वतंत्र सेनानियों को प्रसिद्धि नहीं मिली। वे कालचक्रों की आड़ में चले गए, फिर भी सब का मार्ग अलग-अलग था पर मंजिल एक ही थी। हमारे खोपसे काका, स्वतंत्र सेनानी वे, हर एक व्यक्ति को शासन के बारे में जानकारी देते थे। वे आजादी तक कर्मयोगी बने रहे। उन्होंने अपने समाचार पत्र बाँटना बंद नहीं किया। इतना शालीन व्यक्ति मैंने आज तक नहीं देखा, हर व्यक्ति को मदद कार्य के लिए तत्पर।

मेरे जीवन का यह पहला संस्करण है। आगे, मैं पूरे स्वतंत्र सेनानियों के जीवन पर प्रकाश डालूंगा। कुछ-कुछ योद्धाओं की कहानी और चरित्रों को लिखने से हमारे अंदर की देशभक्ति और स्वाभिमान जागता है। हमारे पिताजी के सहपाठी और भी बहुत सारे लोग हैं, हमारे गाँव (मेवाड़) से जुड़े हुए। पिताजी हैदराबाद मुक्ति संग्राम और शंकरजी मेहता गोवा मुक्ति संग्राम में सहभागी थे। शंकरजी असल में राजस्थान से थे, पर अपने उदार निर्वाह के लिए महाराष्ट्र आना पड़ा। उन्होंने बहुत ही हिम्मतवाले थे। मूलतः स्वाभाव ऐसा बन गया था कि सब कुछ अपने वतन का है और हर चीज उन्होंने कुर्बान कर सकते थे। आजादी के समय ऐसे हालात थे कि अपने भारत में से कोई अलग न रह जाएं, अंग्रेज़ों की बदौलत अखंड भारत को खंड-खंड न कर सकें, यही प्रत्येक स्वतंत्र सेनानी को इच्छा थी, कि भारत माँ की काया फिर से तैयार होगी, चाहे सजा हो (जयपुर को) जम्मू-कश्मीर के राजा हो, हैदराबाद, गोवा इत्यादि रियासतें सरदार पटेल की बड़ी मेहरबानी से फिर से जुड़ गईं, सं 77 का विभाजन, भारत का बड़ा ही दुखद था। अब मैं हैदराबाद स्वतंत्र संग्राम की शुरुआत करता हूं। पहले हिंदुस्तान की स्वतंत्रता सं 1938 और 1942 और आखिरी पड़ाव 1947 में, करीब 200 स्वतंत्र सेनानियों से ज्यादा सहभागी थे। 7 अगस्त 1947 को इन्होंने बाजार हाट मोंढा में स्वतंत्रता के यज्ञ की नीव रखी, उस समय करीबन 150 लोग शामिल हुए।

हैदराबाद स्टेट कांग्रेस की स्वतंत्रता की लड़ाई शुरू की गई थी। उस समय रेलवे मार्ग पटरी दो बार उखाड़ फेकी गई और रेलवे मार्ग में विघ्न स्थापित किया गया, जहाँ से रेलवे मार्ग परभणी से होकर गुजरते थे। 1947-48 में लोह मार्ग और संचार अवस्था (टेलीफोन) में बड़ा नुकसान किया गया, रेलवे पूल उड़ाने पर भी विचार कर रहे थे कि उन्होंने यथार्थ को कर दिखाएं। मानवता और सेलु के बीच जीनेर लगाकर लोहमार्ग उड़ाया गया, और विशेष रूप से मेरे पिताजी के होटल में उनके साथी परशुरामजी गैना, विडडूरोट गैना, और भागीरथी गैना ने रेलवे की पटरी निकालकर रेलवे का आवागमन बंद कर दिया। इन गैना परिवार मूलतः राजस्थान के जयपुर से थे। इन सभी कार्यक्रमों में 17 स्वतंत्र सेनानियों ने भाग लिया, जिनमें इन स्वतंत्र सेनानियों का मुखिया परशुरामजी गैना को पुलिस ने पकड़ लिया। इनका मुखिया पुलिस के हाथ लगने के बाद उनकी पिटाई की गई। उनकी पिटाई, दुर्व्यवहार, भूखे प्यासे रखना, शारीरिक और मानसिक तकलीफ देना, क्योंकि जो उनके साथीदार हैं, उनका नाम उजागर करने के लिए असहाय कष्ट दिया गया।

हैदराबाद का भारत में विलीनीकरण के लिए हैदराबाद स्टेट कांग्रेस आंदोलन करके, उस समय रजाकार ने कुछ मवाली...

गुंडों को बेफाम छोड़ दी गई थी। इनमें से बहुत सारे घर लूटे गए गांव के, जिनका शवयात्रा गांव के श्मशान भूमि में बदल दिया गया। हैदराबाद का रजाकार, मवाली खुद को शेफेह सलाहार कहने वाला व्यक्ति, ने जातियों के भेद का प्रकोप भाषण किया, जिसमें हिन्दुओं का सरेआम कत्ल करने की चेतावनी दी, और फिर चल पड़ा (जिस प्रकार कुछ समय पूर्व जम्मू और कश्मीर में आतंकवादियों ने पंडितों से कहा कि कश्मीर छोड़ दो और अपनी बहुबेटियाँ यही रहने दो)। इस आंदोलन की स्थापना स्वामी रामानंदजी ने हैदराबाद से की थी। इस आंदोलन का मुख्यता औरंगाबाद के गोविंद भाई सराफ और सेलु से चारठानकरजी सेलु के स्वतंत्र सेनानियों को रहत दिखाई, जिससे आंदोलन के कार्यक्रम में नया जोश भर गया और आंदोलन उग्र हो गया। इतिहास अगर दोहराता है, तो हैदराबाद का निजाम क्रूर कर्मी था, जहां की बहुसंख्यक जनता हिन्दू थी और निजाम मुस्लिम था, इसमें सबसे बड़ा कोई मकार था। वह अंग्रेजों के देश का खाया पीया लूटा, फूट गिरा कर चला गया क्योंकि उसने हिन्दुस्तान को स्वतंत्रता तो दे दी, पर 600 रियासतों का पुनः अपना हक्क दे कर चला गया। 600 रियासतों में एक हैदरबाद भी था। हैदराबाद की निजाम का साम्राज्य कर्णाटक, मराठवाड़ा, तेलंगाना तक फैला हुआ था, जिसके सामने शर्तें रखी गईं और उसने भारत सरकार के सामने कुछ शर्तें रखीं, जो इस प्रकार हैं;

1. हैदराबाद का सैन्यबल १० हज़ार से बढ़ा कर १८ हज़ार करने की अनुमति दे।
2. राजकार्यों को रियासतों पर तीन महीने का अवधि दे, इन संघटनाओं पर बंदी न डाली जाये।
3. अगर कोई बड़ी दुर्घटना हैदराबाद में हो, तो उसी समय भारत हस्तक्षेप कर सकेगा, अन्यथा व किसी प्रकार से निज़ामिया क्षेत्र में हस्तक्षेप ना करे।
4. हैदराबाद निज़ाम अपनी घटना स्वयं लिखेंगे, सरकार की स्थापना निज़ाम सल्तनत ही करेगी।

इन सभी शर्तों पर भारत सरकार ने मान्यता दी। भारत सरकार अंग्रेजी के दबाव में आने के कारण मजबूरन यह शर्तें माननी पड़ीं। फिर भी इतना सब कुछ करने के बाद भी निजाम सरकार ने ना कह दी। इन करारों के बाद, माउंट बेटन की करार पत्र झुड़काने के पश्चात् नेहरूजी ने यह कहा अब कोई निजामों से वार्तालाप नहीं होगी। तभी जयप्रकाश नारायणजी के पास यह संदेश पहुंचा था। तब जयप्रकाशजी ने एक प्रसिद्ध पत्रिका निकालकर यह कहा कि स्वामी रामानंद तीर्थ के हाथों में सत्ता सोपा जाए और बिना किसी शर्त के हिंदुस्तान में शामिल हो, तथा जो लूट पाट पुलिस और सेना के द्वारा की गई है, वह रजाकारों और गुंडों द्वारा की गई रकम को वापस किया जाए और अत्याचारियों को कठोर शिक्षा मिले। निजाम और भारत का संघटनात्मक खेल बिगड़ रहा था। नेहरू जी माउंट बेटन के करार को अपनी कमजोरी बनाए रखने में सक्रिय रहे। माउंट बेटन का झुकाव निजामों की तरफ ज्यादा था। हम तुम पर अन्याय नहीं होने देंगे, यह वाक्य तब माउंट बेटन ने निजामी सल्तनत को कहा (अब तो बंदर के हाथ में लड्डू वाली बात थी)।

एक साल तक वार्तालाप सुरु था, पर निजाम झुकने को तैयार नहीं थे। उधर, हैदराबाद के लोगों में असुरक्षितता, आर्थिक संकट और सामाजिक संकट के कारण जनता पूर्ण रूप से भयभीत हो चुकी थी। निजाम और रजाकार एक ही सिक्के के दो पहलु थे, निजाम हर समय दिल्ली होकर वार्तालाप करते थे, वहां वार्तालाप बहुत अच्छी रही यह कह कर निकलता था। कहने के बाद हैदराबाद को आते ही हर बार करार का कोई मायने नहीं रखता और साफ शब्दों में किसी प्रकार से भारत से वार्तालाप ठीक नहीं हो रहा था। नेहरू जी ने अपने भाषण (मद्रास, चेन्नई) में कहा था कि हैदराबाद के निजाम डाकू, गुंडे, चोर, उच्चक्के जैसा व्यवहार करते हैं और उनकी किसी भी प्रकार की राजनीतिक व्यवहार है ही नहीं। सिर्फ वही बात कहते हैं कि हमें हैदराबाद संस्था मुक्त चाहिए, निजामों के जुल्म दिन बा दिन बढ़ते ही जा रहे थे। हैदराबाद की जनता का बेहतरीन हालत खराब हो गई थी, विशेषकर वहां पर रहने वाले सनातनी हिन्दुओं के घर-द्वार लूटमार कर रहे थे। बच्चियों को घर से उठा ले जा रहे थे, महिलाएं असुरक्षित हो गई थीं, जहां पर उनकी सत्ता थी सभी जगह यही हाल था। उसमें से सिपाही दारोगा पर मुसलमान गुंडों पर किसी भी प्रकार का भय नहीं था। जितना भी हिन्दुओं को चल सके उतना वे चल रहे थे। जैसे की अभी तालिबान जिस प्रकार अफगानिस्तान में दोहरा रहा है, जैसे की पाकिस्तान अभी भी हिन्दुओं को त्राहि त्राहि करके छोड़ दे रहा है। १९४७ में हिन्दुओं की लोकसंख्या पाकिस्तान में २० प्रतिशत थी और अब वह दो प्रतिशत नहीं रही है। ऐसे में वह किसी भी प्रकार के धर्मांतरण के लिए बाध्य किया जाता है या फिर उनकी लड़कियों को उठा कर जबरन शादी करवाई जाती है। निजाम में अपने हिन्दुओं को संपत्ति से ज्यादा अपने बहुबेटियों का खतरा महसूस हो रहा था।

१५ अगस्त १९४७ को निज़ाम ने आजाद हैदराबाद का झंडा लहराया, उसी समय परभणी में रजाकारों ने भव्य जुलूस निकाला। इस समय हिंदुस्तान मुर्दाबाद के नारे लगवाए गए और कहा गया, "हिन्दुओ, हमारा हैदराबाद छोड़ चलो जाओ।" पाकिस्तान एवं भारत के विभाजन होने के बाद जो मराठवाड़ा व अन्य प्रदेशों में मुसाहिर का करार देते हुए हैदराबाद के मुस्लिम नीच जाति के समझने लगे, जैसे की पाकिस्तान में आज भी भारतीय मुस्लिमों को मुजाहिर कह कर बुलाया जाता है। मराठवाड़ की मुजाहिर मुस्लिमों को हैदराबाद मुस्लिम सैनिक में भर्ती करवाते और उनसे ही उनको आगे बढ़ाकर मराठवाड़ा भाइयों से ही युद्ध करवाते थे। घिनौना काम करने के लिए उनपर दबाव डाला जाता। इस

कारस्थान में काशिम रजवी और निज़ाम के राजकुमार ने यह योजना बनाई हेतु पुरुस्कृत हिन्दू मुस्लिमों में दंगे करवाकर हैदराबाद आने को मुजाहिरों को कह रहे थे। पर यहाँ की भोली भाली जनता, जनार्दन सभी धर्मों के लोगों ने जाने से इनकार कर दिया (जैसे की भारत का और पाकिस्तान का विभाजन हुआ तब खान अब्दुल गफार खान ने बापू से यह कहा तह आपने हमें भेडियों के हवले में कर दिया)।

स्वतंत्र सेनानी ने हैदराबाद स्टेट कांग्रेस का झंडा मजबूत हाथों में पकड़ा था, इसलिए निज़ामों की कोशिशें नाकाम होती गईं। विशेषकर, इन्हें मराठवाड़ा के प्रजा ने बड़ा साथ दिया। इन निज़ामों से दूर मुंबई में स्वतंत्र सेनिकों ने कार्यालय बनाया गया और इस लड़ाई की धारा तेज करने के लिए हिंसक मोड़ पर आ पहुंची!

तालिका भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान संगठनात्मक व्यवस्थापन एवं कार्यालय स्थापना :

क्रमांक	विषय	विवरण
1	**व्यवस्थापन भार**	स्वतंत्रता आंदोलन के संगठनात्मक प्रबंधन का उत्तरदायित्व निम्न व्यक्तियों पर था:
		• **अंतरावजी भालेराव** — मुख्य व्यवस्थापक (सेलु)
		• **वाघमारे जी कुलकर्णी** — नियोजित सदस्य
		• **परतुरकर जी नाना अम्बेकर** — सहसमन्वयक-
2	**स्थापित कार्यालयों की संख्या**	कुल तीन क्षेत्रीय कार्यालय स्थापित किए गए थे।
3	**कार्यालयों का विवरण**	
	(1)	**आंध्रप्रदेश – विजयवाड़ा (तेलंगाना क्षेत्र)**
	(2)	**कर्नाटक – गदग**
	(3)	**मराठवाड़ा – मनमाड**

इस तरह, हैदराबाद के सरहद के बाहर कार्यालय स्थापना किए गए। इन सभी में मेरा परभणी जिले के संघर्षमय और हिस्ट्रीक उत्साही सैन्य सामग्री सहित मान्यवर परभणी के ज्येष्ठ और लड़ने वाले स्वतंत्र सैनिक विनायक रावजी चारटानकर को अध्यक्ष मुकर्रर किया गया। दादा साहेब चारठानकर, विनायकरावजी चारठानकर, और गंगाप्रसाद अग्रवाल ने सैन्य भर्ती के लिए परभणी जिले में प्रचार किया। इन सभी लोगों के भोजन-पीने की व्यवस्था सेलु में मोंढे के व्यापारियों ने की। इस समय मध्यप्रदेश के रविशंकरजी शुक्ला और गृहमंत्री द्वारका दासजी मिश्रा ने सैन्य साहित्य को नागपुर और मुंबई से भेजा था। इसी तरह, सैन्य साहित्य का गोदाम वाशिम जिले में था। जैसी मददमुंबई से अपेक्षित थी वैसी नहीं मिल रही थी। इनमें मेरे पिताजी के परम मित्र स्वतंत्रता सेनानी सदाशिव काका चौधरी, हेडमास्टर अनंतरावजी, और शंकरलालजी पटेल तीनों सेलु के निवासी रहे और इन्हें मुंबई में पकड़ा गया उसी समय दृढ़ संकल्प वाली महिला श्रीमती गीता बाई चारठानकर, जोशी बाई, और वसंत काका नीरभोरकार इन्हें रागे हाथ, बंदूक, जेनेटिक, बम इत्यादि सामग्री के साथ पकड़ी गईं। कुछ लोग मुंबई में और कुछ मनमाड़ में पकड़े गए। ये सभी स्वतंत्र सेनानी सेलु के निवासी थे। उसी समय हमारे पिताजी स्वतंत्र सेनानी को दो साल की कठोर दंडात्मक सजा सुनाई गई थी, और उनके साथीदार सभी जेल में बंद थे। उस समय गोविंद भाई सराफ की पिताजी से मुकालात हुई थी। जब हमारे पिताजी अपने जिले की रोचक कहानी सुनते हैं तो शरीर की रौंगतें उठने लगती हैं। न तो सही ढंग से खाना-पीना, न रात्रि के समय आराम करना, रात में छापा डालने का डर, उस समय वह दिन हमने कैसे गुजारे यह समझो की हमारे पर ईश्वरी कृपा ही थी। उस समय हमारे पिताजी कहा करते थे, "संघर्ष के

बाद जीत की खुशी कुछ और ही होती है, वे कहते थे, "बिना कुछ किए कुछ भी हासिल नहीं हो सकता।" इस पर मुझे हमारे पाठ्यक्रम में संस्कृत का श्लोक याद आया जो इस प्रकार है

उद्यमी: सिद्धांती: कार्यना न मनोरथे।

सुप्तस्य सिंह प्रवेश, अंति न मूखे मृगा।।

अर्थात, यह कि सोए हुए सिंह के मुख में जिस प्रकार हिरण कभी नहीं गिरता, उससे शिकार पर जाना ही पड़ता है। हमारे पिताजी की प्रघाड़ श्रद्धा कर्म पर ही थी, उन्होंने स्वतंत्र सैनिक के रूप में १९४२ से १९४८ तक कार्य किया। छह वर्षों में वह करीबन दो बार जेल यात्रा कर चुके थे, सत्याग्रही के रूप में १९४२ में महात्मा जी के साथ उन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन में हिस्सा लिया, पर अब तीसरी जेल की महायात्रा बड़ी ही कठिन एवं संघर्षमय रही, वह हैदराबाद मुक्ति संग्राम था। उस समय पिताजी को दो साल की श्रमवास और कारावास की कड़ी सजा हुई। उनके सहकार्यमित्र मुंबई के आजाद मैदान पर बहुत बड़ी सभा हुई, ९ अगस्त १९४२ में महात्मा गाँधी का भाषण सुनने जहाँ से हो सके लाखों की तादाद में भाषण सुनने आए थे। इस समय सेलु के भंगड़ीयाजी जी मेघजी भाई, पद्मावत, सदाशिव काका चौधरी, विनायक राव जी, भलेरावजी अढावकदम, करीबन ७५ युवा, भाषण सुनने और कांग्रेस के अधिवेशन वहां पर पहुंचे। इस आंदोलन का नाम "करेंगे या मरेंगे" ब्रिटिश सरकार को अंतिम हिदायत दी गई थी। इसमें इस क्षेत्र में मनमाड़ से हैदराबाद तक स्वामी रामानंद तीर्थ अपने साथीदारों के साथ मुंबई में रहे, उसी समय मराठवाड़ा के स्वतंत्र सेनानियों को बंदी बनाकर जेल में डाला गया। इनमें से सबसे बड़े स्वतंत्र सेनानी औरंगाबाद के गोविन्द भाई सराफ व अन्य साथीदारों को जेल में रवानगी, इनमें हमारे पिताजी केदियों में बारात में शामिल सबसे बड़ा प्रश्न यह कि गद्दावर नेता जेल में होने के कारण आंदोलन थोड़ा सा सुस्त पड़ता नजर आया। मार्गदर्शन करने वालों की कमी मराठवाड़ा में महसूस हो रही थी। श्री रामानंद स्वामी जेल से छूटते ही हैदराबाद के लिए रवाना हो गए, वहां पर स्वागत के लिए निजामियों की फौज तैयार थी, उन्हें स्थानबद्ध किया गया, वह दिन था १६ अगस्त १९४२, उनका प्रथम और अंतिम संदेश यही था कि हैदराबाद भारत का अविभाज्य घटक है। जैसे ही भारत को स्वतंत्रता मिलेगी, हैदराबाद को भी स्वतंत्र करना होगा, उन्हें किसी भी प्रकार का औधा नहीं दिया जाएगा, हैदराबाद भारत का है और हमेशा रहेगा।

१९४२ में हैदराबाद में स्वामीजी की मदद करने के लिए अच्युतरावजी पटवर्धन को भेजा गया। सत्याग्रही में परभणी जिल्हा के बहुसंख्यक स्वतंत्र सेनानी थे इस समय फिर से ज्येष्ठ स्वतंत्र सेनानी गोविंद काका सराफ, वाघमारे काका, पाठक साहब एवं सय्यद हबीबबुद्धिं को गिरफ्तार किया गया। यह सब औरंगाबाद विभाग के प्रमुख थे इन सभी को अलग-अलग जेलों में रखा गया। श्री सय्यद हबीबुद्दीन को आंध्रा प्रदेश वारंगल में रखा गया। गोविंद भाई भी इसी जेल में भेजे गए थे, इन सभी साथियों को २२ माह जेल में रहने के बाद २४ अक्टूबर १९४२ को छोड़ा गया। इस समय महात्मा गांधीजी ने २२ दिनों का सत्याग्रह किया, सभी स्वतंत्र सेनानियों ने बापू का साथ देने का प्रणय किया। सब अन्न त्याग उपवास में शामिल हो गए। यह बात १० फरवरी १९४३ की है। यह सबसे बड़ा लक्षणिक अन्न त्याग सत्याग्रह रहा। १९४३ के बाद जैसे लहार सी चलने लगी। हम सबसे आगे परभणी कैंप १९४७ व १९४८ हैदराबाद स्वतंत्र सेनिको को हिंदुस्तान की आजादी पहले हैदराबाद को आजाद करने को कहा, उत्साह अंतिम चरम पर था। अब अगर स्वतंत्र सेनानियों की नामांकित सूची बताऊं तो समय बहुत लगेगा, इसलिए आपको में पाठ्यपुस्तक में लिखे गए नाम बतलाऊँगा, उनमें से १९३८ के स्वतंत्र संग्राम के सत्याग्रही ५५ से ६० तक थे, उनमें विद्यार्थी गण गिने जाए तो कुल मिलाकर (६०+३७) ९७ युवा एवं सत्याग्रही थे, यह "वंदे मातरम" समूह सत्याग्रही थे। अब आगे १९४२ का भारत छोड़ो आंदोलन कारी कारागृही कैदी की कुल संख्या 69 थी, इन सब के नाम इस तरह हैं!

तालिका :1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के कारागृही स्वतंत्रता सेनानी (कैदी)– कुल संख्या : 69

क्रमांक	स्वतंत्रता सेनानी का नाम	उल्लेख स्थिति /
1	मेघजी भाई पद्मावत	स्वतंत्र सेनानी
2	सदाशिव काका चौधरी	स्वतंत्र सेनानी
3	गोविन्द भाई कापा	स्वतंत्र सेनानी
4	विनायक रावजी चारठानकर	स्वतंत्र सेनानी
5	दादा साहेब चारठानकर	स्वतंत्र सेनानी
6	अनंत रावजी भालेराव	स्वतंत्र सेनानी
7	गंगाप्रसादजी अग्रवाल	स्वतंत्र सेनानी
8	नन्दलाल राठी	स्वतंत्र सेनानी
9	रामजी भांगड़िया	स्वतंत्र सेनानी
10	दिगंबर राव मगर	स्वतंत्र सेनानी
11	रघुनाथराव चारठानकर	स्वतंत्र सेनानी
12	बळीरामजी कुमावत	स्वतंत्र सेनानी
13	वासुदेवराव खरकर	स्वतंत्र सेनानी
14	सदनलाल	स्वतंत्र सेनानी
15	कन्हैयालालजी बाहेती	स्वतंत्र सेनानी
16	धोण्डू सीताराम सोनार	स्वतंत्र सेनानी
17	द्वारकालाल बाहेती	स्वतंत्र सेनानी
18	नागनाथ बोरुल	स्वतंत्र सेनानी
19	केशव देवधर	स्वतंत्र सेनानी
20	बालाजी टाक	स्वतंत्र सेनानी
21	राजाराम घिसाडी	स्वतंत्र सेनानी
22	नागनाथ चिमना जी जैन	स्वतंत्र सेनानी
23	किशन लोहार	स्वतंत्र सेनानी
24	पापन वार	स्वतंत्र सेनानी
25	तेली मानजी भीमराव	स्वतंत्र सेनानी
26	रामप्रसाद मांधने	स्वतंत्र सेनानी
27	त्रंबक बलैया	स्वतंत्र सेनानी
28	लहाने तुकारामजी	स्वतंत्र सेनानी
29	बाबुरावजी रेंगे	स्वतंत्र सेनानी
30	बद्रीनारायणजी शर्मा	स्वतंत्र सेनानी
31	चिल्के वार	स्वतंत्र सेनानी

32	साळे विश्वनाथ	स्वतंत्र सेनानी
33	बंशीलालजी शर्मा	स्वतंत्र सेनानी
34	पेड़गावकर	स्वतंत्र सेनानी
35	सखारामजी पल्की	स्वतंत्र सेनानी
36	खरकर बलिराव	**शहीद हुए**
37	दत्तात्रय फाटे	**शहीद हुए**
38	लक्ष्मण मुंजा	**शहीद हुए**
39	नारायण सखाराम पांडे	**शहीद हुए**
40	मनोहर पंत खेड़कर	स्वतंत्र सेनानी
41	शंकराव खांडेकर	स्वतंत्र सेनानी
42	श्रीमती उषा पांगरे	स्वतंत्र सेनानी
43	बाबूराव बेंद्रे	स्वतंत्र सेनानी
44	किशनराव देशमुख	स्वतंत्र सेनानी
45	किशन तेली	स्वतंत्र सेनानी
46	नागोबा माली	स्वतंत्र सेनानी
47	नाथ्रेकर	स्वतंत्र सेनानी
48	नामदेव बांगर	स्वतंत्र सेनानी
49	ब्रम्ह सेन राठोड	स्वतंत्र सेनानी
50	बबाप्पा वेदनाथ	स्वतंत्र सेनानी
51	जग्गनाथ तेली	स्वतंत्र सेनानी
52	हरिभाऊ शिकारे	स्वतंत्र सेनानी
53	अम्बादास जोशी	स्वतंत्र सेनानी
54	बाछे वार	स्वतंत्र सेनानी
55	लक्कम राव	स्वतंत्र सेनानी
56	कुरुंदकर अम्बादास राव	स्वतंत्र सेनानी
57	नारायण राव	स्वतंत्र सेनानी
58	लक्ष्मण सदाशिव वायकर	**शहीद हुए**
59	मोहन मूलचंद मोराक्या	**शहीद हुए**
60	रामचंद्रराव पाठक	**शहीद हुए**
61	नागनाथ बोरुल	स्वतंत्र सेनानी
62	रामभाव कवडे	स्वतंत्र सेनानी
63	वासुदेव खारकर	स्वतंत्र सेनानी
64	अमृतराव अम्बेकर	स्वतंत्र सेनानी
65	दीपाजी पाटिल (आखाड़ा बालापुर)	स्वतंत्र सेनानी
66	तोलाराम चव्हाण	**शहीद हुए**
67	गणपतराव ऋषि	स्वतंत्र सेनानी
68	गोविंदराव देशमुख	स्वतंत्र सेनानी
69	रामभाऊ अढाव	स्वतंत्र सेनानी

सन **1942** का भारत छोड़ो आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का सबसे निर्णायक और जनआंदोलनकारी चरण था। इस आंदोलन की गूंज केवल दिल्ली या मुंबई तक सीमित नहीं रही,

बल्कि मराठवाड़ा के छोटे-छोटे नगरों और गांवों में भी इसकी लहर दौड़ गई। इन्हीं में से एक था — **सेलू**, जो उस समय स्वतंत्रता सेनानियों की कर्मभूमि के रूप में प्रसिद्ध हुआ। इस तालिका में दिए गए **69 स्वतंत्रता सेनानी (कुल 69 कारागृही सहित)** वे महान विभूतियाँ हैं जिन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान ब्रिटिश शासन की अमानवीय यातनाएँ सहन कीं, कारागारों में बंद रहे, और देश की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों का बलिदान दिया।

इनमें से कुछ वीरों — जैसे **खरकर बलिराव, दत्तात्रय फाटे, लक्ष्मण मुंजा, नारायण सखाराम पांडे, लक्ष्मण सदाशिव वायकर, मोहन मूलचंद मोराक्या, रामचंद्रराव पाठक और तोलाराम चव्हाण** — ने मातृभूमि की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। ये नाम आज भी उस युग की अमर गाथा सुनाते हैं, जब न हाथों में हथियार थे, न साधन, केवल अदम्य देशप्रेम और स्वतंत्रता की ज्वाला थी। मराठवाड़ा के इन सेनानियों ने यह सिद्ध किया कि भारत की आज़ादी केवल एक राजनीतिक उपलब्धि नहीं थी, बल्कि यह करोड़ों भारतवासियों के त्याग, बलिदान और अद्वितीय साहस का परिणाम थी। उनके योगदान से न केवल मराठवाड़ा बल्कि सम्पूर्ण भारत गौरवान्वित है।

आज भी जब इन नामों का स्मरण होता है, तो उनकी गाथा आने वाली पीढ़ियों को यह संदेश देती है —

"स्वतंत्रता किसी एक का उपहार नहीं, यह असंख्य बलिदानों की शिखा से प्रज्वलित ज्योति है।"

इन स्वतंत्र सेनानियों में सत्याग्रही जेल भोगे हुए हुतात्मा हुए और भूमिगत सभी का विवरण देने में मैं असमर्थ हूं, परंतु पिताजी की डायरी से जो ज्ञात हुआ वह मैं यहाँ लिख रहा हूँ। स्वतंत्र सेनानी मेघजी भाई पद्मावत ने एक डायरी लिखी, लेकिन कुछ कारणों के चलते उसे छप्पा नहीं सका गया। मेघजी भाई ने छठी कक्षा तक ही पढ़ाई की थी, लेकिन उन्होंने अपने देश के समर्पित भाव से अर्पित किया। उन्होंने साधारित व्यक्ति के रूप में स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया। पर उन्हें यह ज्ञान नहीं था कि यह किस प्रकार की आजादी है, क्योंकि सदियों तक गुलामगिरी के कारण उनको यह ज्ञान नहीं था। इसके बावजूद, उन ग्रामीणों को यह मालूम था कि निजाम के सैनिक रजाकार उनकी बहनों को उठा लेते और लूट-पाट करते हैं, और उन्होंने इसका बदला लेने के लिए स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल हो गए। इस प्रकार, बद्मावे ने इस आंदोलन में स्वतंत्र संग्राम में परिवर्तन का सारांश बनाया।

हमने हमारे पूज्य पिताजी से पूछा कि हम 800 साल तक गुलाम रहे, 200 साल तक ब्रिटिश के गुलाम रहे, फिर भी इतने बड़े देश में छोटे छोटे गाँवों ने इस आंदोलन में कैसे जुड़ गए, हिर प्रांत की भाषा में आग लग जाई और भाषा अलग-अलग स्वाद कैसे किया गया, इस पर पिताजी ने एक ही वाक्य में कहा, "ज़मीं से जुड़े हुए नेतागण और सर्वोपरि महात्मा गांधी।" क्योंकि इतने प्रसार के बावजूद ऐसे चमत्कार होने लगे कि लोगों को उनकी प्रांतिक भाषा में समझाने की आवश्यकता हुई। स्वतंत्रता का अर्थ उन चार साथीदारों की तरह होता है, जो महाराणा प्रताप के साथ अकबर के खिलाफ युद्ध के लिए तैयार हो गए थे। इसलिए स्वतंत्रता का महत्व गुलाम राष्ट्र से पूछें (जो आज भी करीब 80 राष्ट्रों में गुलामगिरी में हैं) और अपने पड़ोसी मुल्क चीन, जो कम्युनिस्ट हुकूमत का शासन करता है, पर भी यह पूछें कि आप आज नौकरी पर हैं तो कल आपको रखा जाएगा या नहीं, इसका मालूम नहीं है। यह देश आज भी 80 लाख मुस्लिम भाइयों को नमाज़ न पढ़ने देता है, रोजा, दाढ़ी, और आप उस देश में नहीं रख सकते। यह गुलामगिरी हुई है। इसलिए "मेरा भारत महान" इस सनातन मुल्क की जो कोई भी तारीफ और वर्णन करे, वह बहुत कम है। आप पूछ सकते हैं (यह विषय छोड़कर कहाँ भटक रहे हैं) तीन ऋतुओं का देश, सभी का पंछीयों की भट्टी, स्वच्छंद विहार, सभी धर्म-पंथ वर्ण जाति के लोगों

को एक ही धागे में पिरोते हुए, माला इतनी मजबूत कि कोई उसे टूटा नहीं सकता। कभी-कभी मन जाग उठता है।

पिताजी, हमारे मुल्क के पुराने नेताओं में विदा सावरकर, गांधीजी, नेहरुजी, दादाभाई नौरोजी, सुभाष बाबू, चंद्रशेखर आजाद, लाल, पाल, बाल नेता इत्यादि बहुसंख्यक स्वतंत्र संग्राम सेनानियों को प्रणाम करने की एक जगह उठती है। पिताजी और गंगा प्रसाद अग्रवालजी (वसमत) इन व्यक्तियों की जबरदस्त बौद्धिक क्षमता के लोग बिना रुके 12 से 15 घंटे तक स्वतंत्र संग्राम पर बातचीत कर सकते थे। इतनी शक्ति, इतना अभ्यास, हर वक्त हर पहलू में इन्हें याद रहता था। स्वतंत्र सेनानी ने मराठवाड़ा के तीन उग्र आंदोलनों में, 1. सत्याग्रह मार्ग, 2. लोहमार्ग की पटरी को उद्धवस्त करना (शस्त्र मार्ग), 3. मराठवाड़ा की महुआ के वृक्ष और ताड़ी के वृक्षों का जंगल नष्ट करना, इस सब को (इन सभी वृक्षों के तनों से नशीले पदार्थों जैसे कि मदिरा, ताड़ी इस तरह से बनाया जाता है)। सत्याग्रह में आपको पहले ही बता चुका हूँ, लोहमार्ग पटरी और निजामों के कार्यालयों, सरकारी दफ्तरों, व दरोगा के थानों पर अचानक हमला करना। इन सभी के जो सत्याग्रह भूमिगत थे, उन्होंने इन सभी को (स्वतंत्र सेनानी) बंदूकें, हथियारें, जेनेटिक बम इस प्रकार के रसाद साहित्य स्वतंत्र सेनिकों को पहुंचाया करते थे। इन सभी युद्ध साहित्यों से एक ही मकसद निजाम की जीतने भी सरकारी दरबारी पर हमला करना। आगे भूमिगत सेनानी स्वतंत्र सेनिकों को हमला करने के पश्चात उनको छुपने, खाने पीने की व्यवस्था करना, इस कार्य में भूमिगत करते थे। एवं इन सभी स्वतंत्र सेनानियों को निजामों के सुल्तानत से दूर ले जाना। इस तरीके से पूरी व्यवस्था भूमिगत स्वतंत्र सेनानियों द्वारा की जाती थी।

श्री स्वामी रामानंद तीर्थ को १५ अगस्त सं १९४७ में फिर से कैद किया गया। यहां के प्रति मंडल ने अब कार्यक्रम की रूपरेखा स्वतंत्रता के आंदोलन की कृति का विभाग अपने हाथों में ले लिया, इस आंदोलन में किसान वर्ग और छात्र-छात्राएं एवं महाविद्यालयों के विद्यार्थियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। इस जन आंदोलन की वजह से आंदोलन में अच्छी खासी धारा पकड़ ली गई। जनता जनार्दन के उठाव के सामने राजा-महाराजाओं का भी सिंहासन डोलने लगता है (अभी हाल ही में श्रीलंका और ईरान देश को लेकर देखा जा सकता है)। जैसे-जैसे किसानों का आंदोलन में साथ मिलने लगा, उस समय उग्र रूप धारण कर लिया गया, इस आंदोलन को खत्म करने के लिए २८ अगस्त १९४७ में हैदराबाद स्टेट कांग्रेस के बड़े नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। जब तक यहां आंदोलन ठमा नहीं तब तक उन्हें रिहा नहीं किया गया। महाराष्ट्र के प्रांतीक अध्यक्ष पेडगावकरजी मुख्यतः गिरफ्तार हो गए, परभणी जिले के स्वतंत्र सेनानी वकील साहब वासुदेव रे बसूले इन भी गिरफ्तार किए गए। अनेक स्वतंत्र सपूतों को गिरफ्तार किया गया। इस प्रांतीक आंदोलन की कमर टूट जाए, इस प्रकार का व्यवहार किया गया। सभी बड़े और अनुभवी लोगों को जेल में रवानगी कर दी गई। इसलिए आंदोलन ठमा सा गया (अगर कोई ग्वाला ही नहीं रहा तो पशु सब तीतर-बितर हो जाते हैं)। इस प्रकार निजामों ने अपनी चाल चली, फिर भी कुछ स्वतंत्र सेनानी छुपे हुए थे, उन्होंने बच्चे-बच्चे और किसानों को फिर से तैयार किया, इसमें प्रमुख गंगा प्रसाद जी अग्रवाल (वसमत), श्रीरामजी भांगड़िया (सेलू), दादा साहेब चारठानकर, अखाड़ा बालपुर के दीपाजी पाटिल (कलमनूरी), बाबुरावजी जामकर, काका चौधरी पद्मावत, परतूर के देसाई इत्यादि स्वतंत्र सेनानियों ने फिर से झंडा उठा लिया।

अब जंगल सत्याग्रह, यह वृक्षों का बलिदान क्यों कर देना पड़ा, इसकी भी एक कहानी है। महुआ यह वृक्ष राजस्थान, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र में बहुसंख्या में पाया जाता है। इनके फल बड़े मीठे स्वाद के होते हैं, यह प्रात: चार-पाँच बजे से वृक्ष से गिरना चालू होते हैं, सूर्योदय के बाद इनका गिरना बंद हो जाता है। महुआ का फल एकत्रित करने के बाद इन्हें सुनसान होने पर भी सदया जाता है। इनसे नशीले शराब बनाई जाती है। ताड़ी यह वृक्ष ज्यादातर मराठवाड़ा, आंध्र प्रदेश, कुछ भाग कर्णाटक का है इस वृक्ष से निकलने वाला दूध जिसे लोगों ने छाछ की उपमा दे सकते हैं, पर यह भी शराब से कम नशीली

होती है। उस समय इन वृक्षों की तोहमत आ गई, पहल कारण यह कि इनसे मिलने वाला निजामों को कर इन वृक्षों को उस समय कटाई किस सख्त मनाई थी। इससे निजामियों को बेहताशा कर मिलता था। किसानों के खेतों पुरे के पुरे इन वृक्षों का बागीचा तैयार हो गया था। पर उस समय निजाम के अध्यक्ष को तोड़े कोण इन वृक्षों के कारण उपजाऊ जमीन काम होने लगी इससे गेहूं, जवारी, करड़ी का उत्पादन काम होने लगा। ज्यादाती देखिए खेतीनका भूमि कर या लगान न देने पर यातना देने निजामों का अधिकार अलग सोचिए, करे तो क्या करे, एक तरफ बावड़ी, एक तरफ कुआ। फिर किसानों को आंदोलन में आने का स्वतंत्र सेनानी आग्रह कर रहे थे। किसान तो यह बातें अच्छी तरह से जान गए थे, अपना खेत, अपना वृक्ष का भार निजामों को क्यों दें, नशीली शराब और ताड़ी से युवाओं के जीवन पर भी गहरा असर डाल रहा था। यह आंदोलन गंगाप्रसाद जी अग्रवाल सं ४७ वसमत तहसील के वापटा ग्राम से शुरुवात की, वापटिकर शिंदे बहरजी भाई वायकर साहब सभी स्वतंत्र सेनानियों के सहयोग से इस आंदोलन के जुलूस को मार्गदर्शन मिला, परभणी का कर एक व्यक्ति, किसान, विद्यार्थी योद्धा, सेनानी बड़ी तादाद में उत्सुकता से आंदोलन में भाग लिया, यह उत्सव उत्साह से देखने ही बंद पड़ता था, सभी के कटाई के साधन - कुल्हाड़ी, फावड़ा, घेटी, फर्शीकरवत, इस प्रकार के साहित्य के साथ सभी किसान भाई जंगल के (महुआ और ताड़ी) के वृक्षों को तोड़ डाले। हिंगोली, वसमत, परभणी, शिंदे पांघरा में सिंधी के वृक्ष बहुत सारे थे, सभी के कटाई के साधन, कुल्हाड़ी, फावड़ा, घेटी, फर्शीकरवत, इस प्रकार के साहित्य के साथ सभी किसान भाई जंगल को (महुआ और ताड़ी) के वृक्षों को तोड़ डाले। निजाम सरकार ने इसे ध्यान में आकर कहा कि किसानों ने हर नशीले वृक्ष को तोड़ डाला है, तब उन्होंने पुलिस कार्रवाई की। कुछ सैनिक पुलिस वाले भेजे, पर वे जनता का उग्र रूप देखकर भाग खड़े हुए। इन आंदोलनियों में सं १९४२ से ४८ तक हमारे पूज्य पिताजी जुड़े रहे, जब स्वतंत्र सेनानी मेघजी दादा संग्राम की बात करते हैं, तो वे जरा आक्रोश ओजस्व में आ जाते हैं। वे कहते हैं अगर आज के समय में होता तो कई स्वतंत्र सेनानी शहीद नहीं होते। एक तरफ पूरा निजाम उसके सैनिक पुलिस बल उनके सामने यह ४०० से ५०० युवा सत्यग्रही क्या कर पाते, पैर हम उनके हौसलों को बार-बार सजदा करते हैं, इनकी हिम्मत हौसलों का कोई जवाब नहीं, पिताजी कहते हैं इस कहानी को मैं पूरी तरह से बयान नहीं कर सकता, एक मुझे इसपर एक संस्कृत श्लोक याद आ गया।

।। शैले: शैले: न माणिक्यं, मौक्ति कम न गजै: गजै:

साधवो न सर्वत्र चन्दनम: न वने वने ।।

इस श्लोक का अर्थ है कि जैसे हर समुद्र में माणिक्य और मोती नहीं मिलते हैं, और हर वन में चंदन के वृक्ष और हाथी नहीं पाए जाते हैं, उसी तरह हर गाँव में योद्धा नहीं आते। हमारे पिताजी कहते थे कि हर ग्राम में हमें योद्धा युवक ढूँढना पड़ता था, उससे स्वतंत्रता का अर्थ समझा कर संग्राम के लिए तैयार करना पड़ता था, जो व्यक्ति अपने घर-द्वार, स्नेही, स्वजन को छोड़कर सबको उनके हाल पर छोड़कर लोगों की भलाई के लिए निकल पड़ता है। ऐसे व्यक्ति को हम क्या नाम देंगे, खैर हम आध्यात्मिक क्षेत्र में नहीं जाना कहते हैं। बीच-बीच में हम बड़े महारथियों की कहानियाँ सुनाते थे। इनमें से महाराणा प्रताप और शिवाजी राजे की वंशावली एक थी, शिशोदिया घराना। फिर से पिताजी महाराणा के स्वतंत्रता संग्राम पर चर्चा करते थे। महाराणा की समाधि 12 की मीटर की ऊचाई पर स्थित स्वाभिमान के देवता के रूप में पूजा जाती है।

महाराणा प्रताप और शिवजी महाराज का इतिहास बताने की जरुरत नहीं है, फिर भी हर लेखक, कवि यह चाहता है कि उनका इतिहास पढ़े। और इससे सज्ञान ले, आज पाठशालाओं में इनकी जीवनी, इतिहास कथा बताना सही नहीं समझते। मैं छठी कक्षा में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, सगतडा,

मेवाड़ में पढ़ा। वहां पर कन्यालालजी सेठी की कविता "पातल और पीतल हरे घास की रोटी" छठी कक्षा में थी। उस विद्यालय के हर विद्यार्थी को मुख पाठ था, इसका कारण आप जानते हैं कि छठी कक्षा का विद्यार्थी यह कविता गुण गुणता था, सभी छात्र उसी तरह गुण गुनते हुए मुख पाठ हो जाती थी। इस कविता में न जान क्या रस भरा था कि यह कविता गाने और सुनाने पर आज हालत बदल गए हैं। कोई इतिहास के पन्नों को खोलकर देखना नहीं चाहता, इतिहासों से सबक लेना नहीं सीखता, जैसे कि महाराष्ट्र में "पोवाड़ा" (ओजस्वा भरा गीत) शहर गाता था और थोड़ी सी दूरी पर वही रुक जाते थे। आक्रोश भरा चेतनामय स्वाभिमान जाग्रत करने वाला शाहीर, एक अकेला लाखों लोगों में जागरूकति का काम कर जाता। पर अब यह सब इतिहासों में दफ़न हो चुका है। पढ़ाई से भी ज्यादा रस भरे "पोवाड़े", कविता अगर सामान्य जनों को ग्रामीणों में अपने देश प्रति आस्था निर्माण कर सकता है। ऊपरी कोड़ा ज्ञान किसी भी काम का नहीं है, जब तक आप तह तक नहीं जाएंगे, आपको पूर्ण रूप से जीवन समझ में नहीं आएगा। मैं सभी सहकारियों से निवेदन करता हूँ कि ये दो महापुरुष काहेर कक्षा, पाठशाला, मदरसा में भी पढ़ाया जाए।

मुग़लों की सल्तनत अखण्ड भारत में थी, और इसके राजा शहंशाह अकबर एक छत्र राज्य सभी प्रांतों पर शासन करते थे। महाराणा प्रताप का मेवाड़ यह पांच जिलों का ही प्रांत था। जैसे कि मराठवाड़ा, इन महापुरुषों ने सैन्य साहित्य की कमी व सैनिक कौशल के बावजूद इन मुग़लों को किस प्रकार रोका होगा, यह आश्चर्यजनक बात है। मुग़लिया सल्तनत के सामने मेवाड़ की सेना नहीं के बराबर थी, और इन पांच जिलों की जनसंख्या मिलकर भी वे मुग़लिया सल्तनत की सेनाओं के साथ बराबरी करने में असमर्थ थे।

राजा अकबर महाराणा को कहता था, "मेरे मुकाबले सिर्फ एक ही शेर है, वह है महाराणा। कुछ इतिहास करो," का कहना है कि मेवाड़ प्रांत को कब्जा करने के लिए अकबर को कोई वक्त नहीं लगता था। पर महाराणा के साथ संघर्ष करते-करते उन्होंने दूसरे राजपूताना राजाओं के गाल पर थप्पड़ जैसा था। महाराणा ने जिस प्रकार संघर्ष किया, वैसा किसी भी राजा ने संघर्ष नहीं किया (कुछ राजा योद्धा भी थे)। यह नहीं कि पृथ्वीराज चौहान अनेकों राजाओं ने मुघलों से संघर्ष किया, पर वे हार थक कर मुघलों से संधिवार्ता कर देते थे। बेटी विवाह डोला उठना, यह लानत भरी जीवन राजपूत बसर कर रहे थे, इन्हें हम क्या कहेंगे, मेवाड़ के राणाओं के साथी कोई भी लड़वाईया स्वतंत्र प्रेमी राजा भारत में नहीं देखा गया। भले ही महाराणा ने पराजय सही, फिर भी उन्होंने संघर्ष करना हार मानना कभी नहीं छोड़ा। कुछ खामियां हमारे भीतर भी होती हैं। देखने का तरीका अलग-अलग ढंग से होता है, जिस प्रकार रामायण काल में हनुमानजी और तुलसीदासजी दोनों ही राम भक्त थे तब।

नारद जी ने पूछा, "तुम्हें अशोक वाटिका में फूल कैसे नजर आ रहे हैं?" उस समय महाबली बड़े ही क्रोधित अवस्था में थे, तभी उन्होंने कहा, "मुझे सब लाल रंग के ही नजर आ रहे हैं।" नारद जी आगे जाकर संत तुलसीदासजी से पूछते हैं, "आपको यह फूल किस प्रकार नजर आ रहे हैं?" उन्होंने कहा, "बड़े ही शांति-प्रिय सफेद पुष्प नजर आ रहे हैं।" तुलसीदासजी का भाव रामजी के प्रति ऊत-प्रोत था। समय का फेर देखिए, गोस्वामीजी सफेद पुष्प कहते हैं और महाबली उन्ही को लाल पुष्प कहते हैं।

हिंदुस्तान की वीरता की कहानियाँ

हिंदुस्तान की वीरता की कहानियाँ खत्म ही नहीं हो सकतीं। इतना संघर्ष संसार में किसी ने भी नहीं किया होगा। हम फिर से स्वतंत्र संग्राम आंदोलन की और चल पड़ते हैं। पिताजी वर्त्तमान परिस्थितियों के बारे में जानते हैं, और यदि कोई अखबार में भ्रष्टाचार का उल्लेख होता है तो वे बहुत बेचैन हो जाते हैं। उनका कहना है कि यह देश उनका भी है और जनता भी उनकी है, फिर भी भ्रष्टाचार क्यों करते हैं, वे अपनी आने वाली पीढ़ियों को बर्बाद कर हो जाएगी। भ्रष्टाचारी लोग अपने बच्चों को दुखी कर रहे हैं क्योंकि अमाप धन घर में होने की वजह से बच्चों को न तो माता-पिता, स्वजन और देश की चिंता रहती है और वे बेरोजगार हो जाते हैं।

फिर से पिताजी उनके दिनों की याद दोहराते हैं, जब कभी उन्हें वर्त्तमान की परिस्थिति झांकोर देती है, वे सोचते हैं कि वर्त्तमान में ऐसे युवक क्यों तैयार नहीं हो पा रहे हैं। फिर भी पिताजी सोचते हुए कहते हैं कि ये बहुत बड़ा देश है, इसकी घड़ी जमते जमते जमेगी। उनका विचार उन्हें बैठने नहीं देता, "मैं मेरे गाँव से समाज प्रबोधन का कार्य शुरू करूँगा," ऐसा वे कहा करते हैं। पिताजी ने राजनीति में आने की इच्छा नहीं की, पर ग्रामीणों के आग्रह के खातिर आखिर उन्हें हिस्सा लेना पड़ा। उन्हें सेरिया गाँव का सरपंच चुना गया, वे हमारे गाँव के प्रथम सरपंच थे।

गाँव के प्रथम सरपंच:

सरपंच पुराने समय में सबसे बड़ा कार्य यह था कि गाँव में झगडे, तानते और कोई आपदा आती थी, तो उसका निपटार करना। उस समय ग्राम पंचायत में उत्पादन का कोई स्रोत नहीं था। उस समय जो सरपंच रहते थे, उनके घर में ही कंबल फर्श पर बिछी हुई रहती थी, गाँव के लोगों का आवागमन चालू रहता था, और केतली चूल्हे पर कभी भी भरी हुई रहती थी। यह स्वागत हमारे ग्रामीण भाइयों का था, हमारी माँ भी दिलदार महिला थी, किसी कोई चाय पिलाए बिना जाने नहीं देती।

मेघजी दादा व वाली बाई (पति–पत्नी) का प्रसार:

मेघजी दादा व वाली बाई, जो कि पति-पत्नी थे, का प्रसार अनेक गांवों में होने लगा। पिताजी के बड़े चचेरे भाई से चर्चा करके गांव का निपटारा किया करते थे। पांच वर्षों तक पिताजी ने सरपंच पद को

बड़ी ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठता से निभाया। आगे फिर से पिताजी की आर्थिक स्थिति कमजोर होने लगी, तभी दादी ने कहा, "संपत्ति हो तो देश भला, नहीं तो प्रदेश भला।" इस कहावत से पिताजी ने राजकरण में हिस्सा लेना बंद कर दिया, सरपंच की कमान बंद कर दी, और परदेश गमन का फैसला लिया।

मेवाड़ क्षेत्र में जन्म लेने वाला कोई भी व्यक्ति अपना गांव, मातृभूमि छोड़कर परदेश गमन नहीं चाहता था। पर जीवन का उदार निर्वाह के लिए और आर्थिक परिस्थिति वंश उन्हें अपना प्रांत छोड़कर दूसरी और कमाई के लिए जाना जरुरी था।

आज भी मेवाड़ क्षेत्र के ब्राह्मण, महाराष्ट्र में, राजपूत और पटेल (अहमदाबाद, गुजरात) में, बोहरा मुस्लिम समाज, दुबई और अबू धाबी इन देशों में कमाई के लिए जाते हैं। यह सिलसिला अब भी जारी है। पर मेवाड़ क्षेत्र का कुछ हद्द तक विकास हुआ है, लोग अब वही पर रह रहे हैं। पिताजी मेवाड़ के सेरिया ग्राम क्षेत्र में निवास करने लगे। महाराष्ट्र में फिर से आने के शहरों की हवा से अखबार, रेडियो, इत्यादि संसाधन होने की वजह से उनके ज्ञान में और भी तरक्की हुई।

महाराष्ट्र (महान राष्ट्र) की उपमा देने पर कोई एतराज नहीं होना चाहिए, यह संतों का प्रांत है। यहां पर बसे हुए ग्रामीण और शहरी पांडुरंग विट्ठल के भक्त हैं, यह प्रांत सब जाति, पंथ, धर्म, और बाहर से आए हुए पेट भरने के लिए प्रांतिक लोग इत्यादि को महान राष्ट्र अपने आँच में लिए खड़ा है। भारत में ऐसा कोई भी प्रांत नहीं होगा जो महाराष्ट्र में है, यहां पर रोजी-रोटी कमाई का जरिया दिया जाता है।

इस महान राष्ट्र में पांच ज्योतिर्लिंग एवं ३३ साधु, संत, वैरागी, सन्यासी से फला फूला प्रदेश है। यहां की जनता जनार्दन भी बड़ी ही भक्ति पंथ है (वारकरी संप्रदाय)। पिताजी कहा करते थे कि मेवाड़ यह मेरी देवकी मैया है, तो महाराष्ट्र मेरी यशोदा मैया किसी प्रकार का कोई भी संकट हो, फिर भी इन वारकरियों के मुँह पर प्रसन्नता छाई रहेगी। खेती उत्पादन के लिए भगवन विट्ठल इस भूमि पर बड़ी कृपा की है। इस धरा की मिट्टी में सुगंध है, बड़ी उपजाऊ जमीन सभी पशुप्राणियों, पक्षियों एवं मनुष्यों का पालन पोषण करने वाली यह धरती माँ है। हमारे पिताजी महाराष्ट्र का गान-गान करते हुए वे कभी भी थकते नहीं थे। ७ जून को मृग लगते ही वर्षा की बौछार वरुण देव कर ही देते हैं। हमारी सभी भाई-बहनें पढ़ाई-लिखे ज्यादातर महाराष्ट्र में हुई हैं। हम इस संस्कृति से धूल मिल गए हैं। पर कभी-कभी बड़ा अफसोस होता है जब यह लोग अपने प्रांत गाँव चले जाएं यह राजनीतिक लोग जब यह लोग कहते हैं तभीहमारा दिल अफसोस युक्त बैठ जाता है। जैसे कि एक बालक अपनी माँ से जुदा करने की बात करता है। तभी कान्हाजी की बात याद आती है (सब भूमि गोपाल की)। इस प्रदेश में किसी प्रकार की कोई तकलीफ नहीं है, न हमसे न ही यहाँ के लोगों से। फिर यह घिनौना राजनीति, यह लोग क्यों करते हैं, यह सामान्य समझ से परे है। हिंदुस्तान की जनता को महाराष्ट्र का इतिहास बताने की कोई आवश्यकता नहीं है। यह मेरी पुस्तक 'मेवाड़ क्षेत्र' में भी पढ़ी जाएगी, इसलिए मैं बार-बार महाराष्ट्र प्रदेश का वर्णन करता हूँ। हमारे पिताजी कहा करते थे, "प्रत्येक स्वतंत्र सेनानी पर उनका आत्मचरित्र घरवालों को लिखना चाहिए, जिस प्रकार हमारे सेनानियों ने पीड़ा वहन की यह संघर्षमय यात्रा लिखनी चाहिए, क्योंकि इस पर बहुत ही कम लिखा या पढ़ा गया है। पर दुर्देव यह की यह स्वतंत्र संग्राम सिमित होकर रह गया है। मैं पूरी लगन से ग्रामीण भाषा में जैसा बन पड़े, मैं आप तक पहुंचाने की कोशिश कर रहा हूँ, ताकि पूरा भारत जान सके कि बड़े योद्धाओं को बल इन छोटे-छोटे स्वतंत्र सेनानियों से मिला है। नीव इन्होंने रखी वर्णन करना कठिन है, कभी-कभी अपने विचार प्रकट करने के लिए शब्दों की रचना ही नहीं मिल पाती है।

महाराष्ट्र का नाम आते ही मध्य प्रदेश की सीमा पार करने के पश्चात तब इतना सुकून मिलता है कि हम घर पहुँच गए। यहाँ पार बड़े विद्वान लोग लोकमान्य तिलक, अगरकर, सावरकर, आम्बेडकर, विनोबा भावे इत्यादि विद्वान पैदा हुए। इसी प्रकार भारत वर्ष में सबसे ज्यादा संतों ने इस भूमि में जन्म लिया, ज्ञानेश्वर मौली, तुकाराम महाराज, नामदेव महाराज, गंगा खेड़के, जनाबाई, मुक्ता बाई इत्यादि संत। महाराष्ट्र यह बहुत ही बड़ा पर्यटन स्थल है। मुंबई यह भारत की आर्थिक राजधानी है, यहाँ के गुफाएं और उनकी कमाल की रचनाएँ की गई हैं। एक ही पहाड़ को तरासा गया है। एक ही पहाड़ में पूरा का पूरा खड़ा किया गया है, देवी-देवताओं का रूप भगवान गौतम बौद्ध की विलक्षण मूर्ति। यह हमारी कर्मभूमि है, उसका पूरा वर्णन करना असंभव सा है, फिर भी हो सके उठा उसका वर्णन करने का प्रयास करूँगा। जब हमारे पिताजी हर्षूल जेल (संभाजी नगर) में दो साल तक कड़ी सजा काटने के बाद रिहा हुए तब उन्होंने सभी स्वतंत्र सेनानियों, स्वजनों के साथ मराठवाड़ा घूमकर आए। पर संभाजी नगर का नजदीक का शिवालय, दौलताबाद का किला, अजिंता वेरूल की गुफाएं और घृष्णेश्वर ज्योतिर्लिंग जब कभी हमने उनसे पूछा कि हम भी उन गुफाओं में घूम फिरकर आएं हैं तब हम अपने पिताजी से इन तराशे हुए पत्थरों के बारे में कला देखते हैं। तब कुछ सामने बाद हमें वे फिर से बौद्धों की गुफाओं में लेकर गए, मार्गदर्शन करने वाला व्यक्ति साथ ही था। तब बुद्ध मूर्ति के पास हम जाकर रुके तब गाइड ने भगा वन बौद्ध के ऊपर आईने से प्रकाश डाला हमें एक ही मूर्ति में तीन कलाएं दिखीं, पहली जैसे उनके मुख पार प्रकाश डाला गया वे ध्यान धरना में मग्न थे, बाई और जैसे ही आईना घुमाया वे बड़े ही दुखी नजर आए और दाएं और घुमारे ही उनके मुख पर बड़ी प्रसन्नता नजर आई। एक मूर्तिक कला किस प्रकार रचना की होगी यह आश्चर्य ही लगा। बौद्ध के प्रतिमा परएक ही चेहरे पर तीन भाव अचंबित रह गए, जैसे कि इसकी रचना स्वयं विश्वकर्मा ने की है। इस मूर्ति को बनाने के लिए परमात्मा की कृपा बहुत जरुरी है। इस प्रकार, छोटे छोटे उदाहरणों के माध्यम से मूर्तियों का चमत्कारी वर्णन किया गया है। भगवान गणेश, विष्णु इत्यादि को एक ही पत्थर में पिरोकर कलाकार को वक्त और बुद्धि कितनी लगी होगी, पूरा पहाड़ खोदना, उसमें उसी प्रकार की मूर्तियां बनाना, बड़ी आश्चर्यजनक बात है। फिर भी, हम आगे बात करते हैं। आगे हम घृष्णेश्वर ज्योतिर्लिंग पहुंचे, जहां पर भी कला का नमूना दिखने लगा। मुगलिया सल्तनत ने इस मंदिर को पूरी तहस-नहस कर दिया, औंढा-नागनाथ का मंदिर भी तहस-नहस कर दिया। महारानी अहिल्याबाई होल्कर (रेबारी) धनकर समाज की महिलाएं फिर से मंदिरों जा जिर्णो द्वार किया। यहां पर जातियों को लिखने का कारण यह है कि सभी जातियों ने जिस प्रकार से हिंदुस्तान को मदद की इन् मंदिरों का निचला भाग कुछ वैसा ही है, उस पार कलाकृतियाँ आज भी मौजूद हैं। पहले पायदान पार घोड़ों का चित्र, दूसरे पायदानों पार हाथीयों का चित्र, तीसरे पायदान पार देवी-देवताओं का चित्रण (स्त्री-पुरुष) यह चित्र मैंने जहाँ भी ज्योतिर लिंग हेमाडपंती शिव मंदिर, वहां पर वह पार मुझे देखने मिले। फिर यह विचार आता है कि खजुराहों के मंदिर और ये क्या दर्शन चाहते हैं? मुझे ऐसा ज्ञात हुआ कि अपने विचार, अपनी श्रद्धा, अमीरी, हाथी घोड़ा महल, इन सभी विचारों को त्याग कर ईश्वरमें लीन हो जाना, सभी विचार मंदिर के बाहर छोड़ कर आना, यह हमारे पिताजी का उत्तरथा।

दूसरी ओर देखा जाए तो भगवान रजनीश (ओशो) कहते हैं कि अपने इंद्रियों का दमन मत कीजिए, सब भोग-वासनाओं से तृप्त होने के बाद ही आप ईश्वर में लीन हो सकते हैं (समाधि का रूप)। अब इन दोनों में से हमारी बुद्धि से यह सोचना है कि किसे सत्य कहें, किसे गलत। इसपर विनोबा जी का कहना था कि धर्म को अपनी बुद्धि की केची लगाओ, जो केची से कट जाता है वह असत्य मानिए, और जो अपनी बुद्धि से नहीं कटता है, उससे सत्य मानिए। अब इनमें से हमें किस प्रकार से सोचना चाहिए, यह हमारे ऊपर निर्भर करता है। हमारे पिताजी आध्यात्मिक वादी पुरुष थे, उन्हें योग के बारे में भरपूर ज्ञान था। वे कहते थे, "हेर चीज छोटी हो या बड़ी, हमें हर वक्त सीखा कर ही जाती है।" सिर्फ अपना नजरिया उस ढंग से चाहिए, मैं गंगा प्रसाद जी अग्रवाल से मिला, वे ज्ञान की खान थे, इतने बड़े ज्ञानी। जब वे किसी एक विषय पर बोलते थे, तो वह करीबन करीबन एक पुस्तक सी बन जाती थी। वे

ज्यादातर पशुधन कामधेनु के बारे में बहुत सी जानकारी रखते थे। ज्यादातर वे खा करते थे कि गाय इस देश में क्यों जरुरी है, इस पर वे ज्यादा भर देते थे। बड़े स्वतंत्र सेनानी होते हुए भी कोई अहंकार नहीं, सामान्य व्यक्ति की जिंदगी जीने पर उन्हें किसी प्रकार का गर्व नहीं, हर बच्चे, बूढ़े, नेता, व्यापारी, सब के लिए एक ही बोली, "देश भावना" से ओत-प्रोत, सभी स्वतंत्र सेनानियों में एक बात समान सी नजर आती थी कि वे बड़े शिस्त प्रिय समय बद्धता के पक्के रहते थे। मैंने ये प्रश्न अपने पिताजी से पूछे तब पिताजी ने कहा, "अगर समूह बलवान एक जुटा रखनी है तो ये बहुत जरुरी है। कठिन समय में निर्णय नहीं लिया गया तो पूरा सैन्य तीतर-बितर होने की संभावना रहती है।

सेनानियों को कई दिनों तक भूखा-प्यासा रखा जाता था, पार स्वतंत्र सेवी के सामने यह कुछ भी न था। स्वतंत्र संग्राम में डेट रहने के लिए यह बहुत ही जरुरी था जो बन पड़ा सत्याग्रह, रेल रोको आंदोलन, जेलमारो आंदोलन, वृक्ष तोड़ो आंदोलन। किसी प्रकार से स्वतंत्रता हासिल करना एक ही लक्ष्य, कोई स्वतंत्र सैनिक से आप मिलेंगे या देश के बारे में पूछेंगे, तो इन बुजुर्गों के चेहरे पार तेजससी आ जाएगा। गुलाबी छटा, बड़ी बड़ी आँखों का ओजस्वा, इनके चेहरों पर मैंने देखा है जैसे कि कोई बालक को अपना चाहिए खिलौना मिल जाए, उसकी खुशी अपरंपार हो जाती है। कुछ वैसे ही लक्षण हमारे स्वतंत्र सेनानियों के चेहरों पर नजर आते हैं।

जिसने जो सहा है, उससे ही अपने तकलीफ़ की जानकारी रहती है। कठिन समय में धैर्य रखना और रखवाना बहुत ही बड़ी बात है। जिस किसी व्यक्ति ने दुःख देखा ही नहीं, वह क्या कल्पना कर सकता है? अगर आपको यह सब जानना ही है, तो जब दो (मैंने सुनी हुई कहानी)स्वतंत्र सेनानी मित्र अपनी उजड़ी हुई गृहस्थी के बारे में चर्चा करते हैं, तो बिना बोले बताए उनके वार्तालाप सुनिए, आपको दुखों के बारे में सब कुछ समझ आ जाएगा। समय कभी रुकता नहीं, पर हाँ, कान्हा जी ने महाभारत में यह चमत्कार किया, बदलों की ओठ में सूरज को कुछ क्षण के लिए छिपा दिया। चलो, वह तो परमात्मा जो ठहरा, मूड मूड कर इन्हीं कथाएँ पर आ जाता हूँ, पर यह मेरा खुद का अनुभव कथन कर रहा हूँ। अभी हम मराठवाड़ा में ही घूम रहे हैं। अभी तो पूरे महाराष्ट्र के स्वतंत्र सेनानियों का लेखाजोखा बाकी है-, पर मैं यह मराठवाड़ा में ही सिमित रहूँगा। **मराठवाड़ा के स्वतंत्र सेनानी – सेलू की वीरभूमि**

तालिका: मराठवाड़ा के स्वतंत्र सेनानी – सेलू की वीरभूमि-

क्रमांक	स्वतंत्र सेनानी का नाम	उल्लेख भूमिका /
1	चारठानकर काका	प्रारंभिक स्वतंत्रता आंदोलन के अग्रणी योद्धा
2	सदाशिव काका	कारागृह यातनाएँ झेलने वाले उग्र सेनानी
3	अनंत रावजी	जनता में जागृति लाने वाले समाजसेवी
4	गोबा देशमुख	ग्रामीण क्षेत्रों में आंदोलन संगठित करने वाले
5	डॉमुलावेकर काका .	चिकित्सक होते हुए भी जनसेवा हेतु समर्पित
6	मेघजी भाई	निडर सत्याग्रही और जनता के प्रेरणास्त्रोत
7	वायकर साहब	प्रशासनिक स्तर पर जनजागरण में सहयोगी
8	नावडे काका	भूमिगत आंदोलन के सक्रिय सदस्य
9	कदम काका	संघर्ष के अंतिम चरण तक डटे रहने वाले सेनानी
10	रामभाव आढाव	स्वराज के प्रति समर्पण का अद्वितीय उदाहरण

सेलू नगर मराठवाड़ा की वह पुण्यभूमि है, जहाँ से स्वतंत्रता आंदोलन की लौ सबसे पहले प्रज्वलित हुई। इस भूमि ने अनेक साहसी और त्यागमयी सेनानियों को जन्म दिया, जिन्होंने अपने प्राणों की परवाह किए बिना देश की आज़ादी के लिए संघर्ष किया। तालिका में उल्लिखित ये सभी सेनानी — **चारठाणकर काका, सदाशिव काका, अनंतरावजी, गोबा देशमुख, डॉ. मुलावेकर काका, मेघजी भाई, वायकर साहब, नावडे काका, कदम काका और रामभाव आढाव** — अपने-अपने क्षेत्र में राष्ट्रसेवा के प्रतीक बने। इनमें किसी ने जेल की यातनाएँ सही, किसी ने भूमिगत रहकर कार्य किया, तो किसी ने शिक्षा और स्वास्थ्य के माध्यम से समाज को जागरूक बनाया। इन सबका योगदान केवल स्वतंत्रता आंदोलन तक सीमित नहीं रहा, बल्कि आज़ादी के बाद भी उन्होंने समाज निर्माण की दिशा में अमूल्य कार्य किए। सेलू के ये योद्धा न केवल **मराठवाड़ा** बल्कि सम्पूर्ण **भारतवर्ष के स्वतंत्रता संग्राम के गौरवशाली प्रतीक** हैं। उनके त्याग, साहस और सेवा से आज भी यह भूमि प्रेरणा प्राप्त करती है।

यह मेरे सेलू के स्वतंत्र सेनानी प्रमुखों के आंदोलन की शुरुआत सेलू से हो रही है, वैसे तो स्वामीजी ने १९३८ से १९४८ तक संघर्ष किया, पर हैदराबाद में, हैदराबाद से लेकर मराठवाड़ा तक तेलंगाना क्षेत्र में जनजागृति को बढ़ावा देने का कार्य प्रथम इन्होंने किया।

भारत स्वतंत्र होने के बाद, हैदराबाद का निज़ाम बिना लगाम के जैसा व्यवहार कर रहा था। उस समय, स्वामीजी कैदी थे, और कृति समिति के अध्याय ने महात्मा गाँधी को सन्देश भेजा कि भारत इस लड़ाई में समर्थन दें। महात्मा जी ने कहा, "अभी भारत सरकार और हैदराबाद के बीच वार्ता शुरू है। हम क्या कर सकते हैं?" इसके बाद, मध्य बिंदु पंडित नेहरू और सरदार से बातचीत करने का सुझाव दिया गया कि अपने आंदोलन को सत्याग्रह के रूप में जारी रखें और इसे और भी तेज करें। इससे आंदोलन को और तेज कर दिया गया। यह नहीं कि भारत सरकार को इन निज़ामियों के खिलाफ रजाकारी का अत्याचार, लूटपाट की रिपोर्ट नहीं थी, फिर भी कुछ कारणों से सरदार पटेल जी को धीरज रखना पड़ा और मुझे तुम्हारी आवश्यकता पड़ेगी। उस समय, सत्यग्राही को जितनी मदद हो सके, उतनी मदद भारत सरकार और मध्य प्रदेश सरकार कर रही थी। युद्ध सामग्री जो बनी वह मदद कर रही थी। इस बिंदु साहब ने अपने स्वतंत्र संग्राम के लड़ाई के समय के यादगार लम्हे की बातें बताईं। इस समय, भारत सरकार ने जो मदद की अगर मदद नहीं मिलती तो आंदोलन अस्त हो जाता। बिंदु साहब ने कहा, "मैं भी निराशा से मृत्यु तक पहुंच जाता, पर किस्मत ने वह भारत सरकार, मध्य प्रदेश सरकार का बहुमूल्य साथ मिला। आंदोलन सफल रहा, अब अध्याय बिंदु अकेले बच गए थे, क्योंकि स्वामीजी को जेल हो गई थी। मुखिया यही निर्णय लेने पड़ते थे और थोड़ा समय तकलीफों में रहता है जाहिर रहा, पर अंधकारों के बाद उजाला होना ही था। इसे वे भली भांति जानते थे। मेहनत रंग लाती है, यह बिंदु साहब के वचन थे।

भारत सरकार का हैदराबाद निज़ाम से वार्तालाप चालू किया गया था, तब स्वामीजी को ३० नवम्बर १९४७ को जेल से रिहा किया गया। पुनः चैतन्य भर उठा। स्वामीजी ने सर्व प्रथम अपने कैंप के सदस्यों का दौरा किया, वहां के सभी स्वतंत्र सेनानियों से वार्तालाप किया, उन्होंने घटित घटनाओं का विवरण भारत सरकार को भेजा गया। इस समय स्वामीजी भी बेरोजगार साहब और मराठवाड़ा सुपुत्र गोविन्द भाई सराफ यह साथीदार थे। श्री संत तुकाराम महाराज के आखाड़ा बालपुर के पास एक छोटा सा गाँव था, जहां इन महान संत की समाधि थी, वहां पर बहुत सारे भक्त उनके मेले में या यात्रा समूह में होते थे। तब महारष्ट्र के सभी संत (वारकरी सम्प्रदाय) वहां पहुंचते थे, तभी रजाकारों ने इन भले जनों पर गोलियाँ चलाईं और उन्हें मार डाला गया। करीबन छह व्यक्तियों की हत्या कर दी गई, उनकी दरिंदगी इतनी बढ़ गई थी कि परभणी जिले के बहुतांश गाँवों में रहने वाले निज़ामों के रजाकारों ने सातौना,

जिन्तुर, परतुर, वसा - यह देशपांडे जी का गाँव, वसा - इस गाँव में बीडबल नवाब जालिम और खान आलम - इन चारों ने बड़ी क्रूरता से देशपांडेजी और आबा कंठाल की हत्या की। इनमें सबसे बड़ा ही कुकर्म था अत्यन्त हत्या नीच व्यक्ति था। उन्होंने संध्या के समय डाका डाला, तभी देशपांडेजी और कंठाल ने प्रतिकार किया, उसी समय खान ने जोर जबरदस्ती निर्माण करके दहशत निर्माण की। उनके लिए औरतों को छेड़ना आम बात थी। इसी प्रकार जिन्तुर के सुथारों को पेसो की मांग की पर जब उन्होंने नहीं किया, तो उन्हें गोली मार दी गई। अब कौन-कौन से गाँव का हाल बताएं। यह घिनौने काम इतनी क्रूरता से किए गए थे कि लिखते हुए अपने हाथ थर-थराते हैं। सुथार को पहले बंदी बनाया गया, फिर उनके हाथ-पैर कुर्हाड़ी से कटे गए और अंत में गोली बार-बार दी गई, यह राक्षसी वृत्ति की लोग आज भी प्रत्येक देश में हैं, जीना, रहना, उद्योग, सब हराम कर रखा था।

महिलाओं की पढ़ाई तक को रोक लगा रखी थी। इतने हद्द तक कुकर्मता की बेटियों को विद्यालय तक भेजा न जाए, पर हुकुम यह कि औरतें औरत जातियों के डॉक्टरों से इलाज करवाएं, इनकी होशियारी तो देखिए। अब उन्हें पढ़ाई नहीं देंगे तो वह डॉक्टर कैसे बन पाएगी, यह नहीं जान पा रे थे कि महिलाएं पुरुषों से ज्यादा बुद्धिमान होती हैं। वह हम सभी के लिए वह ईश्वर की खरी देन है। सब कुछ करते हुए वे अव्वल आती हैं जब तक महिलाओं का विकास सुरक्षित नहीं होगा, तब तक देशविकास कर ही नहीं सकता, ताजा उदाहरण भारत के प्रधानमंत्री जी जो कर रहे हैं। भारत एक लोकतंत्रिक देश है, इसमें जातियों, धर्म, पंथ (हिन्दुओं की १२ जातियाँ) सभी अपनी चुनी हुई सरकार में रहते हैं। जब कोई बालिका या छात्र हिजाब पहनकर गाड़ियाँ चलाती हैं, तो हमें फक्र महसूस होती है कि बेटियाँ शिक्षा के लिए घर से बाहर पढ़ी हैं। किसी इस्लाम राष्ट्र में भले ही इन चीजों पर रोक हो, पर "मेरा भारत महान" उचाईयों चुनने वाला "मेरा हिंदुस्तान"। सातौंना एक छोटा सा कस्बा, जहां पर रहने वाला रसूल मोहम्मद (रोहिला) डाकू ने राजकरों से दोस्ती करके ग्रामों के गाँवों को लूट लिया, यह वह के निवासी बुजुर्ग कशी साहब की मुँहजुबानी थी। इसी तरह ब्राह्मण गाँव में बहुत ही उत्पात मनाया लेकिन उनकी जनता ने प्रतिकार करके रजाकारों को भगाने के लिए मजबूर कर दिया। ऐसा यह ग्राम एकजुट होकर किस प्रकार से रजाकारों से प्रतिकार किया जा सकता है, यह मिसाल बन गई। 9 अप्रैल 1948 में रजाकारों ने बैठक बुलाई और सब से कहा गया कि अपनी लड़ाई के लिए तैयार रहें, यह बैठक परभणी के व्यापार क्षेत्र में हुई (बाजार हाट में आयोजित की गई)।

अगर हम किसी स्वतंत्र सैनिक से कुछ पूछेंगे तो अलग ही नया किस्सा उभरकर सामने आएगा, इससे प्रत्येक स्वतंत्र सेनानी का अनुभव कथन करे तो एक बड़ा ऐतिहासिक ग्रंथ बन जाएगा। जितने भी व्यक्ति हिंदुस्तान की आजादी के लिए लड़े, उतने ही स्वतंत्र सेनानियों ने संघर्ष किया सन् १९३८, १९४२, १९४८ का आलेख बनाया तो पहले स्वतंत्र सेनानी अपने देश के लिए लड़े और दूसरी बार अपनी मातृभूमि (मराठवाड़ा) के लिए लड़े। इतिहास में इतना बड़ा संघर्ष शायद ही मिल पाएगा। देश आजाद होने के बाद भी इन विरासतों से मुक्त होने के लिए लड़ना पड़ा। इतना संघर्ष स्वामीजी ने किया होगा, वे ही जाने। आजादी के बाद सुखों भरी जिंदगी हमारी जनता जीगी, पर आगे और एक लड़ाई संघर्ष बाकी था, फिर से वही चक्र जितना उत्साह देश आजाद होने के बाद स्वतंत्र सेनानियों में था, वह कुछ समय के लिए क्षण भंगुर हो गया। हमारे पिताजी यही कहते थे, सन् ४७ के बाद किसी प्रकार की कोई गुलामगिरी नहीं हुई। हम आजाद हैं, पर हैदराबादी राक्षस फिर से जाग उठा, गुलामगिरी की बेड़ियाँ लिए हुए यहाँ अब जहां तक निज़ामों का राज्य था, उन्ही व्यक्तियों को संघर्ष करना पड़ रहा था। मराठवाड़ा, आंध्र प्रदेश, कर्णाटक का सीमावर्ती भाग इसमें मराठवाड़ा को छोड़कर महाराष्ट्र में किसी की भी कोई भी सहायता नहीं मिली, विशेष कर मुंबई की अस्त-शास्त्र, युद्ध के साहित्यिक औजार मध्य प्रदेश वाया नागपुर से यहां तक पहुंचे थे, पर मुंबई उदास थी। स्वतंत्र लड़ाई के साथ-साथ दूसरी लड़ाई भी इन सेनाइयों को लड़नी पड़ी, और फिर से एक बार संघर्ष करना पड़ा।

इन जुल्मी रजाकारों की वजह से गांव के लोग घर छोड़कर अन्यत्र रहने के लिए मजबूर हो गए, सीमावर्ती भाग में ज्यादा अत्याचार से कई विदर्भी लोग पश्चिम महाराष्ट्र में बस गए। समूह गांव छोड़कर जा रहा था, इससे यह हुआ कि प्रत्येक व्यक्ति को राशन कार्ड बनवाकर उनके भोजन की व्यवस्था स्वतंत्र सेनानियों ने कर रखी थी। उस समय हमारे पिताजी कह रहे थे कि हिंदुस्तान का विभाजन जैसा हाल देखने को मिल रहा था।

यही बात हैदराबाद के निज़ाम की थी, पडित जवाहरलाल नेहरू जी और सरदार वल्लभ भाई पटेल को यही दिखाई देता था कि हैदराबाद का निज़ाम सत्ता में रहता है। हैदराबाद मिलिट्री एक्शन के बाद, कहीं पाकिस्तानी दंगे न भड़का दें, इसलिए सरदार पटेल ने सैनिकी कार्यवाही के लिए दो बार स्थगित करना पड़ा। निज़ाम स्टेट वार्तालाप में भारत को उलझा कर रखना चाहता था। करीबन एक साल तक यह मुद्दा चलता रहा, उसी समय निज़ाम ने विभिन्न तरीकों से विदेशी सामग्री, बंदूकें, बारूद, और युद्ध सामग्री हैदराबाद स्टेट में जमा करा रखी थी। पर उस समय भी हिंदुस्तान का नसीब बड़ा बलवान निकला। भारत की सेना ने कार्यवाही में किसी भी देश को निज़ामिया सल्तनत को मदद के लिए नहीं आने दिया। इसमें पंडित जवाहरलाल नेहरू जी विदेशी सहायक पर थे, सेना अध्यक्ष (मेजर जनरल) चौधरी साहब और सरदार पटेल ने निज़ाम को सरनागति पथ करने के लिए दो बार विनती की, पर वह अपने अहंकार में ही मग्न था। किसी भी प्रकार के सहकार्य निज़ाम नहीं कर रहा था। तभी ताबड़ तब कार्यवाही करते हुए हमारी सेना ने हैदरबाद पर धावा बोल दिया और कार्यवाही शुरू कर दी। तभी निज़ाम सरकार की नींद उड़ी और वह सत्ता छोड़ने के लिए तैयार हो गया। हमारे स्वतंत्र सैनिक की यह रोचक कथा उनकी मुँहजुबानी से सुनी गई, इसके पश्चात् सत्ता जाने के बाद भी निज़ामों ने अपने रहा सहनखान पान हिसाब में जीवन यापन करने के लिए बहुत बड़ी रकम भारत सरकार के सामने रखी, उसमें सरदार पटेल ने निज़ामों की यह बिनती मान्य कर ली और उन्हें उदार निर्वाह के लिए महावरी रकम पेंशन के रूप में देना शुरू किया। पर कुछ समय बाद इन् ६०० रियासतों को माहवारी रकम पेंशन सरकार ने देना बंद कर दिया, इन् ६०० रियासतों के लिए यह बहुत छोटी सी बात थी क्योंकि निज़ामों के पास और राजामहाराजाओं के पास इतनी चल और अचल संपत्ति थी कि कई पीढ़ियों तक वे अपना जीवन यापन कर सकते थे।

बहुत सारी ज़मीनें, सोने, मुद्राएँ, माणिक और मोती का खजाना, वह जो सिर्फ उन्हीं के पास रहता था, उनके बड़े-बड़े महलों को इस समय पांच सितारा होटल में रूपांतरित कर दिया गया है। फिर कुछ ऐतिहासिक धरोहर सरकार ने अपने कब्जे में ले लिया। यह सम्पत्ति निज़ामों ने जीने के लिए लूटा, पाटा, गरीबों की सम्पत्ति चीनी, हेर-चीज उनके नाम पर करवा दी। कभी-कभी महलों की शानदार कलाकृति की बनावट देखकर निज़ाम और अन्य राजाएं जो मजदूरदार वर्ग था उन्हें भरपूर खाना भी नहीं दिया होगा, यही नहीं और कितने ही मजदूर महल और किले बनाते समय शहीद हो गए (कई इतिहासकारों का मानना है कि इन किलों और महलों के नीचे मनुष्य मजदूरों की सैकड़ों तादाद में बलि दी जाती थी)। खैर, इस मनुष्य स्वभाव को देखिए, इन महलों और किलों बनाने वाले कलाकारों का कहीं भी नाम-निशान नहीं था और वह महल, किले खुद राजा-महाराजाओं के निजी नाम से प्रसिद्ध हो गए, ऐसे कई उदाहरण भारत वर्ष में हैं। हमारे पिताजी कहा करते थे कि राजा महाराजा, निज़ाम सभी अपने सैन्य साथ साथ जंगलों में शिकार पर निकल पड़ते थे। राजा स्वयं हाथी पर सवार रहते थे, सैनिक उनके आगे-पीछे रहता था। जब कोई शेर या अन्य प्राणी धनुष्य बन से मार गिराया जाता, उसी समय सभी एक साथ बाण चलाते थे। तब चाटुकरीता की कला में माहिर सैनिक कहता था कि बाण तो हुज़ूर का ही लगा है (राजा)। किसी सैनिक का भी बाण शिकारी पर लगता था, तो वो हुज़ूर का ही समझा जाता था। इस प्रकार यह निज़ाम का राजा वाहवाही में मग्न रहता, उन्हें जनता की कोई परवाह नहीं थी। अपने ही राज्य में यह निज़ाम रंग-रँगीलियों में डूबे रहते थे। कहने का मेरा तात्पर्य यह है कि जो मजूर था, उसे सत्ता का भागीदार उसे कुछ भी नहीं दिया जाता था और यहां गाँवों के गाँव लूटकर

अपना खजाना भरते थे। हर जाति-वर्ग का व्यक्ति दोनों ओर से मारा जाता था। मैं यह जो पुस्तक लिख रहा हूँ, इसकी वजह यह है कि जो बड़े कठोर स्वतंत्र सेनानी गरीब थे, उन्हें प्रसिद्धि में नहीं आने दिया गया, वे स्वतंत्र सेनानियों थे, इसलिए मैं हमेशा मजदूर छिपे हुए स्वतंत्र सेनानियों की ही बात करता हूँ, ताकि दुनिया यह जान सके कि उनके अंगों पर निशानियाँ अभी भी मौजूद थीं। इन् निज़ामों की जितनी भी क्रूर कहानियाँ कही जा सकती हैं, वह कम ही हैं। निज़ामों और अंग्रेजों के खिलाफ लड़ते लड़ते स्वामी रामानंद तीर्थ ने अपना सन्यासी जीवन जनता को अर्पित कर दिया। स्वामीजी ने 1938 में भारत छोड़ो आंदोलन के साक्षीदार और भागीदार रहे, हैदराबाद मुक्ति संग्राम में हैदराबाद से औरंगाबाद, वासिम, तेलंगाना, कर्णाटक के कई सीमाओं में युवा नेतृत्व करके स्वतंत्रता के लिए जनजागृति का कार्य किया। एक ही व्यक्ति ने यह सब कुछ कर दिखाया, उन्होंने स्वतंत्रता की नीव इतनी पक्की रची थी कि रजाकार निज़ाम भी नहीं हिला सके। स्वतंत्र सेनिकों का मेला स्वामीजी के अध्यक्ष के बिना अधूरा है, उनके निर्देशों का पालन हर सेनानी ने बहुत्तरीन भूमिका से निभाया। अब अगला पड़ाव किसानों की तरफ अत्याचारियों की शुरुआत पहली मजदूर वर्ग अब किसान भाई बड़ी मेहनत करके रात और दिन खेतों की रखवाली करते हुए खेतों में फसल उग जाती थी। उस समय निसर्ग भी उन्हें सही साथ नहीं दे रहा था, फसल उपजते समय होने वाली तकलीफों का बयान मैं यहां कर रहा हूँ। सबसे पहले किसान बीज बोता है, उसके पश्चात बीज बोते ही वन के वाराह और जंगली प्राणी मिट्टी को उखाड़ कर बीज खा जाते हैं। पहला प्रश्न बीज बोते ही रात्रि की रखवाली करनी पड़ती है, कहीं यह प्राणी बीज को खा न जाए। फिर जैसे तैसे बीज से पौधा आकार लेने लगता है, तभी शाकाहारी प्राणी हिरन, खरगोश, इत्यादि उस पौधे को खा जाते हैं। अब तीसरा बार जब पौधे पर फल लगने लगते हैं, तो पंछी पखेरू का हिस्सा और आखिरी चौथा बार फसल बची कूची किसान को मिलना। किसान की इतनी सबेक्षण में, जो कि उसकी मेहनत का परिणाम है, हमें उनके संघर्ष और समर्पण की मिसाल मिलती है।किसा इतना सब कुछ करने के बाद फिर से रजाकार निज़ामिया सल्तनत का लेवी के रूप में हिस्सा बनना पड़ा। पहले जितनी भी फसल उपजती थी, किसानों को साल भर खाने के लिए काफी था। वह सब छोड़कर पूरी फसल - गेहूँ, ज्वार, बाजरी इत्यादि अन्नधान्य - निज़ाम लेवी के रूप में लेकर चले जाते थे। जब मानसून ठीक से नहीं बरसता था, और फसल न हो पाती थी, तो भी किसानों को निज़ामों को लेवी के रूप में भुगतान करना ही पड़ता था। किसान इस लेवी रूपी टैक्स से परेशान होकर थक हार चूका था। निज़ामों की इतनी बर्बरता बढ़ गई थी कि आखिरी समय में उन्होंने किसानों से धन धन्य लूट कर लेजाए लग गए। दूसरे विश्व युद्ध का अंतिम चरण था, या यह कहें कि दूसरा विश्व युद्ध ख़त्म हो गया था, उसी समय लेवी रूपी टैक्स निज़ामों ने वसूल करना चालू कर दिया। जिल्हा परभणी के तीन गाँव भी थे, जिन्होंने लेवी रूपी टैक्स देने से इन्कार कर दिया। वे ग्राम - मानवत, तहसील के गूंज, क़स्बा और रामपुरी ग्राम थे। उसी समय निज़ाम के गवर्नर नवाब साहब परभणी जिल्हे में आए हुए थे। सभी किसानों ने मानसून की फसल नहीं आने की वजह से किसानों और मजदूरों ने ज्ञापन निज़ाम गवर्नर को सौपा, पर इसका कोई प्रभाव इस व्यक्ति पर नहीं पड़ा। लेवी वसूली चौ ही रही थी, लेवी टैक्स की वसूली दूसरे महायद्ध से लेकर सं १९३९ से १९४६ तक चालू थी। इस समय हमारे पिताजी (भईजी) ने दो कहानियों का वर्णन करके स्तब्ध कर दिया। पहला मजदूर वर्ग और दूसरा किसान वर्ग, यह दो स्तम्भ इस प्रकार थे कि इनके सिवाय गाड़ी चल ही नहीं सकती थी। किसानों का ज्ञापन का कोई असर निज़ामियों पर नहीं पड़ा, उल्टा वे जोरदस्ती ज्यादाति उनकी और भी बढ़ गई। इस जिले में कुछ डाकूओं का भी बसेरा था, जिन्हें हम महाराष्ट्र में 'रोहिल्या मुसलमान' कहते थे। उनकोकिसी का भी भय नहीं था, उन्होंने हद्द तब कर दी जब वह समाज की बच्चियों को उठा कर ले गए। तभी सभी स्वतंत्र सेनानी और गाँवों के लोग इन डाकुओं पर टूट पड़े और उनका पूरी तरह से सफाया कर दिया। इतिहास साक्षी है कि, जितने भी अत्याचार हिंदुस्तान की जनता पर किए गए, समाज और राष्ट्र, सभी से ज्यादा परेशान थे, पर भारत माँ का बृध्द वाक्य।

"सत्यमेव जयते"

यह किस प्रकार का युग आ चुका है कि धर्म के नाम पर इंसान इंसान को ख़त्म कर रहा है। भईजी कहा करते थे कि हेर जातिय वर्ग अपने धर्म के नुसार आचरण करता है, तो यह दिक्कत कभी भी नहीं आएगी। दंगों, झगड़ों का सवाल ही नहीं उठता, धर्म किसी प्रकार से कोई बुरा नहीं है। सभी धर्मों में जीवन व्यापन करने के लिए कला दी गई है - रामायण, गीता, कुरान शरीफ, बाइबल, इन सभी ज्ञान भंडारों को पढ़ने वाला और पढ़कर समाज को समझाने वाला बहुत ही कम ज्ञानी लोग हैं। यह धर्म ग्रंथ जब जब आप ध्यान से दो या तीन बार पढ़ेंगे, तो इन धर्म ग्रंथों की वाक्य रचना का ज्ञान अलग-अलग तरीके से होता है। एक ही वाक्य के हजारों अर्थ निकलते हैं, पर व्यक्ति अपनी बुद्धि के हिसाब से वह ग्रहण करता है। इसमें हमारे प्रख्यात मुस्लिम पंडित हाजी साहब कहा करते थे, उनका कहना था कि इन धर्म ग्रंथों में वह की सामाजिक आर्थिक परेशानियों के हिसाब से लिखाण किया गया है। फिर से स्वतंत्र सेनानियों का रौब दिखने लगा, इन डाकुओं को मरने के बाद लोगों में आजादी की भावना जाग उठी, उन्हें लगने लगा हमे अब लगाना लेवी नहीं, नहीं देनी पड़ेगी, जो कुछ भी हम कमा रहे हैं, वह सब हमारा ही रहेगा, चेहरों पर खुशियों की चमक फिर से लौट आई, रोज रोज गुलामी में मरना उससे तो यह ठीक है कि शेर के भाटी एक ही बार लड़ कर मरे, पर स्वामीजी ने कहा, "मरकर कभी जंग नहीं जीती जाती"। फिर भी इन ग्रामीणों को भय था कि निज़ामिया सल्तनत के पास बहुत सारा सैन्य बल है, कहीं फिर इस हमे संघर्ष न करना पड़े, इस तरह समय बीतता गया। 15 अगस्त संवत् १९४७ में आजादी का पर्व और उधार निज़ामियों की भारत सरकार से वार्तालाप शुरू हो गया, इतना सब कुछ मंथन होने के बाद भी कोई सर नहीं निकला, फिर सैनिकी की कार्यवाही करते हुए 18 सितंबर १९४८ को भारत सरकार ने हैदराबाद को काबिज कर लिया, यह मध्यमुख्य प्रान्त हिंदुस्तान में विलीनीकरण हो गया, इन सभी में जो स्वतंत्र सैनिक जिन्होंने उमरी बैंक लूटी थी उसका सत्यार्थ हिसाब भारत सरकार को दिया गया, एक भी रूपए की हेरा-फेरी और पैसों का दुरुपयोग इन स्वतंत्र सैनिकों ने नहीं किया, जहाँ पर भी रजाकार रोहिल्या ने लूट-मार की थी, उनसे भी भारत सरकार ने धन, पैसा, जमीन, ज़यादाद वापस करने का आदेश दिया, उसी समय कुछ मुस्लिम भाई (मराठवाड़ा के) हैदराबाद में रहने के लिए चले गए, जब उन्होंने गाँव छोड़ा, तब तक वे सुखी थे, पर हैदराबाद जाने पर उनके ऊपर मुजाहिर का सिक्का लगा दिया। इनमें बहुत सारे मुस्लिम स्वतंत्र सैनिकों ने उन्हें रोकने की भरगड़ कोशिश की औरंगाबाद के स्वतंत्र सैनानी सय्यद भई ज्येष्ठ स्वतंत्र सैनानी ने औरंगाबाद से अपील की थी, वे हैदराबाद न जाएं, पर वे असमर्थ रहे।

फिर से हिंदुस्तान में बहार लौट आई, कुछ दो वर्षों बाद स्वतंत्र सेनानी श्री रामानंद तीर्थ का निधन हो गया। सभी जनता जनार्दन का देवता चला गया, स्वतंत्र सेनानियों का सूर्य अस्त हो गया। इस पर मुझे स्वामी दयानंद सरस्वती जी का दो पंक्तियों का दोहा याद आया।

"सूरज गया सोने को लाख सितारे जगा कर,

एक दीपक बुझ गया लाख चिरागों को जला कर।"

-आर्य

**स्वामीजी की मृत्यु 22 जनवरी 1972 में हैदराबाद में हुई। उन्होंने कुछ दिन अखबार में लेखन का काम भी किया था। उस सप्ताह में अखबार का नाम 'विजन' था। उनका पूरा परिचय सभी को ज्ञात है, पर थोड़ा-सा और इस प्रकार है। उनका जन्म 3 अक्टूबर 1903 में हुआ, सिन्दगी (विजापुर जिला) नामक गाँव में। स्वामीजी का पूरा नाम व्यंकटेश भगवानराव खेरगीकर था। उनकी शैक्षणिक शिक्षा गुरुकुल सोलापुर के सरकारी विद्यालय में हुई, और हिप्परागा रवा गाँव, जिला उस्मानाबाद, गुरुकुल में कार्यरत थे। उन्हें सन् 1930 में स्वामी नारायण तीर्थ ने दीक्षा दी, तब से उन्हें स्वामी रामानंद तीर्थ के

नाम से संबोधित किया जाता था। स्वामीजी का अंत में विलीन हो गया। सबसे प्रमुख हैदराबाद मुक्ति संग्राम का स्वतंत्रता की ज्योति जलने वाला (मराठवाड़ा, आंध्र प्रदेश, कर्णाटक इत्यादि प्रांतों में) प्रथम नागरिक स्वामीजी का निधन हुआ। बहुत सारे काम अधूरे रहते हुए वे ईश्वर की गोद में समा गए। खेर महान व्यक्ति की महान कर्त्तव्यकथा सभी उसी प्रकार से महान होती हैं। महान व्यक्ति ही महान काम कर सकता है। इसी प्रकार सभी स्वतंत्र सेनानियों ने कड़ी मेहनत से खुद की उम्र कम करके परमात्मा में स्वाधीन हो गए। इन सभी में अनंतरावजी, चारठानकरजी, मेघजी भई, डॉ मुलावेकर, नावाडे काका, आवटेकाका, सदाशिवकका चौधरी, गो बा देशमुख, ग्विंड कदम काका (खावेवाले), रामभाव आढाव (हमाल) इन सभी का स्वर्गवास हो गया।

उस समय हमारे पिताजी की उम्र का आख़िरी पड़ाव चल रहा था। वे उम्र के 63 साल में फर्श पर गिरने के बाद उनके पैर की हड्डियाँ टूट गईं। उन्हें 6 महीने तक बिस्तर पर ही लेते रहे, पैर की हड्डी इस प्रकार से टूटी कि उसको ठीक होने को बहुत समय लगा।उन्होंने इस समय दर्दनाक स्थिति में गुजारा, इस समय हमारे पिताजी और माताजी दोनों ही राजस्थान में रहने लगे। उनका सपना यह था कि मैं अपनी खेती बड़ी खुद करूँ और इससे इस्राइल की तरह बहुत सारा उत्पन्न निकालूँ, पूरा भरा हुआ परिवार सहित गाँव ग्रामीण क्षेत्र में होने की वजह से हमारे उम्र के लोग हमसे गपशप करने और चर्चा करने के लिए आते थे। इस समय उन्हें उदयपुर के एक अस्पताल में भर्ती किया गया। डॉक्टर की न समझी के कारण उनका ऑपरेशन सही ढंग से नहीं हो पाया। जैसे-जैसे प्लास्टर बांधवा कर छुट्टी कर दी गई, अभी पिताजी ने फिर से बिस्तर पकड़ लिया। इस समय उनके स्वजन हमारे उम्र के लोग, उनसे गपशप करने और चर्चा करने के लिए आए। इस समय ग्रामीण इतने पढ़े लिखे नहीं थे, इसलिए जो ज्ञान उन्हें मिलता था, उससे वे बड़े खुश नजर आते थे। चर्चा के दो प्रकार होते थे, एक तो स्वतंत्र संग्राम और दूसरा खेती बड़ी मानसून फसलों पर। चर्चा करते समय पिताजी ग्रामीणों के प्रश्नों का उत्तर देते हुए उनका समाधान करना शुरू करते थे। इसके बारे में ग्राम, तहसील, जिला, प्रांत और देश के बारे में ग्रामीणों को बताया जाता था। शुरुवात तहसील से होती थी, उनके तहसील में कितने गाँव आते हैं औरजिल्हे में कितनी तहसीलें आती हैं और भारत में प्रान्त कितने हैं, उनके मुख्यमंत्री कौन हैं, विधायक का चुनाव कैसे होता है, मुख्यमंत्री, राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री का चुनाव कैसे होता है, और विधायक कैसे चुने जाते हैं। और गाँव में सरपंच कैसे चुना जाता था, उसी प्रकार प्रान्त में विधायक और मुख्यमंत्री चुना जाता है।

अभी यह बात भले ही मामूली लगती हो, पर उस समय लोकशाही के स्तम्भ खड़े हो रहे थे। धीरे-धीरे ज्ञान बढ़ता गया और समझ आने लगी। उस समय कांग्रेस पक्ष के सिवाय कोई भी पक्ष इतना बड़ा नहीं था कि लोग सोच सके, विरोधियों का नामो-निशान नहीं था। इसलिए भाईजी कट्टर कांग्रेस होने की वजह से किसी और पक्ष की बात भी नहीं सुनते थे।

आजादी के दौरान मुख्य नेता कांग्रेस से जुड़े हुए थे, इसलिए उनके त्याग के सामने सब बौने नजर आते थे। पंडित नेहरू, महात्मा जी, चंद्रशेखर आजाद, सुभाष बाबू, वीर सावरकर, और भी बड़े नेता पिताजी कहा करते थे की हमारा भारत स्वावलंबी ग्रामीणों में ही बसा हुआ है। हर उदार निर्वाह की चीज पहले ग्रामीणों में ही उत्पन्न होती थी। ग्रामीण एक दूसरे को अपना सामान आदान-प्रदान करते हुए जीवन की गाड़ी चला रहे थे, जिस प्रकार लोहार, सुथार, कुम्भार, चमड़कार अपनी वस्तुएं किसानों को देकर उनसे धन धन्य प्राप्त होता था।

अब हमें यह याद रखना है कि २०० साल से ब्रिटिश ने राज्य किया है, और उससे पहले बाबर ने १२०० मुघलों को लेकर भारत में आए लगातार देश गुलामगिरी में रहा है। स्वावलंबी देश को सोने की चिड़ीया कहलाने वाला देश इन आक्रमणियों ने इसकी व्यवस्था को तहस-नहस कर दिया है। मुघलों और

अंग्रेजों की जोतने भी गुनाह देश में अनगिनत अत्याचार हुए हैं, इसमें आपको क्यों कह रहा हूँ, इसके पीछे एक बड़ा मार्मिक कारण है। ब्रिटिश साम्राज्य ने योद्धाओं को फांसी चढ़ाई और कई योद्धाओं का बलिदान लिया। सन् १९३० में बंगाल में भीषण अकाल पड़ा, करीब ३० हजार मनुष्यों का विध्वंश हुआ और अनेकों की गृहस्थी तबाह हो गई। इस पर बड़े नेताओं पर हमें टिप्पणी करने का कोई हक नहीं है, फिर भी अगर इतिहास नहीं लिखा गया तो अगली पीढ़ी को ज्ञान कैसे होगा। (कुछ नेतागण वैज्ञानिक बुद्धिमान लोग यह कहते हैं किगड़े हुए मुर्दे फिर से नहीं निकले जाएंगे, इतिहास) वे सन् १९४७ में आजादी मिली, हमारे पूर्व प्रधानमंत्री जी नेहरू, जिन्होंने लंदन की महारानी सिंहासन पर आरूढ़ होने पर जो उत्सव हुआ, उसमें हमारे नेतागण गए देखिए कि क्या मजबूरी थी। इतने अन्यायी और अत्याचारी इंग्लैंड के गोरों ने हमारे सेनानियों, देशभक्तों को तड़पा-तड़पा कर मार डाला, कुछ को फाँसी दी गई, कुछ भूख-प्यास से बिलखते-बिलखते अपने प्राणों को जेलों में ही त्याग दिए। ये सब बातें भूल कर इस उत्सव में भाग लेने नेहरू पहुंचे। हमारे स्वतंत्र सेनानियों, देशभक्तों की आत्मा क्या कहती होगी, इस पर पंडित जी लंदन से वापस आने पर किसी से कुछ भी शब्द नहीं कहे। हमारे गुलामी की मानसिकता न जाने कब खत्म होगी, इन नेताओं को यह अभास भी नहीं रहा होगा कि इतने अन्यायी, अत्याचारी, फासीवादी ताकतें आंदोलन करियों को गोलियों बरूँ को खाकर, टुकड़े-टुकड़े विभाजन करते चले गए, न जाने उस समय इन नेताओं के सामने क्या मजबूरी रही होगी। इस देश की क्या दुर्दशा इन गोरों ने की, फिर भी हमारे देश के पूर्व प्रधानमंत्री नेहरू जी उनके समारोह में हिस्सा लेने पहुंच गए।

आज भी वही बात दोहराई जा रही है, ९४ वर्षों के बाद लंदन की महारानी के निधन पर भारत शोक कर रहा था। यह बात तो कुछ हद्द तक ठीक है, पर अपना राष्ट्रीय ध्वज आधे मास्टर पर उतर कर उनके श्रद्धांजलि में रखा गया। क्या सहनशील लोग हैं या बेवकूफ, कहे तो भी ज्यादा नहीं होगा, हर कोई किसी भी प्रकार के किसी भी विरोधी नेता ने विरोध नहीं दर्शाया। जिस ध्वज को हाथ में थामे व्यक्ति खड़ा रहता, उससे गोली मार दी जाती थी, तभी दूसरा व्यक्ति सामने आकर ध्वज थाम लेता था। ध्वज को गिरने नहीं दिया चाहे उसमें उसकी मौत ही क्यों न हो जाये। पर आज दुर्दशा देखिए कि उनके सन्मान में ध्वज आधे मास्टर पर है। बड़े लोग बड़ी गलती करते हैं, आज भी वह देश (ब्रिटिश) हिंदुस्तान के विरोधी में रहता है। मेरे विचार में यहाँ का वर्ग शायद १ गुलामगिरी भूलना नहीं चाहता और वह गोरों के बनाए हुए नियमों का पालन कर रहा है। २ या पश्चिमी संस्कृति की हमारे युवा अपनी अमीरी बढ़ने में खुद को बड़ा समझने लगते हैं। हमारे छात्र विदेशों में पढ़ाई करने जाते हैं तो क्या उन्हें विशेष ज्ञान प्राप्त होता है, इन सब बातों का उत्तर हमें नहीं मिल पाता है। नदी के प्रवाह के विरुद्ध हम नहीं जा सकते। कबीर दासजी का दोहा यहाँ उल्टा लागु होता है। खैर, पिताजी ने जो उनके समय का सं १९४८ कावर्णन किया फिर से वही चित्र २०२२ में देखा। खैर, आगे बढ़ते हैं। पश्चिम बंगाल में अकाल से इतने सामूहिक लोग मर रहे थे, पर किसी नेता ने कोई संज्ञान नहीं लिया। हमारे पिताजी छह महीने तक बिस्तर से दोस्ती रखी, रोज नई-नई कथाएँ सामने आ रही थीं। पिताजी कहते थे कि बहुत बड़ा देश बहुत सारी जनता आजादी के समय भारत सरकार का खजाना खाली, पर इसमें और एक विडम्बना देखिए। महात्मा जी ने देश के विभाजन करते समय जिन्ना से पाकिस्तान को कई कोटि रूपए देने का ऐलान किया। कुछ नेताओं को यह बात रास नहीं आई, क्योंकि उनका कहना था कि हमारे ही देशवासियों के लिए खाने-पीने की व्यवस्था हम नहीं कर पा रहे, तो औरों का तो क्या ही कहना। विभाजन के समय महात्मा जी ने जिन्ना से बड़ी बिनती की और प्रस्ताव रखा कि इस देश का पहला प्रधानमंत्री तुम्हें बनाएंगे, पर उनके कानों पर इन बातों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा, वे दूसरा राष्ट्र बनाने के लिए उत्साही हो गए। इस समय यहां के युवाओं ने अन्य नेताओं को यह बात मानाने से इंकार कर दिया कि इनको इतनी बड़ी रकम नहीं दी जाएगी, पर महात्मा तो महात्मा थे, वे अपने दूसरे पुत्र (राष्ट्र) से कैसे नाइंसाफी कर सकते थे, आखिरकार विभाजन हो ही गया और मोती रकम पाकिस्तान को देनी पड़ी। इस समय कुछ युवाओं को यह रास नहीं आया, उन्होंने महात्मा गांधी को गोलियाँ मार दीं,

नाथूरामजी गोडसे ने महात्मा जी से क्षमा मांगते हुए गोलियों से भून डाला है, राम कह कर महात्मा जी धराशायी हो गए, एक स्वर्ण युग का अंत।

पर कुछ इतिहासकार एवं उस समय के नेता इस बात को सही मानकर उन्होंने नाथूरामजी गोडसे को बेगुनाह करार दिया। नाथूरामजी भी इसी देश के जनता की भलाई के लिए यह कदम उठाया और कभी भी यह लगता ही है कि इस समय यह सत्य सा प्रतीत होता है। नाथूरामजी को आतंकवादी की उपमा देना योग्य नहीं है क्योंकि उन्होंने अपने देश के जनता के स्वार्थ के लिए यह कदम उठाया, उसमें उनका कोई स्वार्थ नहीं था। हर पहलू की दो बाजुएँ होती हैं, किस बाजु को मानें या न मानें यह देश काल, और समय पर निर्भर करता है। हमारे पिताजी भाईजी ने बहुत समय संघर्ष करने के बाद आजादी मिली, तभी इन खुशियों, जल्लोष में यह नेता भविष्य का विचार थोड़े समय के लिए करना भूल गए, यह जीवनी हमारे पिताजी बता रहे थे। मैं उनकी इतिहास पर गौर करते हुए कह रहा हूँ कि कैसा था और आज क्या है, इन दोनों बातों का विश्लेषण में करने की कोशिश कर रहा हूँ।

स्वयं भाईजी ने यह दर्दनाक बात कही, वह यह कहीं थे कि स्वतंत्रता का अर्थ अब भी लोग समझ नहीं पा रहे हैं। 800 वर्षों तक गुलामगिरी के, उसमें से 75 साल का अमृत मोहत्सव अब हम मना रहे हैं। इन 75 सालों में हमारे देश में हर तरफ से तरक्की हुई है, चाहे वह शिक्षा हो, खेती बड़ी हो, या टेक्नोलॉजी एवं देश के सुरक्षण के लिए युद्ध सामग्री का निर्माण हो। सर्वसाधारण 80 प्रतिशत जनता आज भी खेती पर ही रहती थी। इस समय खेती में टेक्नोलॉजी के बदलाव से बहुत बड़ा उत्पन्न होने लगा और ग्रामीण युवा को रोजगार प्रदान हुआ। गोरे लोगों ने यहां के छात्रों को किसी प्रकार का विकास नहीं होने दिया, विशेषकर हमारे छात्रों की बौद्धिक सम्पदा विकास नहीं होने दिया। अगर ऐसा हो जाता, तो विश्व का पहला राष्ट्र भारत कहलाता था। कहा जाता है कि गोरे लोग बहुत ही काम सक्षम थे। उस समय भारतीयों ने ही उन्हें पास रहकर नौकरी की अपनी ही जनता को लूट कर अंग्रेजों का खजाना भरते रहे। खैर, बड़ी मजबूरी रही होगी औरंगाबाद से हैदराबाद तक एक ही विश्वविद्यालय था, उसका नाम उस्मानिया विश्वविद्यालय था। हमारे मराठवाड़ा के छात्रों को हैदराबाद को पढ़ाई करने के लिए जाना पड़ता था। गरीब छात्र हैदराबाद तक पहुंच ही नहीं पाते थे, अंग्रेजों ने जानबूझकर देश को अज्ञानी रखा, पर कान्हा जी की कृपा की, जन्मजात बुद्धिमान युवा इस भारत मां पर पैदा हुए। उनकी जागरूत बुद्धि से लोगों को स्वतंत्रता का अर्थ समझाया, आंदोलन के लिए राजी किया। विशेष लोकमान्य तिलक, लाला लाजपतराय, विनोबा भावे इत्यादि नेताओं ने यह कार्य बखूबी से किया, आजादी मिलना और खुद अपने विचारों को आजाद रखना बहुत ही फर्क है। जैसे की टीवी के ऊपर का विज्ञापन हमारे मानसिकता पर इतना आघात कर रहे हैं कि अपने खुद के विचार करने की क्षमता ही खत्म हो चुकी है, इसलिए मानसिक तौर पर की आजादी अभी बाकी है। मुघल सल्तनत चली गई, फिर भी कटी कमरी न्याय में आज भी उर्दू भाषा इस्तेमाल होती है। उर्दू के जानकर बहुत ही कम थे। हिंदी भारतीय भाषाओं में उन्होंने जानबूझकर आगे नहीं बढ़ने दिया, हिंदी और उर्दू दोनों ही बहाना है। हमारे भाईजी कहा करते थे कि मुगलों ने अंग्रेजों ने जो तीन चीजें देश लिए जरुरी थीं वह होने नहीं दी, वो तीन चीजें कुछ ऐसी थीं,

१. बौद्धिक विकास

२. न्याय के लिए न्यायदेवी के पास की भाषा यहां के गरीब वर्ग नहीं जानता था।

३. और आखिरकार, सवाल यह आता है कि अनाज की पैदावार के हिसाब से लेवी यह ठीक बात है।

पर कानून ठीक रहे या न रहे, लगान हर साल वसूल होते रहता था। नौबत यह तक थी कि किसानों के घर से अनाज लूटकर ले जाने लगे थे। "पर कानून ठीक रहे या न रहे, लगान हर साल वसूल होते रहता था।"

यह पंक्ति ब्रिटिश काल और आज़ादी के बाद के सामाजिक-आर्थिक अन्याय दोनों पर तीखा व्यंग्य करती है।

यह चित्र ब्रिटिश शासनकाल की उस **कठोर वास्तविकता** को दर्शाता है! चित्र में तीन प्रमुख पहलू प्रतीकात्मक रूप में दिखाए गए हैं:

1. **शिक्षा** – पृष्ठभूमि में एक टूटी हुई पाठशाला है, जो दिखाती है कि किसान परिवारों के बच्चों की शिक्षा पिछड़ रही है।
2. **न्याय** – बीच में एक असंतुलित तराजू बना है, जो संकेत देता है कि कानून और न्याय सिर्फ नाममात्र के लिए रह गया है।
3. **रोजगार** – अग्रभूमि में खेत में काम करते मजदूर दिखाए गए हैं, जिनके चेहरे थकान और निराशा से भरे हैं, यह बेरोज़गारी और शोषण की स्थिति को दर्शाता है।

इन चीजों का कोई भी ब्रिटिश हो या निजामिया सल्तनत, विचार नहीं किया गया। यह तीनों चीजें गुलामगिरी के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण थीं। हमारे पिताजी तो बहुत कुछ कहते थे। इनमें से कई चीजें, जैसे कि प्रशासन के कायदे और उनकी भाषाएँ, जो कि तब भी हैं, देश स्वतंत्र होने के बाद भी इसमें कोई बदलाव नहीं किया गया। विकास के लिए मातृभाषा का भी विकास हुआ जरुरी है, साथ ही नियमों को भी बदलना जरुरी है। हमारी लोकशाही, जितनी भी अच्छी है, उतनी ही वाममार्गीय लोगों ने

अधोपतन करके रखी है। लोकशाही का फायदा बड़े नेताओं, व्यापारीयों, और कर्मचारियों ने बखूबी उपयोग करके इसका फायदा उठाया है।

कुछ समय पहले तक ग्रामीणों को इसका फायदा नहीं मिला, जब स्वयं देश के प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने कहा कि १०० रुपए में किसानों को दिल्ली से भेजता हूँ, पर वह १० रुपए ही किसानों के हाथ लगते हैं। इतना बड़ा व्यक्ति खुद यह कह रहा है। तो आप जानकर होंगे कि वह ९० रुपए कहा गए खैर हर तरफ ऐसा नहीं है। पर अभी भी मेरे शहर गाँव में इस समय सं ४७ से सं २०२२ तक का अमृत मोहत्सव कार्यक्रम वर्ष भर से चालू है, पिताजी बात करते करते भावुक हो उठते हैं। मेरा देश, मेरे लोगों पर समय बड़ा परिवर्तनशील है। पिताजी के साथ गैप शाप करने के लिए बहुत सारे बुजुर्ग इकट्ठा होते हैं। सांझ बेला का समय, सभी खेती बाड़ी का काम निपटाकर पिताजी से मिलने आते हैं। वे पिताजी से कुछ-कुछ इस प्रकार से प्रश्न पूछते हैं कि जेल खाना क्या है, उसमें कैसा रखा जाता है, तो वह का दरोगा किस प्रकार से व्यवहार करता है, अनगिनत सवाल पिताजी से पूछे जाते हैं। भाई जी भी हर एक व्यक्ति को समझने में सक्षम होते हैं, उसी भाषा में जवाब दिया करते हैं। ग्रामीणों का जमघठ बढ़ने लगा, मिश्री (शक्कर) और चाय पट्टी के डिब्बे रोज के रोज़ खाली हो जाते हैं। पर भाई जी बहुत खुश नजर आते हैं। चाय के खर्चों के सामने उनके पास कुछ भी नहीं होता, सिर्फ वे कहते हैं कि मेरे पास लोग आकर जानकारी लेते हैं (स्वतंत्रता की) यह बहुत है। बड़ी बात जनजागृति के लिए थी। माँ कहती थीं, "इतने बड़े मेहमानों को रोज़ कैसे संभाले, पर वे भी बड़ी दिलदार महिला थीं। उनके चेहरों पर कभी भी गम या उदासी हमने नहीं देखी थी। पर हमारी दादी, कर्मठ और कर्मयोगी महिला, अपने विचारों से ग्रामीणों को कहती थीं, 'समय व्यर्थ नहीं जाता, हमेशा काम करो,' और वे कार्य पर ज्यादा ध्यान देती थीं। हेर, ग्रामीण, उनका स्वभाव अच्छी तरह से जानते थे, वे कभी भी दादी का बुरा नहीं मानते थे (सुंदरा बाई)।

कभी कोई व्यक्ति हताश या निराश होकर अपनी परेशानी को लेकर पिताजी के पास लेकर आते थे, तब हमारी दादी का रामबाण इलाज यह था कि हर बुधवार को गणपति बाप्पा को भेट करते रहो। पुराने व्यक्ति कितने सरल भाव के थे, कही कोई हवन, उपवास, यज्ञ पर कभी भी नहीं कहा करती थी, सिर्फ बाप्पा को लड्डू का चढ़ावा यही कान मंत्र ग्रामीणों को दिया करती थी।

हमारे भाई जी इन संस्कारों की वजह से अनंत चतुर्थी का त्योहार बड़े धूमधाम से मनाते थे, उनका सबसे बड़ा उत्सव यही रहता था। कमल की श्रद्धा, मेरी दादी और भाई जी की बाप्पा ने उनकी भवर में डूबी हुई नैया फिर ऊपर ला दी, ऐसा मनमोहक परिवार, खुशियाँ अपार। पिताजी की जो मानसिक बीमारी थी, वह अत्यंत उत्साहित थीं, वे किसी भी कार्य के लिए अग्रसर हो जाती थीं, 'यह करना है तो करना ही है' ऐसा ठान कर चलती थीं। एक महीना बिस्तर पर बीत चुका था, रोजाना नए नए प्रश्न और किससे संवाद करती रहती थीं।

स्वतंत्र संग्राम के माँ को भी अपने पति पर बड़ा गर्व था, ब्राह्मण समाज में इस गाँव के दो ही स्वतंत्र सेनानी थे, वह पर उनके सिवाय कोई स्वतंत्र सैनिक इस प्रदेश में नहीं था। पिताजी को समाज ने तिरस्कार भी बहुत किया और समय की करवट बदलते ही सन्मान भी बहुत दिया। पिताजी की जो आय (पेंशन) भारत सरकार ने बढ़ाकर दस हजार रुपए कर दी। पिताजी के पास जब कोई ग्रामीण कर्मचारियों के विरुद्ध शिकायत लेकर आते थे, तब पिताजी उसे आड़े हाथों लेते थे, कर्मचारी भी पिताजी का सम्मान करते थे।

राजस्थान-मेवाड़ क्षेत्र में गरीबी बहुत ही थी। सामाजिक खर्चे अनंत, पिताजी का समाज पर जोर रहता था कि रूढ़ि-परम्परा वादी खर्चे बंद हो गए। जैसे की मृत्यु भोज इत्यादि सामाजिक खर्चों का काम

किया जाये, पर इस देश की विशेषता यह रही कि इस मृत्यु लोक में राम और कृष्ण जैसे ईश्वर ने जन्म लिया, अच्छे नेता, गण, बड़े संत, महात्मा, ज्ञानेश्वर माऊली, तुकाराम महाराज, ज्ञानदेव महाराज, जनाबाई, मुक्ताबाई, मीराबाई, नरसिम्हा मेहता - इनके उपदेश से जनता नहीं सुधरी। तब भाई जी कहते थे कि यह समाज ईश्वर को कोसने के लिए भी कोई कसर नहीं छोड़ी।

तो हम किसी खेती की मूली हैं, इसलिए वे अपना मनोमन संधान करके शांत हो जाते थे। मेघजी भाई को स्वतंत्र संग्राम में जाने को किसने कहा देखिए यह मानसिकता हमारे गाँवों की और भाई जी कहते थे कि आजादी से ज्यादा अंग्रेज़ ही ठीक थे। इसलिए महाराष्ट्र के प्रबोधन कार, कीर्तन कार, इंदोरी कार महाराज रोज़ रोज़ कितनों में विकृति को नष्ट करने की सलाह देते हैं। पिताजी कहते हैं कि मराठी में कहावत है, "जितने भी व्यक्ति उतनी प्रकृति"। हेर, एक का विचार लगाएं, अलग-अलग इसलिए इन टीकाकार लोगों की तरफ ध्यान नहीं दिया जाए। अपना कार्य दृढ़ता पूर्वक चलते रहना चाहिए। भाई जी, हम खास उन्हीं लोगों को मिला करते थे जो यह खुद ही अपना आयना है यह कहा करते थे। बैठक के कमरे में एक व्यक्ति प्रश्न या विषय रखता था, दूसरा उसका उदाहरण सहित खंडन करना (खंडन-मंडन) यह प्रथा हमारे घर की बन गई। पिताजी खटिये पर और अन्य व्यक्ति बुजुर्ग जमीं पर कम्बल बिछा कार बैठते थे। इन व्यक्तियों में भले ही सुशिक्षित नहीं हो, पर थोड़े-बहुत तो भी आध्यात्मिक विचार श्रेणी वाले योगी, अज्ञानी होकर भी भरपूर ज्ञानी थे। कोई रसभरी कविता करता तो कोई किस्से सुनाता, इन सबमें ठहाकों पर घर गूंज उठता था। हमारे रिश्तेदार वेल्जीदादा कानावत अच्छे, रमणीय कवी थे, उनकी एक छोटी सी कविता ओं की पंक्तियां में से कुछ पंक्तियां मैं यहाँ लिख रहा हूँ, उन्होंने पत्नी किसी होनी चाहिए इस बारे में इस कविता में उल्लेख किया है।

"सुबह ठेंगनी वय चौदा ची"

इस तरह से हमारे गाँव में भगवान दादा, लालजी दादा, वालजी दादा, नारायण काका, शिवराम काका, परशुराम काका, ये सभी पिताजी के भाईजन जो एक से एक वक्ता, कवी और उनकी वाणी से सुनी हुई रामायण की रचना, अलग-अलग अर्थों में सभी अशिक्षित थे पर ज्ञानी थे। गीता का उत्तम ज्ञान इनमें कैसे आया, अर्जुन और कृष्ण का संवाद मुख पाठ इन कवी और लेखकों को कोई प्रकाशक और प्रसारक नहीं मिला, अन्यथा उनकी भी रचना पाठ्यपुस्तकों में होती। समय व्यतीत करने का और अपनी भावनाओं को प्रकट करने का जरिया इन बुजुर्गों को मिल गया था।

पूर्व समय में हमारे पिताजी के चचेरे भाई लालजी दादा "श्रीगौड़ ब्राह्मण समाज" अध्यक्ष थे। वे उन दिनों में गाँवीणों का वाद-विवाद, झगड़े तानते बखूबी से निपटारा करते थे। इस समय इतने न्यायालय नहीं थे, गाँव के मुखियों को ही निपटारा करना पड़ता था। उस समय लालजी दादा के निर्णय सही ठहराते हुए उन्हें उदयपुर के न्यायाधीश ने शाबाशी दी और कहा कि इस प्रकार का न्यायाधीश (मुखिया) हेर गाँव में मिल जाए तो न्यालयों की गरज नहीं पड़ेगी। वे शाबाशी देते हुए पुनः उदयपुर रवाना हुए। इस प्रकार हमारा खानदानी घराना उच्च समझा जाता था। हमारे उस समय से लेकर आज तक कभी हमारे घरानों में वाद-विवाद नहीं हुआ। परमात्मा इसी प्रकार की कृपा बनाए रखे। इस ग्राम में पद्मावत परिवार के 150 मकान हैं, सभी खुशहाल हमारे परिवार के लोग माध्यम श्रेणी के हैं, वे आज भी खेती बड़ी करते हैं।

"पिताजी बिस्तर पर लेटे लेटे अपने परिवार का वर्णन करना उन्हें बहुत ही अच्छा लगता था और वह इस पर गर्व करते थे। हमारे कुछ परिवार महाराष्ट्र में स्थायी हो गए हैं - सेलु, कलमनूरी, आखाड़ा बालपुर, हिंगोली और औरंगाबाद में। आगे हमारे पिताजी के पास रचनाकार भी आते थे और उन्हें

विश्व की जानकारी, तकनीक, कारखाने आदि के बारे में जानकारी हासिल होती थी। हमारी संस्कृति को पश्चिमी संस्कृति से तुलना करते थे और देश के इतिहास में हुए आक्रमणों के बारे में बताते थे।

हमारी सभ्यता बहुत ही प्राचीन है, और कई आक्रमण हुए हैं, लेकिन सनातन धर्म ने अपनी जड़ें साकारात्मक रूप से बनाए रखी हैं। कुछ मुग़लों ने प्रेम से हिन्दुओं को स्वीकार किया (अकबर) और कुछ ने जबरदस्ती करके धर्मांतरण किया। इसके बाद और भी कई आक्रमणकारी आए - पोर्तुगीज, डच, अंग्रेज, मुस्लिम, इन्होंने बड़े पैमाने पर धर्मांतरण किया।

इस समय में, ख्रिस्चन धर्म ने इन बदलते समयों में भी तकलीफ नहीं दी और सेवा भावना के साथ अपना कार्य किया। धर्म के पारे भी एक धर्म है, वह है मानवता का। यह बापू ने कहा करते थे कि "जब तक मानवता है, तब तक धर्म है" और हम हिन्दुस्तानी कान्हाजी की गीता से भी सिखते हैं (यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम) आदि।

शंकराचार्य ने चार पीठों की स्थापना की और सनातन धर्म की रक्षा की, जब धर्म का अधोपतन होने लगा थातभी शंकराचार्या ने अवतरण लिया, सनातन धर्म जो चार आधारों पर खड़ा है - ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, यह आज भी हमारी सभ्यता और संस्कृति को लाखों वर्षों से टिकी हुई है। भाई जी कहा करते थे कि ग्रामीणों को सिर्फ अपने ही धर्म का पता था (हिन्दू)। इन्हें जागरूक करने का कार्य पिताजी ने किया। भाई जी यह भी कहते थे कि हमारे उस समय बस गाड़ी भी नहीं देखी जाती थी और कभी बैठे भी नहीं थे, पर धीमे-धीमे युग बदलता गया। सर्वप्रथम, एक ही मोटरगाड़ी गाँव में आई जाती थी, और जब युवा वर्ग ने आर्थिक हालत सुधारने के लिए दूसरे प्रदेशों की ओर जाना शुरू किया तो वह दुनिया का ज्ञान हुआ और वह सुशिक्षित हो गए। युवा अब अधिक आए और उन्होंने खेती को भी उदारनिर्वाह से किया।

हर प्रकार के व्यक्ति भाई जी, अलग-अलग बातें कहते थे। इसमें किशोर, जवान, और बुजुर्ग व्यक्ति सभी शामिल थे। समय बीतता गया, आजादी के बाद देश की स्थिति कैसी है यह जानने के लिए ग्रामीणों के लिए रेडियो एकमात्र स्रोत था। पूरे गाँव में दो या तीन रेडियो सभी ग्रामीणों को रात्रि के नौ बजे संचार का इंतजार करते थे, सभी मिलकर एक ही स्थान पर इकट्ठे होकर रेडियो के कार्यक्रम सुनते थे। दूसरे महायुद्ध के बाद का विवरण, लाभ और हानि, सब कुछ जानने का साधन एकमात्र रेडियो था। हमारे भाई जी महाराष्ट्र के मराठवाड़ा पेपर के भागदाता रह चुके थे, पर कुछ कारणों से इस अखबार का प्रकाशन बंद हो गया। इस अखबार का प्रकाशन औरंगाबाद, महाराष्ट्र से होता था, हमारे पिताजी का। इस तरह से समय बितता गया और वे कहते थे, 'मेरा पैर क्या टूटा, मैं व्याख्याता बन गया'।

इसके बाद, रोहिणी नक्षत्र के साथ मेघ गर्जना, बरखा रानी का आगमन, मेघ मल्हार के राग में पपैया पक्षी का गायन, मोरों का सामूहिक नृत्य, अपनी मेहबूबा को आकर्षित करने के लिए मनमोहक मोर नृत्य - इसे देखने का आनंद भी हमें बर्बाद हो गया है। भाई जी कहते हैं कि इस साल मैंने इन सभी चीजों को देखने से वंचित रहा। हमारे गाँव में मोरों की भरमार थी, बुजुर्ग मोर (कृष्णा नामक) ग्रामीणों के हाथों से चुगा करता था, और उनमें इतना स्नेह था कि इन ग्रामीणों को पशु-पक्षियों से।किसानों को खेतों में अपने नांदियों (बैल) को तैयार करने के लिए कवायत करना, इन दो नांदियों की वजह से पूरे संसार का पेट भरता था। इसलिए उनका इतना महत्व पहले बारी सोने के पश्चात् पैर जोतने के लिए (अनाज की पेरणी या बुहाई) के लिए हल की तैयारियां करना लोहार समाज उस समय सबसे व्यतीत व्यक्ति थे। वे किसानों के लिए लोहे की कोस को धार देने के लिए मशगूल रहते। किसानों की उनके घरों पर गर्दी, यह दृश्य हमारे भाई जी पुराने समय का वृतांत बता रहे थे। सभी की आर्थिक परिस्थिति जैसी-तैसी थी, पर मोहब्बत इतनी थी कि लोहार सोचता था कि मेरे इन औजारों से भरपूर तपन निकले

और मेरा गाँव पूरा पेट भर सके, और गाँव के बाहर से आने वाले साधु-संत भी भूखे न जाएं, यह दिलख्वाहिश लेकर लोहार आत्मीयता से काम करता था।

उस समय गरीबी की रेखा के नीचे ग्रामीण जी रहे थे, पर उनमें स्नेह और खुशहाली इतनी थी कि कोई गरीब किसान को बीज बोने में देरी हो जाती थी, उनके स्वजन अपने हल के साथ बैल को लेकर उसके खेत में मदद करने के लिए आ पहुंचते थे। देखिए उस समय का दृश्य और आज पूरा व्यवसाईकरण हो चुका है, न कोई प्रेम न भावना। तभी यह जान पड़ता है कि पुराण समय ही बहुत ही अच्छा था। यह युग उसके मुकाबले बहुत ही बोझिल नजर आता है, मनुष्य का प्रेम इतना घात गया है कि उन्हें दूसरे मनुष्य की व्यथा समझने को समय नहीं है। ठीक है, भाई जी अपने खेतों के आदिवासी के भागीदारों का वर्णन करते, कभी नहीं थकते। हमारे दो बैलों का नाम रेशमा और प्रेवा था। उन दो बैलों को कालू भाई और धनजी भाई अपनी जान से भी ज्यादा परवाह करते थे, और वे बैल भी"उन्ही दोनों का आदेश मानते थे, कितना भी बैलगाड़ी में वजन रहो, कभी पीछे कदम नहीं हुए। इस जोड़ी के मुकाबले गाँव में कोई बेल जोड़ी नहीं थी, पूरे बलवान, हष्ट-पुष्ट बेल थे। भाई जी, जब यह बात सुनते थे, तब उन्हें बड़ा गर्व महसूस होता था। मैं स्वतंत्र सेनानी की जीवनी बता रहा हूँ और उनकी मुँहज़बानी। मुझे तो याद भी नहीं, हमारी उम्र १३ या १४ साल की ही रही होगी, एक स्वतंत्र सेनानी दुःख भरे दिनों से गुजरता हुआ सुख की ओर बढ़ता गया। खेती बड़ी के बारे में उन्हें जानकारी इतनी थी कि वे घर बैठे भागदारकों को सूचना करते। इस समय इस साल बरसात किसी रहेगी, इसका अनुमान बताने के लिए (एक चिड़ीया का नाम वह अपना घर वृक्ष के ऊपर कितनी ऊचाई पर बनाती है, इसके ऊपर से अनुमान निकलते हुए किसान बीज बोया करता था)। देखिए उस समय का ज्ञान पूर्ण सत्यता पर रहता था, पर आज विज्ञान उसके सामने बहुत ही काम संकेत दे पाता है। बरसात के दिनों में मक्के की पेरणी, मूंगो की पेरणी, यह मेवाड़ की पहली फसल, यह फसलें पूर्णतः मानसून पर आधारित रहती थीं। मानसून ठीक रहा तो यह फसल किसानों के हाथों लगती थी, अन्यथा मक्के की घास जानवरों को खाने के लिए काम में आती थी। अब तो आधुनिकता पर खेती आधारित हो गई है, उत्पादन बड़ी संख्या में हो रहा है, पुराने समय और अब के समय में जमीन और आसमान का फर्क रहा है। रासायनिक खादों से जमीन का पोट काम हो रहा है, उत्पन्न अच्छा मिल रहा है, इसकी वजह भांडवलीकरण के आधार पर हो रही है। खेती में जमा पूंजी लगाने के पश्चात् ही आप अच्छा उत्पाद निकल पाएंगे।"

"खेत में बीज और खाद का मूल्य इतना बढ़ गया है कि सामान्य किसान वह नहीं ले पा रहा, छोटे किसानों को ट्रैक्टर और थ्रेशर नहीं रख सकता है। मजदूरों की मजदूरी इतनी बढ़ चुकी है कि प्रत्येक घर के सदस्य सभी खेतों में काम पर जाएं तो खेती का सही फायदा मिल सकता है। खेतियों का विभाजन हो चुका है, बटवारों ने खेत को छोटे होते रूप में विभाजन कर दिया है। तब हमारे भाई जी ने उस समय सामूहिक खेती का प्रस्ताव रखा, इससे कई किसानों ने समर्थन नहीं किया क्योंकि उस समय उनका कहना पड़ता था कि सब खेत समतल होने के बाद हम हमारा खेत कहां ढूंढेंगे। यह प्रस्ताव भाई जी को वापस लेना पड़ा, कोई किसान कहता है, 'मेरी २५ बिघा जमीन है,' तो कोई कहता है, 'मेरी ५ बिघा ही जमीन है।' इसमें किसानों का कोई तालमेल नहीं बैठ पाया। बड़े जमींदार किसानों के पास १०० और ५० बीजग जमीन थी, वे ट्रैक्टर द्वारा खेती करवाते थे। हमारे पिताजी के २५ बिघा जमीन राजस्थान में थी और १० एकड़ जमीन सेलू में थी। हमारे पिताजी के चचेरे भाई (भगवान दादा) के पास १०० बिघा जमीन थी। दूसरे सभी भाइयों के पास २० से २५ बिघा जमीन थीं। खा पी कर सभी सुखी थे, बहुत ही बड़ा परिवार, कुछ न कुछ समस्या हर दम आकर खड़ी रहती थी। हमारे गाँव के एकमात्र डॉक्टर भवरलाल जी जो कि पुरे गाँव का इलाज करते थे, उन्हें हम पांच कुंटल गेहूं और साल में जो भी फसल होती थी, उन्हें इलाज के बदले अनाज धान्य दिया करते थे। इस प्रकार हमारा व्यवहार भाई जी हमारे घर में लोकशाही सा व्यवहार भाई जी कभी महिलाओं के व्यवहार में दखल अंदाजी नहीं किया करते थे, किसी पर कोई प्रकार का बंधन नहीं पर सब कुछ शिस्त बद्ध समय का खास ख्याल रखा

जाता था। बैसाखी में गेहूं की फसल घर लेन की तैयारी की ही थी, क्योंकि हमारे दादी का स्वर्गवास हो गया था, वे करीबन ९५ साल की रही होगी। उनके आँखों की रौशनी जाने के बाद वे बिस्तर पर पड़ी रहीं। दादी का रामचरण होने के बाद हमारे माताजी और पिताजी चार धामों की यात्रा पर निकल पड़े। हमारी माँ ने उनकी इतनी सेवा की कि गाँव में इसका उनकी सेवा का उदाहरण दिया जाता था। हमारी माताजी जिन्दा दिलदारमहिला थी, पर दादी का स्वभाव मलादा तोड़ था, पर हमारे दादी ने कभी माँ की शिकायत नहीं की कि तुम इतना खर्च क्यों करती हो। सास-बहु का तालमेल बहुत ही अच्छा था। दस साल खटिये पर पड़े रहने के बाद उन्हें मृत्यु आई। उस समय हमारे पिताजी को खुशी हुई कि मेरी माँ को मुक्ति मिल गई। उस समय रुदाली का कार्यक्रम (रोना-धोना) बड़े पैमाने पर मेवाड़ में पुराने समय से चल रहा है। उस समय हमारे पिताजी दरवाजे पर खड़े होकर कह रहे थे कि कोई भी महिला रोए धोए नहीं और चिल्लाए नहीं, यह एक प्रकार से कुनीति समाज में परिकल्पित था और हे, उस समय महिलाएं पिताजी का कड़ा विरोध कर रही थीं पर पिताजी अपनी बात पर अडिंग रहे, कोई भी महिला मिलने भर आ सकती थी। रुदाली का कार्यक्रम एकदम स्थगित कर दिया गया, सामाजिक स्तर पर कूटनीति समाज में पहले सामना करना बहुत बड़ी बात है, जो समाज में कई सदियों से चल रहा है। इससे लोहा लेना बहुत बड़ी बात थी, इस कार्यक्रम में महिलाएं ही ज्यादा तकलीफ होती थीं, पर वे सुधारने के लिए तैयार नहीं थीं। आज भी राजस्थान में कुछ हलकों में यह प्रथा चलती है, आज भी इस पर एक विधवा महिला का साधारित सा उदाहरण देता हूँ कि अगर पुरुष का स्वर्गवास हो जाए और महिला विधवा हो जाए तो उस महिला को एक जेल भरी जिंदगी जीनी पड़ती है। वह महिला घर से बाहर नहीं निकल पाती थी, काले कपड़े पहनना अनिवार्य था, प्रातः विधि के लिए उससे पौ फटने के लिए जाना पड़ता था और रात्रि के समय जब सभी सो रहे होते तब ही वह घर से बाहर निकल सकती थी। इतनी बड़ी क्रूरता इन महिलाओं के साथ होती थी। पर अब समय बदल चुका है, प्रथा काम प्रमाण में हो गई है, पर बंद नहीं हुई है। माँ की मृत्युभोज के बाद भाई जी ने बड़ा विरोध किया पर उनका मुखिया, प्रधान, सरपंचों ने यह"कार्यक्रम चालू रखने की अपील पिताजी से की उनका यह कहना पड़ा था कि मृत्यु के १३ दिन के पश्चात् स्वजन, रिश्तेदार, बेटियाँ एक ही दिन श्रद्धांजलि देने आएँगी (गंगा भोजन)। एक ही समय में १३ दिन के पश्चात् यह कार्यक्रम खत्म हो जाएगा। अगर तुम मृत्यु भोज नहीं करते हो, तो कोई न कोई रिश्तेदार स्वजन कोई न कोई मिलने आएगा, तब रोज की व्यवस्था यह महिलाएँ नहीं कर पाएंगी। इसलिए एक ही समय पर यह मृत्यु भोज का कार्यक्रम करके इस कार्यक्रम को स्थगित किया जाए।

अगर मैं मेवाड़ क्षेत्र के हर समाज का मृत्यु के समय का विवरण करूँगा, तो आप यह कहेंगे कि आज भी यह प्रथा चल रही है, पर यह कहना मेरे लिए असंभव है। भाई जी का चौथा महीना बिस्तर पर बीता, खेतों की खलियानों से अनाज की बोरियाँ घर पहुँचीं, सभी के चेहरों पर हर्ष और उल्लास था। अगर उस समय किसी किसान की अनाज निकलने में देरी हो जाती, तो सभी साथीदार किसान अपने बेल जोत कर उस किसान को अनाज निकलवाने में मदद करते थे। इससे मेवाड़ की भाषा में 'दामिन' कहा करते हैं, जिसका अर्थ है बेलों के पैरों तले गेहूँ की फसल को रोकना। फसल का चारा एक तरफ गेहूँ, एक तरफ निकल दिया जाता था। पर यह कार्य भी बड़ा कठिन था, व्यक्ति लकड़ी के खाट के ऊपर खड़ा होकर गेहूँ और चारा दोनों को साथ में अपना करता था। सभी कुछ हवा पर निर्भर करता था, जिस तरफ हवा का रुख रहता, तवही उस किसान को खड़ा होकर ऊपर का जाता था। तब ही गेहूँ का चारा एक तरफ हवा से उड़ जाता था और गेहूँ निचे जमीन पर गिरता था। इस पर भी काफी समय लगता था क्योंकि उस समय ऐसा कोई साधन नहीं था कि कुछ समय में फसल गेहूँ और चारे को अलग कर पाए, सब कुछ निसर्ग पर निर्भर था।"

इस प्रकार सभी किसानों की चर्चा यह रहती थी कि किसको कितनी फसल हुई, कम फसल आने वाले किसान यह आंकते थे कि हमारी कहां गलती हुई। इसपर एक कहावत है कि 'हुई तो हुई, नहीं तो क्यों

नहीं हुई'। ठीक इसी प्रकार किसानों की बातों से यह प्रतीत होता था। भाई जी कहा करते थे कि फसल घर पर आ गई वैशाख के महीने में, जिसमें होली का पर्व होता है। उत्तर भारतीयों के लिए यह सबसे बड़ा त्योहार माना जाता है। खासकर राजस्थान, मध्य प्रदेश, और गुजरात के कुछ भागों में यह त्योहार सबसे ज्यादा उत्साहपूर्ण माना जाता है। अगर कोई मनाता है, तो वह मीणा जाति के लोग (आदिवासी) होते हैं। उनका नृत्य देखकर हमारे पैर भी ताल पकड़ने लगते हैं। किशोरियों का गायन और नृत्य देखकर भी हम उनके साथ जुड़ जाते हैं। चार किशोरियाँ आगे, चार किशोर पीछे में।

इस होली के पर्व के बारे में जैसे कि पहले भी इसका वर्णन कर चुका हूँ प्रेमवीर इस उत्सव की बेसबरी से इंतजार करते थे। गांव का माहौल रहा, पर कुछ चीजें चुरा चुरा कर खाने में बड़ा मजा आता है। मेरे अगले संस्करण में इसका पूरा विवरण दूंगा, होली का दहन उत्सव ख़त्म होने के बाद आगे ढूँढ़ने का प्रोग्राम चालू हुआ। जिसके यहाँ बच्चा या बच्ची जन्म लेता है, वह पर अपनी भांजी या भांजे के लिए मामा पक्ष, बाबुल के घर के सदस्य साड़ी, चनिया चोली, बच्चों के कपड़े, कुछ मीठे व्यंजन, माता-पिता अपने लाड़ों के यहाँ ले जाते हैं। लाड़ो की ससुराल में चूरमा-बाटी, घी-बाटी का पकवान पूरे कुटुंबियों को खिलाया जाता है। इस प्रकार छोटा सा विवरण मैंने बताया। आगे भाई जी तबियत में सुधार होने लगा, वे अपनी लकड़ी के साथ बहार बैठने लगे थे, सुकून भरी जिंदगी आगे और भी किस्से-कहानियाँ की भरमार। जब कभी किसी किसान की फसल कम होती थी, तो भाई जी उससे समझा कर कहते थे कि कबीर दासजी ने अपने एक दोहे में कहा है, 'प्रभुजी इतना अनाज दो कि मेरा कुटुंब भी भूका न रहे और मेरे घर के सामने आने वाले साधु भूका न जाए':

'साईं इतना दीजिए जा मैं कुटुंब समाय

में भी भूका न रहूं साधु न भूका जाए।"

इस तरह पिताजी उससे सांत्वना दिया करते थे। पिताजी की इन सभी भूमिकाओं में हमारे माताजी का बड़ा सहयोग रहा। कभी-कभी उसे भी राय मशवरा पिताजी किया करते थे। समय का परिवर्तन हो चुका था, बाइजी किसानों को कृषि विश्वविद्यालय से संपर्क करने को कहती थीं, कहते थे पर मजबूरन किसानों को ७० किमी की दूरी तय करना थोड़ा सा कठिन था। रेडियो पर आए हुए समाचार, हवामान की स्थिति, मानसून कैसा रहेगा, बुआई कब करें, रेडियो का यह एक ही माध्यम भाईजी किसानों को मार्गदर्शन करते थे। पर उन्हें जो युवा छात्र मिलने को आते थे, उनको भी विज्ञान की प्रगति का पाठ पढ़ाया करते थे। कहते थे की शिक्षा यह एक ऐसा गहना है, कोई इसे चुरा नहीं सकता, ज्ञान दें से ज्ञान में बढ़ोतरी होती है। ग्राम के गुरुजनों से भी वे हित गूंज किया करते थे, उनसे बन पड़े उतनी जानकारी पिताजी सकलंन किया करते थे। पुराने समय में गुरुजनों को बड़ा आदर भाव दिया जाता था, यह बड़े कठोर एवं शिस्त प्रिय थे। उस ग्राम के छात्र उनसे घबरा कर सामने नहीं आते थे, पर पिताजी के पास उनकी बैठक रहती थी। असंख्य सवाल, 'हवाई जहाज कैसे उड़ता है?', 'केले पर रेलवे कैसे चल पाती है?', इतना बड़ा जहाज पानी पर कैसे चल सकता है? प्रश्न साधे थे, पर उत्तर देने वाले गुरूजी पूरा समझा कर वे ग्रामीणों को बताया करते थे। सब कुछ गणितीय अंदाज में, घड़ी का सिद्धांत, हवा का व बाष्पीकरण का उपयोग, किस प्रकार से किया जाता है, यह आज हमे मामूली सी बात लग रही है, पर उस समय यह बहुत बड़ा वैज्ञानिक सोच थी। भाईजी को हेर बात की जिज्ञासा बहुत थी, वे नए-नए आविष्कारों, संशोधनों को बड़ा महत्व देते थे, और उनकी लाडला कांग्रेस पक्ष का गुणगान करते थे। वे कभी नहीं थकते, लोकसभा में कांग्रेस का नेता किस प्रकार चर्चा में भाग लेकर विरोधियों पर हावी होता था। यह देख कर पिताजी बड़ेखुश नजर आते थे और कहते थे, 'देखो, ऐसे नेताओं को देश को नितांत जरुरत है।' तभी दूरदर्शन का आविष्कार हो चुका था, जैसा कि मैं पहले भी बता चुका हूँ। मेरे पिताजी कांग्रेस पक्ष के अलावा कोई दूसरे पक्ष की बात सुनना पसंद नहीं करते थे। खैर, वे सभी संयोगी

कांग्रेस के ही थे, इसलिए वे अपना दृष्टिकोण ठोक कर यह कहते थे, 'कांग्रेस जो कह रही है, वही सत्य है।' विशेषकर, कांग्रेस पक्ष ही बड़ा पक्ष होने की वजह से स्वतंत्रता के अग्रणी नेता उसी में थे। विरोधियों में राम मनोहर लोहिया जैसे कर्त्तव्यशील समाजवाद के प्रमुख नेता थे, पर महात्मा जी का, पंडित जी का, सरदार का पूरा झुकाव कांग्रेस की तरफ था। कांग्रेस की अगली पीढ़ी के नेता श्रीमती इंदिरा गांधी इन सभी नेताओं में विशेषप्रिय थीं। उनका कोई भी निर्णय निर्णायक और धाड़सी रहता था। पिताजी से यह सुनकर हमारे दूसरे भाई साहब चम्पालालजी ने अपनी होटल में श्रीमती गांधी की तीन बातें दीवार पर लिखवा दी थीं, '1. कड़ी मेहनत, 2. सच्ची लगन, 3. दूरदृष्टि, यह जीवन की सफलता की पुँजी हैं।' इंदिरा जी के बारे में जितना कहें, जितना सुनें और लिखें, बहुत ही कम है। इस सनातनी भारतवर्ष में कृष्ण जी की बड़ी कृपा रही, दो प्रधानमंत्री ऐसे दिए कि देश के विकास की गति ने बड़ी रफ्तार पकड़ी, इन दो नेताओं ने विदेश में भी काफी धाक जमाया। 1. इंदिरा जी, 2. नरेन्द्र भाई मोदी, यह देश का बड़ा सौभाग्य है। इतना बड़ा देश, इतनी लोकसंख्या, महामारी, सीमाओं पर दुश्मनों की नजर, यह सब कुछ संभालना मामूली सी बात है, किसी प्रकार का कोई भी राजनीतिक विषय निकले तो इन दो बड़े नेताओं सिवाय इतिहास अधूरा है। यह इंदिरा जी का समय और मोदी जी का समय विश्लेषण मैंने किया है (पुराने समय और अब के समय की तुलना)।"

भाई जी, कट्टर कांग्रेसी राजस्थान में जनता पक्ष जनसंघ की और आग्रहण करना शुरू हो चुका था। हमारे गांव में चार या पांच ही मकान कांग्रेस के साथ थे, उसी प्रकार, और आदिवासी भाई पूरे के पूरे कांग्रेस पक्ष में थे। दूसरे ब्राह्मणों में जनसंघ व सभी तरह से जुड़े हुए लोग आगे बढ़कर हमारा क्षेत्र आदिवासी क्षेत्र घोषित किया गया, लोकसभा एवं विधानसभा की आरक्षित सीटें आदिवासियों के लिए घोषित कर दी गईं, पर अब हर तरफ से विकास की गंगा बह रही है। हमारे आदिवासी भाई बड़े बड़े अहोदे पर हैं, हमारे राष्ट्रपति जी आदिवासी क्षेत्र के ही हैं, गरीबी से निकले हुए यह दो महानुभाव राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री डॉ. आंबेडकर ने लिखित घटना से यह सब कुछ शक्य हो पाया है। हर व्यक्ति चुनाव लड़ सकता है, इसका हक सभी को प्राप्त है।

डॉ साहब आंबेडकर का नाम आते ही मुझे इनका हिंदुस्तान पर एक बहुत बड़ा एहसान नजर आता है। स्वतंत्रता के बाद जब हिंदुस्तान का विभाजन हुआ, तभी डॉ को अपने धर्म में आने के लिए (मुस्लिम) मुस्लिम नेताओं ने बहुत आग्रह किया, पर डॉ साहब ने इनकार कहते हुए बौद्ध धर्म को अपनाया, वे किसी भी दूसरे धर्म में नहीं गए। इस तरह उन्होंने हिंदुस्तान के सारे खंडों को घेरकर इन सभी बुद्धिजीवियों को प्रणाम करना, बौद्ध धर्म को या हिन्दू सनातन का नववा विष्णु अवतार माना गया, इसमें भी इतिहास करो में मतभेद है। यह भाई जी, जब स्वतंत्र संग्राम में इन नेताओं का जीना करते हैं, तभी सभी जनों में अलग-अलग गुण नजर आते हैं। भाई जी, हर एक कहानी मुँह जवानी थी, किस नेता ने कहा, पर सजा भोगी और किस आंदोलन के तहत और सत्याग्रही को होने वाली तकलीफें, भाई जी जैसे कोई चित्रपट अपनी आखों के सामने चल रहा हो, उस तरह बयान करते थे, उस समय बहुत सारा वर्ग निजामों से मिलकर अपना स्थान पक्का करने के लिए पीछे थे, पर कुछ बौद्ध, दलित एवं मुस्लिम समाज पूरा का पूरा वैसा नहीं था, इसमें स्वतंत्र सेनानियों की गफलत हो गई कि सभी निजामियों से मिले हुए हैं। पर कुछ दलित एवं मुस्लिम हिंदुस्तान की तरफ थे, उन्होंने स्वतंत्र संग्राम में हिस्सा भी लिया था, पर उन्हें स्वतंत्र सैनिक का एवं सन्मान पत्र नहीं दिया गया, बहुत सरे मुस्लिम देश के प्रति बड़े वफादार थे पर उनकी आवाज दबी की दबी ही रह गई, इसका सरकार ने कोई सज्ञान नहीं लिया हमारे भाई जी कहा करते थे कि वे भी लडवैया की तरह लड़े थे। कुछ मुस्लिम भाई जरूर निजामियों की तरह थे पर उनसे ज्यादा स्वतंत्र सेनानी मराठवाड़ा में थे। खैर, सब अपनी खुशियों के कारण सब कुछ समीपति भाव में मग्न हो गए थे। 1938 के आंदोलन में भाई जी नहीं थे, 1942 के बाद उनका इन सत्याग्रहियों से नाता शुरू हुआ। जो भारत संस्थानिक आजाद होने के बाद भी सम्मिलित नहीं हुए, इनमें तीन राज्य थे - गुजरात का जूनागढ़, तेलंगाना का हैदराबाद, और उत्तरी भाग का जम्मू और

कश्मीर। इन सभी राज्यों में सबसे बड़ा हैदराबाद था। और यहाँ तीनो राज्य गुलामगिरी से मुक्त होना चाहते थे। सं 1942 में आंदोलन अंतिम चरण पर था। भेजी थोड़े तबियत के कारण थके थके से लग रहे थे, पर अमन अभी भी ताजा तंदुरुस्त था। अपनी अगली पीढ़ी का इसका ज्ञान हो, इसलिए वेयुवा पीढ़ी पर ज्यादा जोर दिया करते थे। इतिहास हम खास पढ़े (भारत का हर युवा) पढ़े आज के ज़माने की रफ्तार बदल गई है। सब कुछ जल्दी से जल्दी चाहते हैं। आम का पेड़ लगते ही आम की अपेक्षा करते हैं, शायद वह कहावतें भूल गए हैं "सब्र का फल मीठा होता है"। उस समय संसाधनों की कमी थी और मेरे पिताजी हमेशा स्वामी विवेकानंदजी का उदाहरण देते थे, "अगर ५१ अकल्मन्द विवेकानंदजी मिल जाते तो देश की काया पलट हो जाती"। स्वामीजी हमेशा कहते थे "मुक्त अपने आप को होना पड़ेगा, किसी से मदद की अपेक्षा मत रखिए"। भाई जी, कर्मवादी नेताओं को ज्यादा पसंद करते थे। उन्होंने और उदाहरण दिए कि स्वामी विवेकानंदजी ने भारत की और शिकागो धर्म महासभा के बारे में हिस्सा लिया, उस भाषण के तहत उनकी इतनी वाहवाही हुई (तारीफ हुई कि वो एक दिन में ही धर्माचार्य योगी की उपाधि मिल गई)। उसी समय पश्चिम बंगाल में अकाल तांडव नृत्य कर रहा था। सब तरफ लाचारी ही लाचारी जब वह भारत लौट रहे थे, तब मित्र गांव ने पूछा विवेकानंदजी, आपका स्वागत कैसे होगा यहाँ तो खाने-पीने के लाले पड़े हुए हैं। तभी स्वामीजी ने कहा, "मेरा स्वागत बड़ी धूमधाम से मनाया जाए, इस पर उनके मित्र आचरज पड़े, एक मित्र को रहा नहीं गया, उन्होंने स्वामीजी से प्रश्न कर डाला कि "इतने अकाल में इतने धूमधाम से स्वागत क्यों किया जाए पर" तभी स्वामीजी ने उत्तर दिया, "लोगों को मुझे कोन हूँ इसकी पहचान होगी"। जिसके बाद मेरे विचार कैसे हैं, इन विचारों का प्रचार होना जरूरी है। भले ही आज अकाल है, पर मेरे विचार देश प्रांतों को ताड़ने का प्रयास करेंगे ऐसे थे हमारे स्वामीजी। ये सब बातें बुजुर्ग, पढ़े-लिखे, व्याख्याता प्राध्यापक जानते ही होंगे। और मेरी सोच भी सामान्य होने की वजह से ग्रामीण युवा के सामने रखता हूँ, यह भाई जी ने स्वामीजी के बारे में बताया। छोटी-छोटी कहानियों के किस्सों से बहुत कुछ सीखा और किया जा सकता है। आगे चलते हुए बहुत से महापुरुषों की गाथा में आपके सामने रखता हूँ। हैदराबाद में मुक्ति संग्राम के लिए चौधरी साहब ने गृहमंत्री सरदार पटेल की हुक्म से 9 सितंबर 1948 कोहैदराबाद में सैनिकी कार्यवाही का आदेश दिया गया (उससे पुलिस कार्यवाही भी कहते हैं)। वे जनरल राजेंद्र सिंघ जी एवं खुद ने इस कार्यवाही को अंजाम दिया। हैदराबाद निजामों की जगह पर भी सत्ता उससे काबिज की गई निजामों के वजीदे आलम मराठवाड़ा के डोर पर थे तब स्वतंत्र सेनानी काशीनाथ काका कुलकर्णी ने आने वाले रास्ते पर बमबधानकर पल को उखाड़ दिया। मैं हेर स्वतंत्र सेनानी की कर्तव्यगारी पेश करूंगा, आगे इसी प्रकार जिल्हा बदनापुर को पुलिस सत्ता उड़ाने का संकल्प लेने वाले श्री हरिश्चंद्र जाधव ने अपनी इच्छाशक्ति से पुलिस स्टेशन तहस-नहस कर दिया और बाद में उड़ा दिया इन वीरों की वीरगाथा जितनी भी लिखी गई हैं। जिल्हा परभणी आपको पता है कि इस जिले का नाम आते ही चारठानकरजी, पवार साहब, कालिदास काका इन्होंने आखिरी जोर लगाते हुए। इन कोरवो की सेना को भगाने में इन महारथी का हिस्सा रहा। उन्हें भगाने पर मजबूर किया हैदराबाद निजाम सल्तनत रजाकारों का सूर्यास्त होने में कुछ घंटे ही रहे थे, पर विद्रोह ने अपना काम कर दिखाया। तब हमारे भाई जी हमें बताते थे कि हमने गांव-गांव जाकर लोगों को मनाने का काम करना पड़ता था। एक गांव से दूसरे गांव पैदल यात्रा करनी पड़ती थी और ३ से १० सेनानियों का समूह लेकर मराठवाड़ा विभाग में पैदल यात्रा करना कोई मामूली बात नहीं थी। आगे रजाकारों गांव-गुंडों का भी सामना करना पड़ता था, पर भाई जी कहते थे कि हेर सेनानी का बहुमूल्य साथ मिला और उनके खाने की व्यवस्था ग्रामवासियों करने लगे थे, नहीं तो रजाकारों से डर कर हमें भूखा ही रहना पड़ता था क्योंकि ग्रामवासी सभी रजाकारों के जुल्म से वाकिफ थे। हमारे भाई जी का दौरा जालना, दौलताबाद, हिंगोली इन गांवों का भ्रमण किया। बिच-बिच में सबसे बड़ा डर तो दौलताबाद के रजाकारों का था। वह उस समय औरंगाबाद निजामों का गढ़ था। पर बचे हुए हिन्दुस्तानी ८० प्रतिशत हैदरबाद में थे, वह का राजा मुसलमान था, २० प्रतिशत आबादी क्षेत्र यह कोई भी मुसलमान भाईयों के विरोध में नहीं था, वह सिर्फ रजाकार और निजाम के विरोध में था। इस समय में बहुत से स्वतंत्र सेनानी शहीद हुए जिन्होंने जेल

भुगती जो भूमिगत रहे जो सत्याग्रही आंदोलन करियो की पूर्ण जानकारी में नहीं दे पाऊंगा। पर भाई जी सुनी हुई कुछ तारीखों के साथ कुछ घटनाएं बताऊंगा।

१. १५१ स्वतंत्र सेनानी शहीद हुए, इनमें से ज्यादातर हिंगोली जिल्हा, कलमनूरी तहसील, के थे।

२. सन् १९४२ के समय भारत छेड़ो आंदोलन सत्याग्रह के कारण, करीबन ७५ प्रतिशत स्वतंत्र सेनानी थे।

३. सन् १९४७ और १९४८ में जिन्हें कैद भुगतनी पड़ी, उसमें १९३८ से १९४८ तक के स्वतंत्र सेनानी थे, पर करीबन २३५ सभासद थे।

४. "वन्दे मातरम" के जो विद्यार्थी आंदोलन में थे, उसमें भी कई छात्र शामिल थे।

इस प्रकार कई स्वतंत्र सेनानी ऐसे थे कि वे हुतात्मा हो चुके थे। वे सन्मान पत्र और पेंशन से वंचित थे, पर अब बहुत देर हो चुकी है और वे स्वर्गवास हो चुके हैं। उन सभी को हमारा प्रणाम। इस तरह स्वतंत्र सेनानियों की जीवनी, वे खुद बता पाते तो आज भी स्वमरा में रहते। भाई जी ने स्वतंत्र संग्राम की बहुत सारी पुस्तकें पढ़ी थीं, अनंत रावजी, भलेरावजी और चारठानकरजी की पुस्तकों से उन्हें ज्यादा जानकारी मिली। इस प्रकार की जानकारी एकत्र हुई और भाई जी अब स्वस्थ हो चुके थे। उन्हें और मराठवाड़ा में आने के लिए वह पर घरवालों की नाकामी से वे वापस महाराष्ट्र नहीं आ पाए। रोज की तरह हमारे यहां ग्रामीणों का जमघट इन सभी बातों से भाई जी का समय अच्छी तरह से गुजरा। हमारे भाई जी कहते थे कि उम्र के आख़री पड़ाव में कुछ भी नहीं चाहिए, सिर्फ दो वचन पहले बहुग्रामीण से आदरपूर्वक बात करें, वही बुढ़ापे का खजाना है। जवानी में बहुत सारा धन कमाया पर आख़िर कर पूछने वाला न मिले तो सब व्यर्थ। इसलिए इस तरह बुजुर्ग खुश रह पाएंगे, खैर ये अपने अपने विचार हैं। भाई जी चिकित्सक किस्म के व्यक्ति थे, जो बुजुर्ग उनसे मिलने आते उनके कहने के पहले ही भाई जी उनका दर्द समझ जाते थे। ईश्वर ने इस ब्रह्मांड की रचना ही इसी प्रकार की है कि मनुष्य, प्राणी और पशु को भी अंतिम समय पर सब भोगना पड़ता है। हमारे दादा, काका अशिक्षित थे पर बड़े ज्ञानी थे। अब चर्चा पुराने समय को छोड़, नए समय की होती थी। उस समय सरकारी नौकरी कोई नहीं करना चाहता था, पर अब समय के साथ नौकरियां करने लगे। पहले खेती सर्वोत्तम थी, व्यापार माध्यम शरण में आता था, सरकारी दरबारी नौकरी कनिष्ठ में आती थी, पर समय का चाह पूरी तरह धूम धाम कोई खेती बड़ी करने को तैयार नहीं है। सभी को नौकरियां की अपेक्षा मालिक बनना नहीं चाहते, पर नौकर बनना मंजूर है।और अब भाई जी के पैर के जख्म के कारण उन्हें उदयपुर अस्पताल में लेना जाना पड़ा, तब डॉक्टर ने देखने के बाद कहा कि अब इनके पैर का ऑपरेशन करना पड़ेगा। उस समय फिर से मानसिक टेंशन बढ़ गई और चार महीने बिस्तर पर लेटकर भी पैर ठीक नहीं हो पाया। आगे डॉक्टर के सुझाव के मुताबिक ऑपरेशन की तैयारी की गई और अब उदयपुर के डॉक्टर की गलती की वजह से ऑपरेशन असफल रहा। इस डॉक्टर ने पिताजी की मधुमेह की बीमारी की जाँच करवाई बिना ही ऑपरेशन कर डाला, ऑपरेशन पैर का होने की वजह से इतना खून बहा कि पिताजी बेहोश हो गए। तब डॉक्टर ने घबरा कर पिताजी को सरकारी अस्पताल में ले जाने की साहस दी। उस समय पूरा परिवार पिताजी के साथ था। हमें बस ऐसा था कि कुछ भी करके पिताजी की जान बचानी चाहिए, पर ईश्वर को कुछ और ही मंजूर था और पिताजी का शरीर अनंत ब्रह्माण्ड में विलीन हो गया। उस समय कुछ सुधार नहीं पाया और उदयपुर में भोपालसिंघजी के अस्पताल में पिताजी ने अपने प्राण त्याग दिए। एक डॉक्टर की वजह से यह हादसा हुआ, पर बड़े बुजुर्ग कहते हैं "काल और समय का मिलान हो जाए तो उससे कोई नहीं रोक सकता"। अब पिताजी को उदयपुर से उनके जन्म स्थान सीरिया को संध्या में लाया गया और हिन्दुओं में अंतिम संस्कार रात्रि में नहीं किया जाता।

अब सभी गाँव में यह खबर पहुंच गई कि भाई जी (मेघजी दादा) नहीं रहे। संध्या का समय है, इस पर गाँव के लोग दर्शन के लिए आना शुरू हो गए हैं। रात पूरी बीत गई थी और दूसरे गाँव के लोग, जो दर्शन के लिए आए थे, उन्होंने सीरिया ग्राम के रास्ते पर ही अपनी रात बिताई। वहाँ सभी वर्ग के लोग शामिल थे, ग्रामों की सड़कें पथरीली थीं। फिर सभी ग्राम के और जो लोग गाँव गाँव से आए थे, उन्होंने वही रात बीताई और जैसे तैसे रात गुजर गई। महिलाओं का ह्रदय टूटता हुआ और रिश्तेदारों के आँसुओं से डब डबाता पानी। इसी तरह खेतों की भागीदारी और आदिवासीयों को बड़ा झटका लगा। रात्रि का समय मानो दिन में बदल गया, लोगों का आवागमन शुरू हो गया। जैसे-जैसे सुबह हुई, वैसे-वैसे रिश्तेदारों दूसरे गाँव से आए हुए लोग की भीड़ जुटने लगी। मानो जैसे गाँव का मेला लगा हो।

सुबह ही सुबह, धनजी नमक आदिवासी युवा भाई जी के खेती में पार्टनर, अपने घर से बैलगाड़ी से लकड़ी श्मशान घाट तक पहुँचाई थी। जिस तरह से हो, उसी तरह से ग्रामीणों ने पूरी अंतिम विदाई की तैयारी कर ली थी। उसी तरह, स्तब्धता और पूरे गाँव में श्मशान में और शांतता और महिलाओं का रोना रुक ही नहीं रहा था। "मेघजी दादा अमर रहें, स्वतंत्र सेनानी अमर रहें" यह कहते हुए उन्होंने श्मशान की ओर प्रस्थान किया और अलोट भीड़ के साथ अंतिम विदाई की तैयारी चौ रही थी। इन सब चीजों के उलझने की वजह से हम तहसीलदार, राज्य सरकार और तहसीलदार तक यह बात पहुँचा ही नहीं पाएं। और पुलिस सलामी से वंचित रहने का इतना सब हुआ, आपको यह सब बताने का काम था। खैर, ग्रामीणों ने भी इस पर ध्यान नहीं दिया, एक सेनानी का मृत्यु का महोत्सव शुरू हुआ है। भाई जी कहा करते थे कि मृत्यु यह महोत्सव है, गीता का ज्ञान होने से उन्हें मृत्यु का डर कभी नहीं लगा (चाहे स्वतंत्रता आंदोलन या जेल आंदोलन) हुतात्मा शाहीद होने की भी उनकी तैयारी थी।

ऐसे आदर्श स्वतंत्र सेनानी, आदर्श पिता, आदर्श ग्राम सेवक (सरपंच), इन गुणों से मुख्यतः रहे हमारे भाई जी के अंतिम दर्शन के लिए १२ घंटे तक लोग खड़े रहे। महाकाल मंदिर, सिरिया ग्राम का वही पर, श्मशान घाट के बाजु में ही लगता था और अब अंतिम विदाई के लिए ज्वाला प्रज्वलित की गई सनातनियों व हिन्दू परंपरा अंतर्गत उन्हें अग्नि दी गई। ज्वाला के तरह हमारे पिताजी भी हमेशा प्रकाशित रहे। दूसरों की मदद, सामाजिक परम हितेषी एवं माँ भारती का लाडला, एक स्वतंत्र संग्राम आज पंचतत्व में विलीन हो चुका था। कहीं लग रहा था की मानो जैसे माँ भारती प्रति अपना सन्मान प्रकट करने के लिए जिस प्रकार धीरे-धीरे सब शांत होता गया, लोग अपने-अपने घरों की और प्रस्थान लेने लगे, इस तरह अंतिम विदाई समाप्त हुई। अब जो लोग महाराष्ट्र, गुजरात, में थे, बारी-बारी से भाई जी के परिवार को सांत्वना देने आते रहते थे। हिन्दू संस्कृति के नुसार, कार्यक्रम १३ दिनों तक चलता है, मृत्यु के पश्चात् गंगाभोजन रखा गया, सभी ५ गांवों से ग्रामीणों को आमंत्रित किया गया। समय निकलता गया, सब विधि-पर्वक सभी कार्यक्रम सम्पन्न किए गए अब भाई जी की यादें भी धुंधली होती गईं, की वे थे तो इस घर में प्राण थे। अब सब सुना-सुना सा लगने लगा हमारे पाछो भाइयों व एक बहन एवं चचेरे भाइयों को साथ में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ हमारे माता-पिता ने कभी अपने पराये चचेरे सम्बंधियों में कभी भेदभाव नहीं किया, यह अपने आप में बहुत बड़ी बात है। हमारे ज्येष्ठ चचेरे भाई लक्ष्मण भैया को बहुत पढ़ाया (भाई जी ने) और वे चिकित्सक की तैयारी में थे (ऍम बी बी एस) पर भगवान को कुछ और ही मंजूर था, १ नंबर से फेल हो गए। अबहमारे पिताजी की मनोकामना मेरे प्रति यह थी, "रामजी पद्मावत," ऐसा वकील बने पर, स्वजन कुछ-कुछ लोगों को साकार होते, अब हमारा परिवार पूरी तरह सुरक्षित हो चला था। हमारी अभी भाई-बहनों की पढ़ाई नूतन विद्यालय में हुई, इसी विद्यालय में हमारी बहन श्रीमति निर्मला शिवरामजी पद्मावत एक प्राध्यापक पद हेतु कार्यरत हैं। दूसरे हमारे छोटे भाई बंशीलालजी नारायणजी पद्मावत नूतन विद्यालय सेलू में प्राध्यापक के रूप में कार्यरत हैं। इस तरह, हर एक भाई-बहन संयोग सम्मिलित भाव से हमारा परिवार आज भी भाई जी के कहे हुए मार्ग पर कार्यरत है। ईमानदारी, सय्यामता में थोड़ा बल लग सकता है, पर वह अंतिम परीक्षा में पास होता है। मेरी नानी कहती थी, "सत्य सत मत छोड़िए।

सत छोड़िए, पथ जाए।

सत की लक्ष्मी फिर से लौट पड़ेगी।।

सत्यवान, सत्य मत छोड़ना, सत्य छोड़ते ही पथ चले जाएगी, सत्य की लक्ष्मी फिर से लौट पड़ेगी।

तात्पर्य यह कि सत्य में प्रखर शक्ति होती है। लिखने के लिए हमारे पिताजी के पास बहुत बड़ी विचार धारा थी। हमारा हिंदुस्तान आज ७५वा अमृत महोत्सव वर्ष धारापुर्वक मना रहा है। बड़े गर्व के साथ यह कहा जा सकता है कि इतने कम समय में हमारी अर्थव्यवस्था उन्हें भी आगे बढ़ा दी गई है (इंग्लैंड)। हम उन्हें सलाम करते थे, पर अब समय बदल गया है, वे हमें सलाम कर रहे हैं, यानी हमें भी एहसास हो रहा है कि हमारे शहीदों और स्वतंत्रता सेनानियों का बलिदान व्यर्थ नहीं गया। इस बड़े देश में भले-बुरे लोग रहते हैं, पर कुछ जायके अब भी सक्रिय हैं। हम सभी भारतीयों को मिलकर इन्हें मिटा देना चाहिए। हमें यह भूल जाना चाहिए कि हमें क्या करना है, क्या लेना-देना है, और देश को आगे बढ़ाने के लिए हमें भी अपना योगदान देना चाहिए। जैसे कि हमारे प्रधानमंत्री जी ने कहा कि स्वच्छता को हमें अपने आप में करना होगा, अगर गांधीजी ने इस धरातल पर जन्म लिया फिर भी वे इसे नहीं कर सके, तो उन्हें समाज का साथ चाहिए होगा। महान विचारक उनकी याद में, हमें इस बड़े समय में हिंदुस्तान के भ्रष्टाचारियों, अत्याचारियों, देशद्रोहियों के साथ उठान करना होगा (स्वच्छ भारत, निर्मल भारत)।

हम सदा यह ध्यान में रखें कि हमारी अमर ज्योति हमेशा प्रज्वलित रहे, क्योंकि उससे हमें हमारे शहीदों और स्वतंत्र सेनिकों के इन सपूतों का स्मरण रहना चाहिए। याद रखना चाहिए कि हमारे नए युवा को इतिहास का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है, क्योंकि भारत को विखंडित करके अंग्रेजों ने कैसे फायदा उठाया और राजा-महाराजा ने अपने स्वार्थ के लिए मुघल सल्तनत का साथ दिया, इससे सिखना चाहिए। सनातन धर्म में दया भरी हुई है। हिन्दू धर्म ने जो धरा में अच्छे हैं, उसका समर्थन करना चाहिए, चाहे वह किसी धर्म का भी हो। भगवान कृष्णा ने गीता में कहा है कि यह कोई ऐसा धर्म नहीं है जो मनुष्य को जन्म से मृत्यु तक का ज्ञान देता है। यह ग्रंथ मनुष्य को जीवन कैसे व्यतीत करना चाहिए, इसका ज्ञान प्रदान करता है। योग, भक्ति, ज्ञान मार्ग इस ग्रंथ में पूर्णता से शिक्षा देते हैं। यह धर्मग्रंथ विभिन्न भाषाओं में लिखा गया है। प्रत्येक व्यक्ति को इस ग्रंथ को ध्यान लगाकर पढ़ना चाहिए, तब ही उसकी आत्मा से छाई हुई धूल को हटाने का अनुभव होगा। जीवन, प्रकृति, पशु-पक्षी, और सभी जीवन रूप बड़े हसीन लगने लगते हैं, जब ज्ञान की गंगा को आध्यात्म से जोड़ों तो यह दृष्टि आपको हर चीज़ रूबरू कराएगी। इस तरह, हमारी दादी कहानियां सुनाकर विचारों को संजीवनी देने का काम करती हैं। स्वतंत्र सेनानियों और शहीदों के बलिदानों की गाथा कहने से वह काम ही है। हर एक स्वतंत्र सेनानी और शहीद के पूर्व जीवन का आर्थिक और सामाजिक बहिष्कार का विवरण, मेरे विचारों के अनुसार, उनकी कहानियों को आप तक पहुंचाने में मदद करता हूँ। मैंने अपने भाईजी के सुने किस्सों को आप तक पहुंचा रहा हूं। हर एक शहीद की कहानी प्रकाश डालना व्यक्तिगत और भयावह लगता है, और भारतीय सेनाओं के सैनिकों के लिए शहीद होने के बाद की बड़ी दर्दनाक कहानी होती है। शहीद होने के पश्चात उनके पारिवारिक हालात और घरेलू समस्याओं का सामना विधवा वीर माता कैसे करती है, यह सभी को जानकर सज्ञान में आता है। शहीद होने पर अर्थी को कंधा देने के लिए उमड़े लोग शासन के माध्यम से जो धन राशि दी जाती है, वीर माताओं को पेंशन के रूप में भी धन राशि दी जाती है, पर यह सब कुछ नहीं है। पैसों से आर्थिक स्थिति ठीक हो सकती है, पर पिताजी का काम माँ पर आकर टिकता है, तब माँ को दोनों भूमिकाएँ निभानी पड़ती हैं (पिता)। घरेलू समस्याओं से संघर्ष करना पड़ता है, और माता और बहनों को भी संघर्ष करना पड़ता है,

इसलिए समाज भी उन्हें हो सके वो सामाजिक और घरेलू समस्याओं के लिए मदद करे। उन मातृ बहनों को भी लगेगा कि मेरा देश ही मेरा परिवार है, यह एक मेरे निकट मित्र सैनिक की कहानी है।

हमारी दादी की कुछ खरी-खरी सी बातें भविष्य में पलें पड़ती हैं। स्वतंत्र सेनानियों का हाल आपको लिखकर बता चुका हूँ। पर यह एक ही स्वतंत्र सेनानी की कहानी है। अगर प्रत्येक सेनानी अपना आत्मकथन का विवरण करे, तो आँखों में आँसू ठहर नहीं पाएंगे। यूज बदला, पढ़ाई, काम, मोबाइल युग आ चुका है, पर झूठे-कुछ सच्चे उदाहरण देकर संक्षेप में वर्णन करके युवकों का समाधान कर रहे हैं। पर सत्य कथा के लिए आपको पूरी पुस्तक पढ़कर उस पर अभ्यास करना जरुरी है। इतिहास यह जड़न गढ़न की ईमारत है, कुछ गलतियां भूतकाल में हुईं वे फिर से हमारे हिंदुस्तान में न हों। पृथ्वीराज चौहान का इतिहास अगर पढ़ा जाए तो उस शहीद राजा की वह महारानी, जिस पर मुग़लों ने के हालात बनाए, अत्याचार इस महारानी पर किया गया, इस पर हमें सज्ञान लेना चाहिए। हमारे पिताजी की अनगिनत कहानियां यहाँ पर बता सकता हूँ, पर स्वतंत्र सेनानी मेघजी भाई की बातें ही रह गईं। इस मृत्युलोक में मनुष्य जन्मा तो मृत्यु निश्चित है, पर कुछ महान योद्धा के वाक्य मुँह पर आ जाते हैं, जिस बड़े व्यक्ति ने बात कही, वह आज भी भारत भर घूमते हैं, "जय जवान, जय किसान" यह लाल बहादुर शास्त्री प्रधानमंत्री का नारा वही रहा हो न रहा हो। जब उस व्यक्ति का नाम आता है, तो उनकी वाणी विचार याद आते हैं, भीषण जीवन की राह पर चलने वालों को कटे जरुरी है, पर अंत में पुष्प की राह मिल ही जाती है। हमें फिर से अपने स्वतंत्र सेनानियों के यज्ञ की ओर बढ़ना चाहिए। निज़ामी सल्तनत का क्रूर कर्म बादशाह आखिरकार १७ सितंबर १९४८ में भारत सरकार की शरण में आना ही पड़ा, निज़ामी रियासत को छोड़ स्त्री रूप में (बुरखा पहनकर) पाकिस्तान को भागकर जाना। हैदराबाद का पूरा मंत्रीमंडल स्थानबद्ध किया गया। इसी इ निज़ामों का रजाकार पाकिस्तान में भागने में सफल हुआ। भारत के विरुद्ध निज़ाम सरकार ने विदेशों से मंगाएगए महंगे हथियारों को धारण करके रह गए (जैसे की वैसे), भारत के सामने निज़ाम टिक नहीं पाए। भारत सरकार ने पहले ही निज़ाम को आगाह कर दिया, "तुम शरणागति पथ करो, पर अहंकार में डूबा हुआ निज़ाम किसी भी बात को गंभीरता से लेने के लिए तैयार नहीं था। तीन संदेशों के बाद फिर पुलिस एक्टिव शुरू किया गया (मिलिट्री) जब यह घटना घट रही थी। तभी भारत सरकार को हेर शहर मुक्त करने के लिए किसी रजाकार ने प्रतिकार करने की कोशिश नहीं की। धीरे-धीरे दौलताबाद, औरंगाबाद, सोलापुर, विजयवाड़ा, जालना, रज़ाकार सेनिकों से मुक्त कराए गए। निज़ामों की इतनी बड़ी रज़ाकार सेना, उन्होंने भारत सरकार से प्रतिकार क्यों नहीं किया, इस बात का कोई हल नहीं निकला। इसी तरह एक रजाकार, काशिम राजवी और लायक अली, दोनों ही पाकिस्तान की ओर चल पड़े। इस तरह पाकिस्तान ने भी इन फिरंगियों को मदद नहीं की। अगर स्वामीजी रामानंद तीर्थ नहीं होते तो जनजागृति करना मुश्किल काम था, पर जैसे ही हैदराबाद को निज़ामों से मुक्ति मिली, भारत में विलीनीकरण होते ही स्वामीजी को जेल से छोड़ा गया। भारत से सटे हुए सीमावर्ती भाग, आंध्र प्रदेश, मराठवाड़ा, कर्णाटक, इन सभी का हैदराबाद से जुड़ा हुआ कुछ भाग निज़ामों की रियासत में आता था। धन्यवाद उन सपूतों को देना चाहिए की एक और छोटा पाकिस्तान बनते बनते रह गया। ईश्वर ने इस मुल्क पर बड़ी मेहरबानी की। आज हम हमारे पड़ोसी राष्ट्र से परेशान हैं, पर वह राष्ट्र (पाकिस्तान) पूरी तरह से बर्बाद हो चुका है। भारत और पाकिस्तान के विभाजन के वक्तदूसरे महात्मा गांधी, खान अब्दुल गफार खान, गांधीजी से कहा की अपने हमें गिध्दों के हवाले कर दिया। जो बात उस समय गफार साहब ने कही वह आज भारत के मुजाहिर मुस्लिमों के हकीकत में बदल गई है, वहां की जमात भारतीय मुस्लिमों को बड़ी हिन्दृष्टि से देखती है। पर प्रमाणिक मुस्लिम भाइयों ने अपना वतन नहीं छोड़ा। निज़ाम तो रवाना हो गए, वहां की जनता को दलदल में छोड़ गए, यह किसी सल्तनत थी

अपने प्राण एवं सुख के लिए जनता को राम भरोसे छोड़ गए, पर धीरे-धीरे भारत में विलीनीकरण के बाद वहां के हालत सुधरते गए। सं १७ सितम्बर १९४८ में भारत में अखण्ड हिंदुस्तान का सूर्योदय हुआ, १५ अगस्त के बाद यह बहुत बड़ा पर्व था। कमाल की बात यह रही कि यहां के मुस्लिम भाई बेखौफ होकर जीने लगे, कहने का तात्पर्य यह कि यह आंदोलन निज़ामों के विरुद्ध था न कि मुस्लिमों के इसलिए। इस पूर्ण किताब का सारांश यह रहा कि निज़ामिया सल्तनत के विरुद्ध हर जाति, वर्ण, पंथ सभी एक जुट होकर लड़े और यश प्राप्त किया। इसलिए हम हेर शहरियों और ग्रामीणों को श्रद्धा पूर्वक नमन करते हैं। और दूसरी खास बात यह है कि महिलाएं पुरुषों के स्वयं में रहीं। इस आंदोलन का हर व्यक्ति स्वतंत्र सेनानी था। मगर यहां की जनता इन लोगों को साथ नहीं देती तो मुश्किल काम हो जाता। इसलिए इस आंदोलन की स्वतंत्र सेनानियों को अपने मित्रों का आंदोलन करियों का इन् जेलियों बंद कैदी ने कभी नाम रज़ाकारों का बताया।

१३ तारीख से १७ तारीख १९४८ तक यह संग्राम चालू रहा। इस आंदोलन की नींव १९४२ में रखी गई थी। इतने संघर्ष के बाद जो खुशी स्वतंत्र सेनानियों के मुख पर दिखी, वह देखने लायक थी। जो हम चाहे वह चीज़ अगर बिना संघर्ष किए मिल जाती, तो उसमें उतना ही महत्व नहीं रह जाता, पर संघर्ष के बाद कुछ हासिल होता है, उसकी बात ही कुछ और होती है। निजामियों और रजाकारों से जनता इतनी परेशान थी कि आजादी के बाद जिस प्रकार पिंजरे से उड़कर खुली हवा में श्वास लेते, उसी प्रकार उसी व्यक्ति को महसूस हो रहा था।

अमावस्या की काली रात्रि का अस्त होना और फिर नयी सुबह उसी तरह, हैदराबाद मुक्ति संग्राम खत्म हुआ और गुलाल के स्वर्णोदय की किरणों के साथ हिंदुस्तान का दूसरा स्वतंत्र संग्राम समाप्त हुआ। जब इतिहासकार लिखते हैं तब उनके मन भावना व्यक्ति आंदोलन का बड़ा भाग इस प्रकार रखते हैं। अपनी बुद्धिमत्ता के साथ लिखाई करते हैं। इसमें मैंने कई पुस्तकों का अध्ययन किया है, इसमें यह नजर आता है कि हर आंदोलन कारी स्वतंत्र सेनानी कभी सरकार से पेश या और कोई मदद की आशा नहीं रखते थे, पर शासन में सज्ञान लेकर इन महावीरों को पेंशन के रूप में मानधन देना शुरू किया। इससे सभी दुखी परिवारों को बड़ी सहायता मिली वानप्रस्थ आश्रम में सभी बुजुर्ग स्वतंत्र सेनानी को इसके बाद आर्थिक परिस्थितियों का सामना करना लगभग इनको नहीं करना पड़ा। आखिर में हमारे भाई जी को १७,००० महावादी मिलता था।

इस पुस्तक को लिखते समय थोड़ा-बहुत पुराने बुजुर्गों की सहायता लेनी पड़ी, इस तरह स्वतंत्रता आंदोलन खत्म हुआ। स्वतंत्रता के बाद सरकार के सामने समस्याएँ बिगड़ी हुई घड़ी को फिर से कैसे बैठाएं, आर्थिक संकटों का सामना कैसे करें, सब संभाल लिया गया। इसके साथ ही, संतों की भूमि मराठवाड़ा ने खेती में बहुत ही साथ दिया। उपजती अच्छी होने में मदद मिलने लगी।

मैं हमेशा हमारे सामने दो राजाओं का उदाहरण देता हूं - सन् १५०० में महाराणा प्रताप और उसके बाद शिवाजी राजे। इन महान सपूतों को माँ भगवती ने हर तरह से संजीवनी बूटी से संजोग करके पृथ्वी पर भेजा था। इन दोनों में इतने गुण शामिल थे जैसे कि राज्य चलाने से लेकर सुखी रखने तक सबकुछ। इनके समय मुग़लों से लोहा लेने की तैयारी थी। इनकी संघर्ष गाथा हर व्यक्ति को पता है, पर महाराणा प्रताप राजे और शिवाजी राजे इन स्वाभिमानी राजाओं ने मेवाड़ में एक छोटी सी कविता में यही सब कहा है, जो कन्हैया लाल सेठी ने लिखी है।

हूँ भूख मरूँ, हूँ प्यास मरूँ,

मेवाड़ धारा आजाद रहे।।

इस प्रकार, इन दो महान योद्धाओं की आंतरिक शक्ति थी। कुछ भी हो जाए, मेरा महाराष्ट्र हमेशा (शिवाजी राजे) आजाद रहे। कोई विपदा किसी प्रदेश पर नहीं आये, इसलिए त्याग की भावना इतनी थी कि इनमें संगठन शक्ति लोगों को अपनी और आकर्षित करने की कला, युवाओं की सेना में भर्ती होना। एक स्वाभिमानी स्वतंत्र जीवन जीना, यह त्याग में गुण है।

इसी तरह, महाराणा प्रताप की जीवनी त्याग भरी थी। पर आर्थिक कमी के कारण उन्हें संघर्ष बहुत ही करना पड़ा, वे हमेशा अकबर से संघर्ष करते रहे। इतने बड़े हिंदुस्तान के शासक के सामने पाय जिल्हा का राज्य में किसी प्रकार की लड़ाई लड़ी होगी, मारना व राजे की कहानी, मेवाड़ धारा आजाद रहे, यह इन दो योद्धाओं का सपना है।

इस महारथियों का गुणगान हम छोटा सा नमन करते हैं।

छोटी कविता की पंक्तियाँ,

माई ऐहड़ा पूत जन जेहड़ा,

शिवबा और महाराणा प्रताप।।

इसका अर्थ यह है कि जगत जननी ऐसे सपूतों को जन्म दे जो देश सेवा के लिए काम आ सकें। क्षत्राणी के यह दो बोल बड़े ही अनमोल हैं। ऐसे शूरवीर पैदा होना चाहिए जो हमेशा देश के लिए समर्पित भाव से सेवा त्याग के लिए तैयार रहें। हम इन महान आत्माओं को नमन करते हैं, जो माँ के लाल छोटे या बड़े स्वतंत्र सेनानी, सैनिक, राजा, या युवा हों। इन सभी को हम अपने दिल से प्रणाम करते हैं।

इनकी अमर ज्योति हमेशा प्रज्वलित रहे, और इन ज्योतियों की ओर हमें प्रेरित करे। युवा के लिए देश की सेवा में वफादारी और त्याग की भावना को जागरूक रखना हमारी जिम्मेदारी है। मैं एक बार फिर से ह्रदय से नमन करता हूँ, और लिखते समय कोई भूल छूक हो तो क्षमा करें। इस पुस्तक का संदेश है कि स्वतंत्र सेनानियों का संघर्ष अंग्रेजों और निज़ामियों सल्तनत के खिलाफ था, न कि किसी जाति या बिरादरी के खिलाफ। इसलिए इस पुस्तक का पठन एक भारतीय के लिए उपयुक्त रहेगा। आपका कृतज्ञ,

धन्यवाद।

समर्पण मेरे ताउजी को :

(— डॉ. निर्मला एस. पद्मावत)

वो दीप जले अंधेरों में, जब सब राहें मौन हुईं,
वो स्वर गूंजे बंदीगृह में, जब दुनिया सुन न सकी।
वो माथा झुका न अत्याचारों में,
वो तन झुका देश के प्यारों में।

मिट्टी में जिसने जीवन बोया,
बलिदान को जिसने माला पिरोया,
उसकी हर सांस में भारत बसा था,
हर आह में "स्वराज" खिला था।

सेरिया की उस पवित्र धरा पर,
जहाँ मावजी का संदेश गूंजा,
वहीं से एक दीया जला —
जो युगों तक उजाला बन सदा पूंजा।

आज भी जब तिरंगा लहराता है,
मन में उनका चेहरा उभर आता है।
उनके तप, त्याग और निष्ठा के आगे,
शब्द भी श्रद्धा से झुक जाते हैं।

ओ मेरे ताउजी —
आपका आशीष आज भी साथ है,
हर रचना में, हर संकल्प में,
आपका ही उजियारा सांस है।

आपका जीवन — हमारी धरोहर,
आपका नाम — हमारी पहचान,
आपके पथ पर चलना ही
हमारी सबसे बड़ी शान।

स्वतंत्रता सेनानियों की सूची (सेलू एवं मराठवाड़ा क्षेत्र)

(भारत छोड़ो आंदोलन, हैदराबाद मुक्ति संग्राम, 1942–1948)

क्रमांक	नाम	योगदान भूमिका /
1	मेघजी भाई पद्मावत	1942 आंदोलन के सक्रिय सेनानी, कारागृह यातनाएँ झेलीं, हैदराबाद मुक्ति संग्राम में भागीदारी
2	सदाशिव काका चौधरी	स्थानीय संगठन के नेता, आंदोलन का संचालन
3	गोविन्द भाई कापा	युवाओं को प्रेरित कर आंदोलन में सम्मिलित किया
4	विनायक रावजी चारठानकर	देशभक्ति प्रचार कार्य में अग्रणी
5	अनंत रावजी भालेराव	कारावास भोगा, स्वतंत्रता उपरांत संगठन कार्य
6	गोबा देशमुख	स्थानीय स्वतंत्रता समिति के सदस्य
7	दिगम्बर राव मगर	जनता में जागरूकता फैलाने में अग्रणी
8	वासुदेव राव खरकर	हैदराबाद मुक्ति संघर्ष में शहीद
9	दत्तात्रय फाटे	संघर्ष के दौरान बलिदान दिया
10	लक्ष्मण सदाशिव वायकर	आंदोलन में शहीद, स्वराज हेतु प्राण न्योछावर किए
11	मोहन मूलचंद मोराक्या	निहत्थे आंदोलनकारियों के अग्रदूत, शहीद
12	रामचन्द्रराव पाठक	स्वतंत्रता संग्राम में प्राण अर्पण किए
13	तोलाराम चव्हाण	हैदराबाद राज्य मुक्ति में शहीद
14	दीपाजी पाटिल आखाड़ा) (बालापुर	क्षेत्रीय संगठन में सक्रिय कार्यकर्ता
15	रामभाऊ आढाव	मुक्ति संग्राम में नेतृत्वकारी भूमिका निभाई

नोटः
इन सभी सेनानियों का विवरण ऐतिहासिक अभिलेखों,
स्थानीय स्वतंत्रता सेनानी परिषदों एवं मौखिक इतिहास के माध्यम से संकलित किया गया है।
प्रत्येक नाम राष्ट्र की उस अमर गाथा का प्रतीक है,
जिसमें त्याग, सत्य और स्वतंत्रता की भावना सजीव है।

संदर्भ एवं स्रोत)Internet / Research):

1. **NDTV Rajasthan (Online Report)** –
   Who is Sant Mavji Maharaj whose predictions 300 years ago are coming true (2024).
   https://rajasthan.ndtv.in/rajasthan-news/who-is-sant-mavji-maharaj-whose-predictions-300-years-ago-are-coming-true-pm-modi-also-mentioned-4600144
2. **Wikipedia & Rajasthan Gazetteer** –
   Historical references about *Mewar, Salumbar, and Dungarpur Region*.
3. **District Archives (Parbhani & Udaipur)** –
   Data related to *Freedom Fighters of Marathwada and Hyderabad Liberation Movement.*
4. **Personal Oral Narratives** –
   Collected from the Padmavat Family and Local Eyewitnesses (Selu, Marathwada).
5. **Books and Journals:**
   - *"Mewar ki Sanskritik Parampara aur Swatantrata Sangram"* — Rajasthan Patrika Archives
   - *"Hyderabad Mukti Sangram ke Amar Senani"* — Govt. of Maharashtra Publication
6. **Photographs and Primary Sources:**
   - Original letters, memoirs, and photographs preserved by the Padmavat Family.
   - Archival images of Sant Mavji Maharaj temples and manuscripts (Sabla & Beneshwar Dham).

सत्यमेव जयते

महाराष्ट्र शासन

सन्मान पत्र

श्री. मेघजी भाई हॉटेलवाला, सेलू जि. परभणी यांना त्यांनी भारतीय स्वातंत्र्य संग्रामांत केलेल्या कामगिरीच्या गौरवार्थ हे सन्मानपत्र देण्यांत येत आहे.

वसंत नाईक

मुख्य मंत्री
महाराष्ट्र राज्य

सचिवालय
मुंबई
दिनांक

परिशिष्ट
नामनिर्देशन पत्र.

शासन परिपत्रक ज्ञापन, सामान्य प्रशासन विभाग, क्रमांक :- सीएनएस -१०६५/४[illegible] दिनांक १२ ऑक्टोबर, १९६५ आणि शासन निर्णय, सामान्य प्रशासन विभाग, क्रमांक :- सीएनएस १०८१/१/१६-अ, दिनांक २ मार्च, १९८१ आणि शासन निर्णय, सामान्य प्रशासन विभाग, क्रमांक [illegible] १०८४/सीआर-१०३/सोळा-अ, दिनांक १०/१/१९८५ आणि शासन निर्णय, सामान्य प्रशासन विभाग क्रमांक :- १००४/८०२ /प्र.क्र.४२/०४/१६ -अ, दिनांक ६/८/२००४. मधील तरतुदीनुसार स्वातंत्र्य सैनिकाने त्यांच्यावर अवलंबित अशा एका व्यक्तीला शासन सेवेत नेमणुकीबाबतच्या सवलतीसाठी करावयाचे नामनिर्देशनपत्र.

मी श्रीमती.वालीबाई मेघजी पद्मावत (स्वातंत्र्य सैनिक अथवा त्यांची विधवा पत्नी यांचे संपूर्ण नांव) राहणार (पूर्ण पत्ता) सेलू, ता.सेलू तहसील. सेलू पोष्ट सेलू जिल्हा परभणी. आज दिनांक. २४.०३.२००५ रोजी असे प्रतिज्ञापूर्वक लिहून देतो की, शासनाने स्वातंत्र्य सैनिक अथवा त्यांच्यावर अवलंबून असलेल्या एका व्यक्तीस शासन सेवेत नौकरीसाठी ज्या सवलती विहित केलेल्या आहेत त्या सवलतींचा फायदा मी यापुर्वी स्वतः घेतलेला नाही. हा फायदा मी स्वतः वार्धक्यामुळे / आजारपणामुळे घेऊ शकत नसल्यामुळे ही नौकरी विषयक सवलत घेण्यासाठी माझ्यावर पूर्णतः अवलंबून असलेली जवळची नातेवाईक व्यक्ती म्हणुन मी, माझा सख्या मुलाचा मुलगा (नातु) (हया ठिकाणी खाली दर्शविलेल्या *नात्यापैकी एक नाते लिहावे) श्री.जगदिश रामलाल पद्मावत वय २० हयाला नामनिर्देशित करीत आहे.

२ मी पतिज्ञापूर्वक स्पष्ट करतो की असे कोणतेही नामनिर्देशन यापूर्वी मी केलेले नाही आणि हे प्रतिज्ञापत्र खोटे आहे असे आढळून आल्यास खोटे प्रतिज्ञापत्र केल्याच्या गुन्हयासाठी मजवर खटला भरण्यात येईल याची मला जाणीव आहे.

सही.

(नांव : श्रीमती.वालीबाई मेघजी पद्मावत)

स्थळ :- सेलू

दिनांक :- २४.०३.२००५. [signature]

साक्षांकन करण्या-या जबाबदार व्यक्तीची सही, नांव व पदनाम.

१) * [signature]

प्रति,

जिल्हा अधिकारी परभणी यांना सादर

(दोन प्रती)

जा.क्र. 2009/अ 1/स्था.सै./कवि
जिल्हाधिकारी कार्यालय,
दिनांक 26/06/2009

जिल्हा अधिकारी कार्यालयातील नोंदणी क्रमांक व दिनांक : रजि. क्र. 777 दि.26/06/20...

प्रतिज्ञापत्राची नोंदवहीत नोंद घेण्यात आली.
मा. अ. जि. अ. यांचे
मान्यतेनुसार /-

ADDITIONAL DIST MAGISTRATE PARBHANI

निवासी उपजिल्हाधिकारी परभणी
निवासी उप जिल्हाधिकारी
परभणी.

---

१) माझी पत्नी / माझा पती किंवा
२) माझा मुलगा किंवा अविवाहित / घटस्फोटित मुलगी किंवा
३) माझा सख्खा भाऊ किंवा माझी अविवाहित / घटस्फोटित बहीण

किंवा

४) माझ्या सख्खा भावाचा किंवा बहीणीचा माझ्याबर अवलंबून असलेला मुलगा किंवा अविवाहित / घटस्फोटित मुलगी.
५) माझी सून (मुलाची पत्नी)
६) माझ्या मुलाचा किंवा मुलीचा माझ्यावर अवलंबून असलेला मुलगा किंवा मुलगी.

(वरील नात्यापैकी कोणतीही एक व्यक्ती)

---

* ***साक्षांकन खालील पैकी कोणत्याही एका जबाबदार व्यक्तीचे आवश्यक आहे.***

१) केंद्र किंवा राज्य शासनाचे राजपत्रित अधिकारी.
२) संसद सदस्य किंवा राज्य विधानमंडळ सदस्य.
३) उपविभागीय दंडाधिकारी / अधिकारी.
४) दंडाधिकारी विषयक शक्ती प्रदान केलेले मामलेदार, तहसीलदार, किंवा नायब / उप तहसिलदार.
५) सर्व मान्यता प्राप्त महाविद्यालये आणि / किंवा माध्यमिक शाळांचे प्राचार्य आणि मुख्याध्यापक.
६) पोस्टमास्तर.
७) विशेष कार्यकारी दंडाधिकारी.

****

BY REGISTERED POST.

STAMPED.

13299
No. JcI/of 1973

IMPRISONMENT CERTIFICATE

This is to certify that Shri Meghaji S/o Shivram [illegible] aged 20 years of Selu Taluka Pathri and District Parbhani was admitted to the Central/District prison on 5-12-1356 Fasli Received from Parbhani for taking part in Civil disobedience movements.

He was sentenced to 1-7-0 One year and Seven months under Section 58,37,8 by the Nazim Saheb Adalat Selu on 27-11-1356 Fasli.

He was subsequently to/released on Awal Talukdar Aurangabad from this prison on 26-7-1357 Fasli

IDENTIFICATION MARKS.

1. Mole on Face.
2. Fair complexion.
3. Broad fore-Head

Original Certificate or the copy or Certificate will not be issued again.

Sd/-
Superintendent,
Central/District prison
A-urangabad.

To,

Shri Nandlal S/o Meghajibhai Padmawal Pro. Krishana Hotel near Railway Station post Selu District Parbhani with reference to his/her application dated 7 th August 1973.

-/ TRUE COPY /-

लेखक का वक्तव्य

रामजी मेघजी पद्मावत

यह कृति मेरे पिताश्री मेघजी भाई पद्मावत के प्रेरणादायी जीवन को समर्पित है।
उनका त्याग, सत्यनिष्ठा और संघर्ष मेरे जीवन के मार्गदर्शक रहे हैं।
"एक छिपा हुआ सितारा" केवल एक स्मृति नहीं, बल्कि उस प्रकाश का प्रतीक है जो अंधकार में भी दिशा दिखाता है।
पिता के जीवन के आदर्शों को शब्दों में ढालना मेरे लिए गर्व और भावनात्मक उत्तरदायित्व दोनों रहा।

संपादकीय वक्तव्य

डॉ. निर्मला एस. पद्मावत

यह पुस्तक हमारे परिवार के गौरव, मेघजी भाई पद्मावत के जीवन का साहित्यिक साक्ष्य है।
उनके विचार, कर्म और निष्ठा में युगों तक प्रेरणा देने की शक्ति निहित है।
एक ताऊजी के रूप में हमने न केवल एक परिवारजन को, बल्कि एक महान मानवीय व्यक्तित्व को देखा है —
इस ग्रंथ के संपादन में वही श्रद्धा और स्नेह झलकता है।

संपादकीय वक्तव्य

डॉ. चंद्रप्रकाश एस. पद्मावत

"एक छिपा हुआ सितारा" में समाहित हर पंक्ति हमारे ताऊजी मेघजी भाई पद्मावत के उज्ज्वल जीवन की झलक है।
उनका संयम, साहस और समाजसेवा भाव आने वाली पीढ़ियों के लिए मार्गदर्शन का दीपक हैं।
यह पुस्तक केवल पारिवारिक नहीं, बल्कि मानवीय मूल्यों की जीवंत प्रेरणा है।
हमें गर्व है कि हमने इस कृति के संपादन में उस उजास को शब्दों में सहेजने का अवसर पाया।

FOURTH DImension

9 788199 526877